संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ

संपादक

नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

साहित्य भवन लिमिटेड

इलाहाबाद

प्रथम संस्करण : सन् १९५५ ईस्वी

ढाई रुपया

मुद्रक : रामआसरे कक्कड़, हिंदी-साहित्य प्रेस, इलाहाबाद

यह ग्रंथ उसे अर्पित सप्रेम,

जिसका जीवन-संगीत मधुर

सुख-सपनों-सा अति पास - दूर ।

आभार-प्रदर्शन

'संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ' को तैयार करने में मेरे मित्रों और शुभचिंतकों ने जिस उत्साह एवं उदारता से अपना सुझाव तथा सहयोग दिया, उसके लिए मैं हृदय से उनका आभारी हूँ। भोलानाथजी तिवारी और श्याममनोहर जी पांडेय विशेष रूप से मेरे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। परंतु श्री जगन्नाथ प्रसाद बदौआ 'गुरु' की सहायता के बिना यह कार्य कठिन हो जाता; उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। श्रीमती पुष्पा कौशिक द्वारा निर्मित 'वीणापाणि' का चित्र उपयोग करने के लिए मुझे देकर श्री मुलायमचन्द्जी जैन, जबलपुर ने अपनी सहृदयता का परिचय दिया। इसके लिए अपने मनोभाव प्रकट करने की मुझे छूट नहीं है। पुष्पा बहन के लिए मैं मंगल-कामना करता हूँ। इनके अतिरिक्त मैं उन सभी लेखकों और संपादकों का उपकृत हूँ, जिनकी पुस्तकों अथवा कृतियों का मैंने उपयोग किया है।

विजया
सं० २०१२

नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

विषय-सूचनिका

१. विहंगावलोकन	...	...	११
२. हिंदुस्तानी संगीत का विकास		...	१७
३. अमीर ख़ुसरो	...	...	३२
४. गोपाल नायक	...	...	४३
५. हरिदास	...	...	४६
६. बैजू बावरा	...	...	५२
७. तानसेन	...	...	८३
८. कवि-परिचय :	...	...	१४३
अमीर ख़ुसरो	...	...	१४३
गोपाल नायक	...	...	१४५
हरिदास	...	...	१४७
बैजू बावरा	...	...	१५०
तानसेन	...	...	१५२
९. आधार ग्रंथ-परिचय	...	...	१५७
१०. परिशिष्ट	...	...	१६१
अमीर ख़ुसरो	...	...	१६३
तानसेन	...	...	१६३
११. संक्षिप्त सहायक ग्रंथ-सूची		...	१६४
१२. पाठ संबंधी भूल-सुधार ...		...	१६५

विहंगावलोकन

यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने कविता का परिचय संगीत के अंतर्गत दिया है। परंतु आज का [illegible] विचारक संगीत को कविता की तुलना में निम्न स्थान देते हैं। वास्तव में, दोनों ही अमूर्त कलाएँ हैं। संगीत में नाद को महत्व प्राप्त है तो कविता में शब्द (भाषा) को। फिर भी, संगीत में नाद ही सब कुछ नहीं है। अंतराल उसकी एक अनिवार्य शृंखला है। इसी प्रकार, कविता में भी शब्द (भाषा) के साथ-साथ रसात्मक आनंद की अनुभूति की महत्ता है और रसात्मक आनंद की वह अनुभूति आत्म-प्रसार द्वारा तादात्म्य स्थापित करने में है जो सामान्य सुख-दुख से भिन्न स्तर की वस्तु है।

भारतीय जीवन एवं परंपरा में काव्य तथा संगीत का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ईसा पूर्व सातवीं शताब्दी के प्रसिद्ध मनीषी याज्ञवल्क्य की उक्ति के अनुसार,

> वीना-वादन तत्त्वज्ञः श्रुति जाति विशारदः।
> तालज्ञश्चा प्रयासेन मोक्ष मार्ग च गच्छति ॥

यहाँ संगीत को केवल लौकिक सुख का ही साधन नहीं माना गया है, अपितु मुक्ति-मार्ग का आलंबन तक स्वीकार किया गया है। इसी प्रकार, काव्य को 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कहा गया है, साथ ही कवि को 'कविर्मनीषी परभूः स्वयंभूः' का पद प्राप्त है।

'संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ' में अमीर ख़ुसरो, गोपाल नायक, हरिदास, बैजूबावरा और तानसेन की कविताएँ अकारादि क्रम से संगृहीत हैं। इन कवियों का समय तेरहवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक पड़ता है। इन्हें बहुधा संगीतज्ञ रूप में ही स्मरण किया जाता है। इनमें से अधिक से अधिक ख़ुसरो और हरिदास की चर्चा हिंदी साहित्य में यत्र-तत्र मिल जाया करती है। परंतु अन्य तीन का उल्लेख भूले-भटके ही पाया जाता है। हिंदी साहित्य के भक्ति-काल में काव्य और संगीत का अभूतपूर्व गठबंधन हो गया था। अवतारी भगवान

कि लीला करते-करते लीला-गान भी होने लग जाता था। इसी कारण, काव्य-रचना में भी पद कीर्तन का ही प्राधान्य था। इस प्रवृत्ति को जयदेव कृत 'गीत गोविंद' और चैतन्य की भक्तिधारा ने प्रेरणा एवं प्रश्रय प्रदान किया। उस काल की यह एक विशेषता थी जिसमें शृंगार, प्रेम और भक्ति की त्रिवेनी बह निकली और रसिक तथा सहृदय समाज उल्लासपूर्वक उसमें गोते लगाने लगा। परंतु सभी पद-रचयिता न तो गायक थे और न सभी गायक पद-रचयिता। फिर, सभी गायकों का संगीतज्ञ होना भी अनिवार्य न था। प्रस्तुत संग्रह में जिन कवियों की कविताएँ संकलित हैं, वे संगीतज्ञ कोटि के हैं और इन रचनाओं में पदों का ही बाहुल्य है। परंतु यति की विलक्षणता और लंबी शब्द-योजना से प्रतीत होता है कि ये पद गाने के लिए ही लिखे गये थे। इसी कारण, इन्हें पद न कहकर ध्रुपद कहने की प्रवृत्ति होती है। इसके अतिरिक्त अधिकांश पदों में भक्ति-तत्त्व की प्रचुरता पायी जाती है। ऐसे पदों को भक्ति-काव्य की कोटि में रखना समीचीन जान पड़ता है।

हिंदी पद-रचना के मूल स्रोत के बारे में मतैक्य नहीं है। परंतु वज्र-गीतियों तथा चर्यापदों में इसके उद्गम का संकेत मिलता है। ये गेय पद संगीतज्ञों के प्रबंध के ही समान हैं। इसी के आधार पर संभवतः नाथमुनि द्वारा संगृहीत 'नालायिर प्रबंधम्' का नामकरण हुआ है। अनुमान होता है कि गीतगोविंदकार जयदेव अवश्य ही उक्त स्रोतों से प्रभावित हुए होंगे।

खुसरो नामक तीन व्यक्तियों का पता चलता है। अमीर ख़ुसरो, ख़ुसरो खां और मीर ख़ुसरो। अमीर ख़ुसरो का समय ख़िलजी काल में पड़ता है। वास्तव में, 'अमीर' शब्द उसकी पदवी है। सुलतान जलालुद्दीन फ़िरोज़शाह ख़ुसरो को सदैव 'अमीर' कहा करता था। उसे 'अमीर-उश्-शुअरा' भी कहा जाता था। उसके धर्मगुरु शेख़ निज़ामुद्दीन ने उसे 'तुर्कुल्ला' की उपाधि दी थी। सुलतान जलालुद्दीन ख़िलजी ने 'मलिक उन नुदमा' का ख़िताब दिया था। सुप्रसिद्ध जीवनी लेखक दौलतशाह समरकंदी ने उसे 'खातिम कलाम' की उपाधि दी थी। जनता द्वारा उसे 'तूतिये हिंद' की पदवी मिली

थी। उनकी 'सुलतान-उश्-शुअरा' की पदवी उसे फ़ारसी कविता के सुयोग्य निर्णायकों द्वारा मिली थी।

ख़ुसरो ख़ां शाहजहाँ के समकालीन हैं और मीर ख़ुसरो को हम औरंगज़ेब के समय में पाते हैं। इनमें से अमीर ख़ुसरो सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इनकी हिंदी रचनाओं में मुकरियाँ, पहेलियाँ और दोहे आदि प्रसिद्ध हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि ये रचनाएँ इनकी नहीं हो सकतीं। यद्यपि इनसे पहले मसूद साद बिन सलमान हिंदी में रचना कर चुके थे। फिर भी 'ग़िराचये कलाम' के अनुसार उस समय हिंदी कविता अपनी प्रारंभिक अवस्था में थी और फ़ारसी की तुलना में उसके प्रति उपेक्षा का भाव था। इसलिए जो हिंदी कविताएँ उन्होंने रची होंगी, वे उनकी दृष्टि में कोई 'ख़ास अहमियत' नहीं रखती होंगी। जहाँ तक पता है उनके समय में अथवा उसके बहुत बाद तक इनका कोई संग्रह न था। 'तुफ़ातुल आशिक़ीनी' के आधार पर शिबली साहब को भी उनकी हिंदी रचनाएँ होने पर विश्वास था। इनमें से अधिकतर मौखिक परंपरा से ही प्राप्त हैं। अठारहवीं शताब्दी के उर्दू शायर मीर तक़ी 'मीर' को बतलाया जाता है कि उन्होंने अपनी पुस्तक 'निकात शुअरा' में लिखा है कि उनके जीवन काल में ख़ुसरो की हिंदी रचनाएँ दिल्ली में गायी जाती थीं। संवत् १९७८ में काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा 'ख़ुसरो की हिंदी कविता' प्रकाशित हुई। ख़ुसरो का हिंदी में लिखना संभव था, क्योंकि उनकी माँ संभवतः हिंदू घराने की थी, अतः उनकी मातृभाषा हिंदी थी।[1] संभव है उन्होंने हिंदी में भी कुछ रचनाएँ की हों, जो कालांतर मौखिक परंपरा में होने के कारण, अपने मूल रूप में न रह गयी हों और उनके अनुकरण में संख्यावृद्धि भी हुई हो। कभी-कभी यह भी अनुमान होता है कि अन्य दोनों ख़ुसरो की हिंदी रचनाएँ भी इधर की उधर हो गयी होंगी। जो हो, इसे स्पष्ट करने का अभी हमारे पास कोई पुष्ट प्रमाण अथवा साधन नहीं है।

'मानिक सोहिल' नामक किसी संस्कृत पुस्तक के अनुसार ख़ुसरो ने

[1] डा० महम्मद वहीद मिर्ज़ा : अमीर ख़ुसरो, पृ० २२१

'जगत उस्ताद' गोपाल नायक को हराकर 'नायक' का पद प्राप्त किया था। 'नायक' का पद सर्वोच्च माना जाता है। इससे घट कर क्रमशः पंडित, गुनी, गंधर्व और गाइन का पद है, जिनका प्रयोग प्रस्तुत संग्रह में स्थान-स्थान पर हुआ है। कैप्टन विलर्ड ने अपनी खोज के आधार पर इनमें कलावंत, कौवाल और बागी भी जोड़ दिया है। उक्त ग्रंथ का फ़ारसी अनुवाद आलमगीर के समय में 'राग दर्पन' नाम से अमीर फ़कीरुल्ला ने किया था। परंतु उस समय के गोपाल नायक नामक किसी ऐतिहासिक व्यक्ति का पता नहीं चलता। इस नाम से प्रसिद्ध व्यक्ति का पता अकबर के समय में चलता है।[१] वास्तव में, उक्त प्रतिद्वंदिता ख़ुसरो और गोपाल नायक के बीच न होकर बैजूबावरा और गोपालनायक के साथ हुई थी, जिसकी पुष्टि संगृहीत रचनाओं से होती है।[२]

अमीर ख़ुसरो का काव्य और संगीत विषयक ज्ञान व्यापक तथा गहरा था। उन्होंने अपने संबंध में स्वयं एक स्थल पर लिखा है,

पा मुख्तश गुफ़्तम के मन दर हर दो मानी कामिलम।
हर दोरा संज़ीदा बर वज़्ने के आं बेहतर बुअद॥[3]

इससे स्पष्ट हो जाता है कि वे अपने को काव्य और संगीत दोनों का ही अधिकारी मानते थे।

ख़ुसरो को अपने देश पर उचित गर्व था। 'एज़ाज़ ख़ुसरवी', (भाग २, पृ० १८०) के अनुसार ख़ुसरो ने एक स्थान पर लिखा है कि

किता दुरुस्त सवद कुफ़्रियाने बाला रा
कि मुर्ग़ चूं बुअद अंदर बाहर हिंदुस्तां॥

[१] देखिये पृ० ४७, पद ८

[२] बैजू बावरा : पद ३०-३६, पृ० ६८-६९, ७१-७२ और तानसेन : पद १२९, पृ० ११२

[3] अरबा अनासिर दवावीने ख़ुसरो, पृ० ४२६-२७ जो नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ में मौजूद बतलाया जाता है

अर्थात् हवा में उड़नेवाली कुम्रियों (पंछियों) को मालूम पड़ जाय कि हिंदुस्तानी चार्गे-बहार में कैसी-कैसी चिड़ियाँ हैं।

उन दिनों ईरान और खुरासान से पधारे संगीतज्ञों से प्रतिद्वंदिता हुआ करती थी जिसमें प्रायः भारतीय ही विजयी हुआ करते थे। नवाब वाज़िदअली शाह ने अपनी पुस्तक 'मौतुल मुबारक' में खुसरो का नायक होना स्वीकार किया है। किंतु वे उन्हें 'नायके खयाल' मानते हैं, 'नायके ध्रुपद' नहीं जिसके लिए उनकी प्रसिद्धि है।

गोपाल नायक को ऐतिहासिक तथ्यों द्वारा यदि अलाउद्दीन खिलजी का समकालीन सिद्ध किया जा सके तो उनके साथ खुसरो की प्रतिद्वंदिता भी संभव हो सकेगी। इसी प्रकार, कुछ अधिक रचनाएँ मिलने पर यह परखना सुगम हो जायेगा कि उनकी भक्तिपरक रचनाओं पर दाक्षिणात्य भक्तिधारा का कहाँ तक और कितना प्रभाव है। परंतु प्रस्तुत संग्रह की एक रचना (पद ८, पृ० ४७) से यही पता चलता है कि गोपाल नायक अकबर के ही समसामयिक थे।

हरिदास नाम के साथ-साथ किसी-किसी पद में वंश परिचायक 'डागुर' शब्द भी जुड़ा है जिससे यह अनुमान होता है कि वे जाट जातीय ठाकुर रहे होंगे। यह भी संभव हो सकता है कि हरिदास और हरिदास डागुर दो भिन्न-भिन्न व्यक्ति हों, क्योंकि कुछ विद्वान उन्हें सारस्वत ब्राह्मण बतलाते हैं। इनके पदों में राधा-भाव लिये एक सच्चे भक्त हृदय के उद्गार हैं। स्वामी जी के १२६ ध्रुपदों में से १८ सिद्धांतपरक हैं और शेष राधाकृष्ण के निकुंज-विहार से संबंध रखते हैं।

(बैजू बावरा के भक्तिपरक पदों में निर्गुण भक्तिधारा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में लक्षित होता है)।

तानसेन के पद अच्छी संख्या में उपलब्ध हैं। इनकी एक रचना 'संगीत सार रागमाला' प्रसिद्ध है, जिसका उपयोग श्री कृष्णानंद व्यासदेव ने किया था। इनमें भावों की विविधता और विभिन्न चित्रों की झलक है। भावक्षेत्र में एक ओर जहाँ शृंगारपरक पदों में केलि और विरह-वर्णन है वहाँ चित्रण के क्षेत्र में रूप-रंग, बाल लीला तथा मान लीला के दर्शन होते

है। इसी प्रकार, कहीं पर धार्मिक एवं ऐतिहासिक व्यक्तियों की चर्चा है तो कहीं पर प्रसिद्ध स्थानों का उल्लेख। वर्तमान हैदराबाद को उसके पुराने नाम भागनगर का संज्ञा प्राप्त है। सांस्कृतिक दृष्टि से हिंदू संस्कार का प्रभाव स्पष्ट है। शकुन विचार, प्रथा-पद्धति और ईद तथा दशहरा आदि आदि की झाँकी मिलती है। इनकी भक्ति-भावना में सगुण-निर्गुण का समान आदर है। 'दरब' (द्रव्य) का मोह इन्हें हेय लगता है। युद्ध का चित्रण करते समय ये भूषण की याद दिलाते हैं। कहीं-कहीं युद्धों के प्रतीक द्वारा संगीत की महत्ता प्रदर्शित करते हैं। सामाजिक दृष्टि से सौत की मनोवृत्ति का परिचय मिलता है। भाषा के क्षेत्र में ये अरबी को 'भाषा-नागरि' ठहराते हैं। इनके एक पद में ख़ुसरो का अनुसरण करते हुए हिंदी और फ़ारसी दोनों का ही प्रयोग साथ-साथ किया गया मिलता है। अपने एक पद में ये ख़ानख़ाना की चर्चा अत्यंत आदरपूर्वक करते हैं। इनके अकबर की प्रशस्ति और आत्मश्लाघा वाले पदों में दरबारी हवा का स्पर्श विदित होता है।)

भाषा और पाठ के प्रसंग में अभी इतना ही कहा जा सकता है कि जब तक पाठ का अंतिम रूप निर्धारित न हो जाय तब तक इस पर विचार तो किया जाय, किंतु अपना निर्णय स्थगित रखा जाय। यों तो अधिकांश पदों की भाषा ब्रजभाषा ही है जो उस युग की विशेषता की दृष्टि से भी स्वाभाविक है।

इसमें संदेह नहीं कि यह साहित्य वर्ग, जाति और धर्म के भेद-भाव को स्वीकार नहीं करता। इस कारण, यह साहित्य भारतीय एकता और सांस्कृतिक उदारता का प्रतीक है।

प्रस्तुत संग्रह से आशा की जा सकती है कि यह हिंदी साहित्य के एक विस्मृतप्राय उपेक्षित, किंतु महत्त्वपूर्ण अंग के अध्ययन की ओर साहित्य प्रेमियों को उन्मुख करने में समर्थ सिद्ध होगा। आवश्यकता इस बात की है कि सहृदयता पूर्वक इसकी परख एवं परीक्षा की जाय।

हिंदुस्तानी संगीत का विकास

धार्मिक विश्वास भारत के कण-कण में इस प्रकार व्याप्त है कि सभी शास्त्रों, विद्याओं और कलाओं का आरम्भ किसी देवी-देवता या अलौकिक घटना आदि से माना जाता है। संगीत भी इसका अपवाद नहीं। कोई इसका आरम्भ ब्रह्मा से मानता है, तो कोई महादेव से। कोई नारद से तो कोई दीपकलता नाम के पक्षी से।[1] तथ्य यह है कि इसके आरम्भ के विषय में वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक ढंग से कुछ कहना आज संभव नहीं है। बुद्ध काल के पूर्व की सारी भारतीय परंपराओं का आरम्भ अंधकार के गर्त में है। आज अनुमान के आधार पर केवल इतना ही कहा जा सकता है कि रोने और गाने वाले मानव ने पहले लोक संगीत का विकास किया होगा और बाद में उसके ही अनुकरण और परिष्करण के आधार पर शिष्ट संगीत का जन्म हुआ होगा।

आज भारतीय इतिहास एवं सभ्यता के प्राचीनतम अवशेष हमें सिंधु-सभ्यता के रूप में प्राप्त हैं। इन अवशेषों से तत्कालीन संगीत पर भी धुंधला प्रकाश पड़ता है। इसका तात्पर्य यह है कि आज तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर संगीत के इतिहास को सिंधु-सभ्यता के युग से देखा जा सकता है। उस काल तक आते-आते भारतीय संगीत में पर्याप्त विकास हो चुका था। नृत्य लोगों का प्रिय मनोरंजन था।[2] ताल और स्वर से भी लोग परिचित थे।

---

१. The Music of India—A. Begum Fyzee-Rahamain, London, 1925, Page 28

२. खुदाई में नृत्य करती हुई स्त्री की काँसे की मूर्ति मिली है। विशेषज्ञों का कथन है कि उसके पैरों की मुद्रा तालात्मक है। एक सलेटी पत्थर की नाचते पुरुष की मूर्ति मिली है जिसे नटराज (शिव) का पूर्व रूप माना गया है। हिंदू सभ्यता, रा० कु० मुकर्जी, दिल्ली १६५५, पृ० २२

गैलपिन तथा कारटोन आदि के अनुसार तत्कालीन विश्व की अन्य सभ्यताओं में लोग सात स्वर से परिचित थे। सिंधु घाटी के लोग ढोल, बाँसुरी, सीटी एवं करताल, वीणा तथा मृदंग की भाँति के बाजों का प्रयोग करते थे। आज के मृदंग, करताल तथा वीणा आदि सिन्धु घाटी में प्राप्त वाद्य यंत्रों के ही विकसित रूप हैं।[1]

वैदिक युग तक आते-आते भारतीय संगीत में पर्याप्त विकास हो चुका था। सामवेद के मंत्रों का गायन प्रसिद्ध है। यों कुछ लोगों का कहना है कि सामगान में उदात्त, अनुदात्त और स्वरित इन्हीं तीन का प्रयोग होता था।[2] पर यदि यथार्थतः यही बात है तो जैसा कि संगीत का सिद्धांत है तीन स्वरों के आधार पर 'राग' का निर्माण संभव ही नहीं है। उसके लिए कम से कम पाँच

1. Besides dancing, it appears that music was cultivated among the Indus people, and it seems probable that the earliest stringed instruments and drums (with which to keep rhythm accompaniment with the music) are to be traced to the Indus civilization. In one of the terracotta figures a kind of drum is to be seen hanging from the neck, and on two seals we find a precursor of the modern *mridanga* with skin at either end. Some of the pictographs appear to be representations of a crude stringed instrument, a prototype of the modern *Vina*; while a pair of castanets, like the modern *Kartala* have also been found.

Prehistoric Civilization of Indus Valley—K. N. Dikshit, Madras, 1939, Page 30.

One seal has presented a dancing scene. One man is beating a drum and others are dancing to tune. On one seal from [illegible], a man is playing on a drum before a tiger. On another, a woman is dancing. In one case, a male figure has a drum hung round his neck.

'The Rigveda and Mohanjo-daro' Indian Culture, Vol. 4, October, 1937.

२. Ragas and Raginis, O. C. Gangoly, page 9

स्वरों का होना आवश्यक है। यथार्थ यह है कि सामगान के 'उदात्त', 'अनुदात्त' और 'स्वरित' इन तीन परिभाषिक शब्दों पर पाणिनि व्याकरण शास्त्र

उच्चैरुदात्तः
नीचैरनुदात्तः
समाहारः स्वरितः[1]

में प्रयुक्त अर्थ लादने से यह कठिनाई उपस्थित होती है, जैसा कि प्रातिशाख्य की शाखा से स्पष्ट है उस युग में इन शब्दों का यह अर्थ नहीं था।

उदात्तौ निषाद-गांधारौ, अनुदात्तौ ऋषभ-धैवतौ
स्वरित-प्रभवाह्येते षड्ज-मध्यम-पंचमाः।[2]

से स्पष्ट है कि उदात्त, निषाद और गांधार, अनुदात्त ऋषभ और धैवत तथा स्वरित् षड्ज, मध्यम और पंचम था। भारतीय शिक्षा के 'नानमुन्नदं' एवं मतंग के बृहद्देशी में प्रयुक्त 'त्रिस्वरश्चैव सामिक' का भी इसी दृष्टिकोण से उचित अर्थ निकल सकता है।

कुछ लोगों का मत यह भी है 'ऋक्' एक स्वर में, 'गाथा' दो स्वर में तथा 'साम' उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः, इन तीन स्वर में गाया जाता था। साथ ही चार स्वरों का भी एक समूह 'स्वरांतर'[3] नाम से था, और उत्तर वैदिक युग में इन तीन या चार से सात स्वरों का विकास हुआ। पर यह विकास वैदिक युग के बाद ही हुआ, इस अनुमान के लिए हमारे पास प्रामाणिक आधार-सामग्री का सर्वथा अभाव है। इसके विरुद्ध कुछ ऐसी सामग्री अवश्य उपलब्ध है जिसके आधार पर वैदिक काल की तो बात ही क्या, प्राचीनतम वेद 'ऋग्वेद' के काल में ही संगीत के पर्याप्त उन्नति का पता चलता है। डॉ० राधा कुमुद मुकर्जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंदू सिविलाइज़ेशन' में ऋग्वे-

१. लघु कौमुदी, संज्ञा प्रकरण
२. Ragas and Raginis, O. C. Gangoly, page 9
३. प्राचीन यूनान में 'टेट्राकार्ड' इसी प्रकार का था।

वैदिक युग के मनोरंजन के साधनों पर प्रकाश डालते हुए जो कहा है वह इस प्रसंग में द्रष्टव्य है। वे लिखते हैं—

Dancing was indulged in by both sexes to the accompaniment of music from cymbal (aghati) [X, 146, 2] and the three types of musical instrument, operated by percussion, string and wind, were already known, *viz.* the drum, *dundubhi* [I, 28, 5], lute karkari [II, 43, 3], or lyre or harp, vana, with its seven notes recognized and distinguished [X, 32, 4], and the flute (of reed) called *nāla* [X, 135, 7].[1]

मांडूकि शिक्षा के

'सप्त स्वरास्तु गीयन्ते सामभिः सामगैर्बुधैः'

एवं नारदीय शिक्षा के

यः सामगाना प्रथमः सवेणोर्मध्यमः स्वरः।
यो द्वितीयः स गांधारः तृतीयः ऋषभः स्मृतः।
चतुर्थ षड्ज इत्याहु निषादः पंचमो भवेत।
षष्ठतु धैवतो ज्ञेयः सप्तमः पंचमः स्मृतः

से भी इसकी अच्छी तरह पुष्टि हो जाती है। हाँ, यह अवश्य है कि उस युग में इन सात स्वरों के ये नाम नहीं थे। तत्कालीन साहित्य में मिले क्रुष्टा, प्रथम, द्वितीया, तृतीया, चतुर्था, मंद्र और अतिस्वर को संगातीचार्यों ने आज के सात स्वरों के समानांतर रखने का प्रयास किया है, जो इस प्रकार हैं—

मध्य......क्रुष्टा
गांधार......प्रथम
ऋषभ......द्वितीया

1. Hindu Civilization, page 77.

षड्ज......तृतीया
निषाद......चतुर्थी
धैवत......मंद्र
पंचम......अतिस्वर

इस प्रकार वैदिक युग में संगीत (गायन, वादन और नृत्य) का पर्याप्त विकास हो चुका था। उत्तर वैदिक युग तक आते-आते इस क्षेत्र में भारतीयों ने और भी उन्नति की।[१] आगे चल कर महाभारत रामायण काल आता है। पूर्व युगों की भाँति ही इस युग में भी संगीत पर लिखी गई कोई स्वतंत्र पुस्तक नहीं मिलती जिसके आधार पर भारतीय संगीत की सर्वांगीण उन्नति का अनुमान लगाया जा सके, पर रामायण और महाभारत[२] में यत्र-तत्र ऐसे उल्लेख मिलते हैं जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि संगीत का सामान्य जनता में पर्याप्त प्रचार था और विभिन्न उत्सवों आदि के अवसर पर इसका विशेष आयोजन होता था। साथ ही घन, अवनद्ध तथा सुषिर जाति के अनेकानेक नवीन बाजे आविष्कृत हो चुके थे एवं ऐसी जातियों का भी विकास हो चुका था जो स्वतंत्र रूप से केवल गायन, वादन और नृत्य के आधार पर ही अपनी जीविका चलाती थीं।

रामायण-महाभारत काल के बाद से लेकर ८वीं-९वीं सदी तक भारतीय संगीत अपने उर्ध्व बिंदु पर मिलता है। इस लम्बे युग में संगीत की स्थिति पर चार शीर्षकों में प्रकाश डाला जा सकता है।

---

१ In post vedic age Music was in vogue. There is mention of players on *mridang*, *madduka* and *jharjhara* and of concerts *turyanga*, of vocalists. gathakas and dancers *nartakas*.—Hindu Civilization, R. K. Mukerjee, page 124.

२. महाभारत के अनुसार अर्जुन संगीतकला के अच्छे ज्ञाता थे। अज्ञातवास के समय वे विराट के यहाँ बृहन्नला रूप में इसकी शिक्षा देते थे।

क. संगीत से संबंधित साहित्य

दत्तिलम्—दत्तिलम् के लेखक दत्तिला का समय ३री या ४थी सदी के आसपास माना जाता है। पुरानी परंपरा के अनुसार दत्तिला पाँच भरतों में से एक थे जिनके कारण नाटक और संगीत का प्रचार हुआ। कुछ लोगों के अनुसार दत्तिला और कोहला (ये भी पाँच भरतों में एक थे) ने मिलकर संगीत विषयक दत्तिल-कोहलीयम् ग्रन्थ की रचना की थी। दत्तिलम् का प्रकाशन त्रिवेंन्द्रम संस्कृत सिरीज़ में हो चुका है। भरत ने अपने नाट्यशास्त्र में संगीत के विषय में जो कुछ लिखा है उसका कुछ अंश दत्तिलम् में भी है और ऐसा लगता है कि कुछ अंशों तक भरत इनसे प्रभावित भी हैं। साथ ही कुछ बातों में दोनों में अंतर भी है। यहाँ दोनों की समानताओं तथा अंतर का थोड़ा परिचय अप्रासंगिक न होगा। दत्तिला ने 'ग्राम' शब्द की व्याख्या नहीं दी है, भरत में भी यह नहीं है। मूर्च्छना की परिभाषा भरत ने दी है पर वह दत्तिलम् में नहीं है। समवादी स्वरों की दूरी दत्तिला ने नौ अथवा तेरह श्रुतियों की मानी है। भरत को भी यह मान्य है। दूसरी ओर विवादी स्वरों में दत्तिला को १८ जातियाँ मान्य हैं। वादी, अनुवादी तथा विवादी आदि स्वरों को परिभाषा में बाँधने का प्रथम प्रयास दत्तिला ने ही किया है।

नाट्यशास्त्र—भरत का नाट्यशास्त्र (५वीं सदी) वास्तव में नाटक सम्बन्धी ग्रन्थ है पर इसके २८, २९ और ३०वें अध्याय में संगीत विषयक विवेचन भी है। यह संभवतः इसलिए कि नाटक में संगीत की भी आवश्यकता पड़ती है।

पूर्वोक्त कथन के अनुसार भरत ने दत्तिला से बहुत कुछ लिया है, पर साथ ही उनके द्वारा संगीत के विषय में दी गई मौलिक सामग्री भी कम नहीं है। भरत में 'राग' शब्द का प्रयोग कहीं नहीं है। इन्होंने वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी के अतिरिक्त द्विश्रुतिक, त्रिश्रुतिक और चतुर्श्रुतिक आदि स्वरों का भी वर्णन किया है। षड्ज, ग्राम एवं मध्य ग्राम की (७ + ११) १८ जातियाँ भरत

ने लिखी हैं और इन्हें शुद्ध और विकृत में विभाजित किया है। भरत ने जाति के ग्रह, अंश, तार, मंद्र, न्यास, अपन्यास, अल्पत्व, बहुत्व, षाडवत्व और औडवत्व ये दस लक्षण दिए हैं।

बृहद्देशी—इस ग्रन्थ के रचयिता मतंग का समय दत्तिला और भरत के बाद है। ये ७वीं सदी के कुछ पूर्व के माने जा सकते हैं। संगीत के क्षेत्र में मतंग की देन पर्याप्त महत्व रखती है। 'राग' शब्द का प्रथम प्रयोग इन्होंने ही किया है। इनके 'ग्राम राग' थे जो संगीत के विद्वानों के अनुसार आज के राग से सर्वथा भिन्न थे। इन्होंने ग्राम और मूर्छना को विस्तार से समझाया है। मतंग ने अपने पूर्ववर्ती संगीत शास्त्रियों द्वारा अछूती अन्य बहुत-सी बातों पर भी प्रकाश डाला है। उनका यह प्रयास भी रहा है, जैसा कि उन्होंने कहा है—

रागमार्गेषु यद्रूपम् यानोक्तम् भरतादिभिः।
निरूप्यते तदस्माभिः लक्षणसंयुतम्।

राग जाति के विषय में मतंग कहते हैं—

स्वर वर्ण विशेषण ध्वनि भेदेन वा पुनः
रज्यते येन यः कश्चित् स रागः संमत सताम्।

इसके आधार पर विद्वान् इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्राचीन जाति गायन के लक्षण ही कालांतर राग गायन में सम्मिलित हो गए। मतंग की राग जातियों के नाम टक्की, सावीरा, मालव पंचम, षाडव, वट्ट राग, हिंडोलक तथा टक्क कैशिका हैं।

कुछ लोगों का यह भी कहना है कि मतंग के बृहद्देशी ग्रंथ में वर्णित संगीत विषयक बातें मार्ग संगीत को न होकर लोक संगीत की हैं। ग्रंथ का नाम भी संभवतः इसी ओर संकेत करता है।

नारदीय शिक्षा—नारदीय शिक्षा नारद लिखित ग्रंथ बतलाया जाता है। पर यह एक समस्या है कि इसके रचयिता कौन-से नारद थे और उनका समय क्या था। कुछ लोगों का अनुमान है कि नारद नाम के तीन लेखक हो चुके

है,[१] जिनमें नारदीय शिक्षा के लेखक सबसे प्राचीन थे। बाद के दो नारदों की रचनाएँ संगीत मकरंद तथा चत्वारिंशतरागिनी रूपणम् हैं।

नारदीय शिक्षा के समय को कुछ लोग ३री से ६ठीं सदी के बीच[२] मानते हैं, पर दूसरी ओर कुछ लोग १० वीं सदी के बाद भी मानते हैं। अधिक युक्ति संगत मत यह है कि इसका रचना काल ७ वीं सदी के बाद का नहीं है।[3] नारदीय शिक्षा के सात मुख्य राग षाडव, पंचम, मध्यम ग्राम, षडज ग्राम, साधारिता, कैशिक मध्यम तथा मध्यम ग्राम (कैशिक युक्त) हैं। इन्हें उन्होंने ग्राम राग कहा है। ऐसा लगता है कि इन्हीं ७ रागों से आगे चलकर छः राग बने।

संगीत मकरंद—नारद द्वितीय रचित इस ग्रंथ का समय ८ वीं सदी लगभग है। इस ग्रंथ के संपादक श्री एम० आर० तेलंग के अनुसार ७ वीं और ११ वीं सदी के बीच में इस ग्रंथ की रचना हुई है। 'संगीत मकरंद' में संगीत विषयक ठोस सामग्री पर्याप्त है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यहीं सर्वप्रथम राग और रागिनी में भेद किया गया है। यथार्थतः उन्होंने संस्कृत व्याकरण की भाँति पुल्लिंग राग, स्त्रीलिंग राग और नपुंसकल्लिंग राग नाम के तीन वर्ग बनाए हैं। इस वर्गीकरण का आधार राग विशेष द्वारा व्यक्त भाव या रस है। उन्होंने यह भी कहा है—

> रौद्रे भूते तथा वीरे पुंरागैः परिगीयते।
> शृंगार-हस्य करुणे स्त्री-रागैश्च प्रगीयते।
> भयानके च वीभत्से शांते गायन्नपुंसके।[४]

1. There were probably three authors known by the name of Narada.
   Northern Indian Music (Volume one)—Alain Danielou, page 23
२. संगीत शास्त्र, भाग २—महेश नारायण सक्सेना, पृष्ठ १६४
3. Ragas and Raginis—O. C. Gangoly, page 14.
४. संगीत मकरंद, पृ० १९.

कि रौद्र तथा वीर आदि रसों को उत्पन्न करने के लिए, पुंराग, शृंगार, हास्य तथा करुण के लिए स्त्री-राग और भयानक तथा वीभत्स के लिए नपुंसक राग गाना चाहिए।

संगीत मकरंद में कुल सत्तावन राग-रागनियों का उल्लेख है, जिनमें २० पुरुष राग, २४ स्त्री राग और १३ नपुंसक राग हैं।

संगीत मकरंद में कुछ अन्य प्रकार के राग विभाजन भी हैं। उदाहरणार्थ कंपन के आधार पर मुक्तांग कंपित (पूर्ण कंपन युक्त राग) तथा कंप विहीन (अल्प कंपन वाले राग) राग, सम्पूर्ण षाड़व और ओड़व राग तथा समय के आधार पर प्रातर्गेयराग, मध्याह्न कालिक राग एवं रात्रिगेय राग। इस ग्रंथ में प्रथम बार समय के नियम पर विशेष बल दिया गया है।

ख. विदेशों से आदान-प्रदान

इस लम्बे युग में संगीत के क्षेत्र में भारत ने अन्यान्य देशों से भी आदान-प्रदान किया। यहाँ इसे संक्षेप में देखा जा सकता है।

प्राचीन काल में एक प्रकार की वीणा किन्नरी वीणा या किन कहलाती थी। भारत के सम्पर्क में आने पर चीनियों ने इस वाद्ययंत्र को ग्रहण किया और किन के आधार पर इसका नाम खीन (Khin) रखा। इस वाद्ययंत्र का उल्लेख चीनी साहित्य में २री सदी ई० पू० से भी पूर्व से ६-७वीं सदी ई० पू० तक मिलता है। लीकी[1] के अनुसार प्रसिद्ध दार्शनिक सन्त कनफ्यूसियस (५५१-४७८ ई० पू०)'खीन' बजाने के बड़े शौकीन थे और सर्वदा यहाँ तक कि टहलने जाते समय और यात्रा में भी 'खीन' अपने साथ रखते थे।

यूरोपीय देशों से भी भारत का सम्पर्क था और संगीत के क्षेत्र में वहाँ भी भारत का ऋण है। ऊपर किन्नरी वीणा, किन और खिन का उल्लेख किया जा चुका है। जेनेसिस (४-२१: ३१-२७) में भी इसका नाम मिलता है। दाऊद को किन्नर (Kinnor) बजाने का चाव था।

[1] Northern Indian Music—Alain Danielou, Page 20

यूनान में संगीत के विकास पर भी एशिया का प्रभाव विद्वानों ने माना है।[1] रामास्वामी शास्त्री ने भारत के प्रभाव से भी उसे अभिभूत माना है।[2] इसके साथ ही इसका दूसरा पक्ष भी है। संगीत के ही कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में जहाँ भारतीयों ने यूनानियों को दिया है, उनसे कुछ लिया भी है। भारतीयों का यह आदान अनवद्ध वाद्य एवं नृत्य के क्षेत्र में था।[3]

---

[1] The antiquity of Indian theatrical art and musical theory was well known to the ancient world. According to strabo (Geography X, II, 17) the Greeks considered that music "from the triple point of view of melody, rythm and instruments" came to them originally from Thrace and Asia. "Besides the poets, who make of the whole of Asia including India, the land or sacred territory of Dionysos, claim that the origin of music is almost entirely Asiatic. Thus, one of them speaking of the lyre, will say that the causes the strings of the Asiatic cithara to vibrate.

Northern Indian Music—Alain Danielou, Page 21

[2] A far more important and interesting task is the inner evolution of music in India. The Greeks themselves attributed the greater part of their music to India (see Strabo X,III). It is said that their music was probably akin to South Indian music. Their music resembled to a large extent in the realization of the relation of music to emotional states and of the connection of musical education and betterment of public moral and national life.—K. S. Ramaswamy Sastri

Indian Concept of the Beautiful, page 116

[3] Megasthenes says that Dionysos "taught the Indians to worship the other Gods and himself by playing cymbols and drums : he also taught them the satyre dance which the Greeks call *Kordax*."

"This is because they are, of all peoples, the greatest lovers of music and have practised dancing with great love since the days when Bacchus and his companions led their bacchanalia in the land of Ind." (Arrian : Exp. Alex., VI 3, 10)

Northern Indian Music—Alain Danielou, page 21

ग. सामान्य प्रवृत्तियाँ

संगीत की सामान्य प्रवृत्ति जानने के लिए इस लम्बी अवधि को पूर्व और उत्तर दो भागों में बाँटा जा सकता है। पूर्वकाल के अन्तर्गत पौराणिक तथा बौद्ध युग आते हैं। इस काल में जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है स्वतन्त्र ग्रंथ नहीं मिलते पर साहित्य में यत्र-तत्र संगीत के उल्लेख से यह स्पष्ट हुए बिना नहीं रहता कि लोगों में संगीत की साधना चलती रही।

इस काल के संगीत के रूप के विषय में निश्चय के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता इसीलिए इस काल को कुछ लोगों ने संदिग्ध काल कहा है।

इस काल तक आते-आते तत्, अवनद्ध तथा सुषिर जाति के वाद्यों का प्रयोग होने लगा था। पर साथ ही 'घट' जैसे पुराने वाद्य का भी प्रयोग होता था। सप्त स्वर के अतिरिक्त तीन स्थान, ग्राम तथा स्वर-संवादित्व से भी लोग परिचित थे।

उत्तर प्राचीन काल का समय १ली ई० से ८०० ई० तक माना जा सकता है। उल्लिखित भरत का 'नाट्यशास्त्र' दत्तिला की पुस्तक 'दत्तिलम्' मतंग मुनि का 'बृहद्देशी', 'नारदीय शिक्षा', तथा 'संगीत मकरंद' आदि इस युग के संगीत विषयक प्रधान ग्रन्थ हैं।

इस काल में संगीत का पर्याप्त विकास हुआ। इस काल की प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं—

१. ग्रामों का स्पष्ट ज्ञान और प्रयोग
२. २२ श्रुतियों का ज्ञान
३. २१ मूर्छनाओं का ज्ञान
४. संगीत में गायन और वादन के अतिरिक्त नृत्य और नाट्य को भी स्थान दिया जाने लगा था।
५. जाति गायन का प्रचलन

९. अंतिम चरण में राग गायन का उदय और उनका वर्गीकरण[1]

कालिदास[2] तथा हर्ष आदि अनेकानेक कवियों ने अपनी पुस्तकों में विभिन्न उत्सवों के अवसर पर संगीत का उल्लेख किया है जिससे पता चलता है कि शिष्ट और लोक[3] दोनों ही संगीतों का पर्याप्त प्रचार था।

९वीं सदी से १८वीं सदी तक के समय को हम लोग मध्ययुग के नाम से अभिहित कर सकते हैं। इसके बाद से ही संगीत का आधुनिक युग आरंभ होता है।

मध्ययुग में संगीत के क्षेत्र में पर्याप्त साधना हुई और ग्रंथ भी लिखे गए। इस युग के संगीत विषयक ग्रंथों की एक सूची यहाँ देखी जा सकती है।

१. उद्भट (नवीं सदी आरंभ) नाट्य-शास्त्र पर टीका
२. लोल्लट (नवीं सदी मध्य) नाट्य शास्त्र पर टीका
३. शंकुक (नवीं सदी मध्य) नाट्य शास्त्र पर टीका
४. अभिनव गुप्त (दसवीं सदी का अंतिम चरण) तथा अभिनव भारती
५. मम्मट (१०५०–११५० ई०) संगीत-रत्नमाला
६. सोमेश्वर द्वितीय (११३१ ई०)—मानसोल्लास
७. लोचन कवि (११६० ई०)—राग-तरंगिनी
८. देवेन्द्र (१२वीं सदी उत्तरार्ध)—संगीत-मुक्तावली
९. सोमेश्वर तृतीय (११७४–११७७ ई०)—संगीत-रत्नावली
१०. शारदा तनय (१२०० ई०)—भाव प्रकाश

१. संगीत मकरंद से यह पता चलता है।

२. कालिदास का भारत (भाग २) पृ० ७७-८।

३. लोक संगीत की क्षीण परंपरा का ऋग्वेद से लेकर ७-८वीं सदी तक का अच्छा परिचय सरकार ने Folk Element in Hindu Culture में दिया है पृ० १२१-२८।

११. नान्य देव (१२०० ई० के लगभग)—सरस्वती-हृदयालंकार
१२. जैत्र सिंह (१२१३ ई०)—भरत भाष्य
१३. शारंगदेव (१२१०–१२४७ ई०)—संगीत-रत्नाकर
१४. जयसेन (१२५३ ई०)—नृत्त-रत्नावली
१५. हम्मीर (१३वीं सदी का अंतिम चरण) संगीत-शृंगार-हार
१६. प्रताप (१४वीं सदी प्रथम चरण) संगीत-चूड़ामणि
१७. सोमनाथ (१४वीं सदी) पंडिताराध्यचरित्र बासव पुराण
१८. वसंतराज (१४वीं सदी) वसंतराज्य-नाट्यशास्त्र
१९. पार्श्वदेव (१४वीं सदी) संगीत-समय-सार
२०. शारंगधर (१३००–१३५० ई०) शार्ङ्गधर-पद्धति
२१. श्री विद्या चक्रवर्ती (१४वीं सदी) भरत-संग्रह
२२. सुधाकलश (१३२३–१३४९ ई०) संगीत उपनिषद्
२३. सिंहभूपाल (१४वीं सदी) संगीत रत्नाकर पर 'सुधाकर' नामक भाष्य
२४. विद्यारण्य (१३२०–१३८० ई०) संगीतसार
२५. वेम भूपाल (१५वीं सदी आरंभ) संगीत-चिंतामणि
२६. गोपेन्द्र टिप्प भूपाल (१४२३-१४४६ ई०) ताल दीपिका
२७. कुम्भकर्ण (१४३३-१४६८ ई०) संगीत राज, संगीत क्रम दीपिका
२८. कल्लिनाथ (१५ वीं सदी मध्य) संगीत रत्नाकर पर 'कलानिधि' नाम का भाष्य
२९. कमल लोचन (१५ वीं सदी) संगीत-चिन्तामणि
३०. रामानंद नारायण शिव योगी (१५ वीं सदी) नाट्यशास्त्र-दीपिका
३१. केशव (१५ या १६ वीं) संगीत-रत्नाकर पर भाष्य
३२. हरिनायक (१६ वीं सदी) संगीतसार
३३. मेघकर्ण (१६ वीं सदी) रागमाला
३४. मदन पाल देव (१६ वीं सदी) आनन्द-संजीवन
३५. लक्ष्मी नारायण (१६ वीं सदी) संगीत-सूर्योदय

३६. लक्ष्मीधर (१६ वीं सदी) भरतशास्त्र-ग्रंथ
३७. रामामात्य (१६ वीं सदी मध्य) स्वर-मेल-कलानिधि
३८. पुंडरीक विट्ठल (१६ वीं सदी उत्तरार्ध) रागमाला, राग-मंजरी तथा नर्तन-निर्णय
३९. माधव भट्ट (१७ वीं आरम्भ) संगीत-चंद्रिका
४०. सोमनाथ (१७ वीं आरम्भ) राग-विबोध
४१. गोविंद दीक्षित (१७ वीं आरम्भ) संगीत-सुधा
४२. गोविंद (१७ वीं आरम्भ) संग्रह-चूड़ामणि
४३. वेंकट मखी (१७ वीं सदी आरम्भ) चतुर्दंडी-प्रकाशिका
४४. दामोदर मिश्र (१७ वीं सदी आरम्भ) संगीत-दर्पण
४५. हृद नारायण देव (१७ वीं सदी मध्य) हृदय-कौतुक, हृदय-प्रकाश
४६. वासव राज (१७ वीं अन्तिम चरण) शिव-तत्त्व-रत्नाकर
४७. अहोबल (१७ वीं अन्तिम चरण) संगीत-पारिजात
४८. श्री निवास (१७ वीं अन्तिम चरण) राग-तत्त्व-विबोध
४९. अभिमल (१७ वीं सदी अन्तिम चरण) संगीत-चन्द्र
५०. जगद्धर (१७ वीं सदी) संगीत-सर्वस्व
५१. कमलाकर (१७ वीं सदी) संगीत-कमलाकर
५२. किंकराज (१७ वीं सदी) संगीत-सारोद्धार
५३. जगज्जयोतिर्मल्ल (१७ वीं सदी) संगीतसार-संग्रह, संगीत-भास्कर
५४. रघुनाथ भूप (१७ वीं सदी) संगीत-सुधा
५५. नंग राज (१७ वीं सदी) संगीत-गंगाधरण
५६. सुद वेद (१७ वीं सदी) संगीत-मकरंद, संगीत-पुष्पांजलि
५७. वंगमणि (१७ वीं सदी) संगीत-भास्कर
५८. शुकम्भर (१७ वीं सदी) संगीत-दामोदर
५९. भाव भट्ट (१७ वीं सदी) अनूप संगीत-अंकुश, अनूप संगीत-रत्नाकर, अनूप संगीत-विलास

इनमें से दो प्रधान ग्रंथों में वर्णित संगीत विषयक बातों का यहाँ अत्यंत संक्षिप्त परिचय देखा जा सकता है।

संगीत रत्नाकर—संगीत का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। यह हिंदुस्तानी या उत्तर भारतीय और कर्नाटकी या दक्षिणी भारतीय दोनों ही संगीत धाराओं का शास्त्रीय ग्रंथ है। इस पर कई महत्वपूर्ण टीकाएँ लिखी गई हैं जिनमें अधिक प्रसिद्ध भूपाल सिंह और कल्लिनाथ की हैं।

संगीत-रत्नाकर में उस समय तक की संगीत विषयक सारी प्रगति का उल्लेख है।

संगीत-रत्नाकर में वर्णित विषयों को देखकर कुछ लोगों का अनुमान है कि इसके लेखक शारंगदेव ने उसमें उत्तरी और दक्षिणी संगीत के समन्वय का प्रयास किया है। कुछ लोगों के विचार में लेखक इस प्रयास में सफल नहीं हुआ है, उलटे उसने अनेकानेक के समस्याएं उठा दी हैं। कुछ लोग इस मत के भी हैं कि अभी तक संगीत-रत्नाकर को विद्वान ठीक से समझ नहीं सके हैं।

संगीत रत्नाकर में जाति और ग्राम रागों का वर्णन विस्तार से है। राग विवेकाध्याय में प्राचीन काल में प्रसिद्ध देशी रागों का भी विवेचन सविस्तर है। इसके पूर्ववर्ती संगीत के ग्रंथकारों दत्तिला, भरत, तथा मतंग आदि ने समवादी स्वरों में नौ अथवा तेरह श्रुतियों का अंतर माना था पर शारंगदेव ने यह अंतर आठ अथवा बारह श्रुतियों का माना। इसी प्रकार पूर्ववर्ती लेखकों ने विवादी स्वरों का अंतर दो श्रुतियों का माना था, पर शारंगदेव ने एक श्रुति का माना।

संगीत-रत्नाकर में कुल १२ विकृत स्वर माने गए हैं और ग्यारह जातियाँ विकृत और सात शुद्ध मानी गई हैं। इसमें जाति के ग्रह, न्यास, अंश, संन्यास, अपन्यास, मंद्र, विन्यास, अल्पत्व, बहुत्व, षाड़वत्व, ओड़वत्व तथा अंतर मार्ग आदि तेरह लक्षण दिए गए हैं। संगीत-रत्नाकर के अनुसार ग्राम राग जातियों से उत्पन्न हैं और उनसे ही अन्य राग निकले हैं। इसमें सब मिलाकर २६४ रागों का वर्णन किया है।

राग-तरंगिणी—इसके रचियता लोचन हैं। इसका रचना काल बहुत

विवादास्पद है। कुछ लोग इसे १२ वीं सदी की रचना मानते हैं और कुछ के अनुसार इसकी रचना १४-१५ वीं सदी के आस पास हुई थी और कुछ के अनुसार १७ वीं सदी में। इसका शुद्ध था आधुनिक काफ़ी के सदृश है। लोचन सभी जन्य रागों को कुल १२ जनक थाटों में बाँटा है। भारतीय संगीत में मेल राग या थाट राग वर्गीकरण का आरंभ यहीं से है। इनके अनुसार मूल १२ राग भैरव, तोड़ी, गौरी, कर्नाट, केदार, इमन, सारंग, भैरवी, धनाश्री. पूर्वी, मुखारी और दीपक हैं। यों कुल १६००० राग थे जिन्हें कहा जाता है कि गोपियाँ गाती थीं। इसमें जयदेव और विद्यापति के गीत भी हैं। राग-तरंगिणी में रागों के देवता के स्वरूप का भी चित्रण है।

५. उत्तर भारतीय संगीत पर मुसलानों का प्रभाव

हिंदुस्तानी या उत्तर भारतीय संगीत पर मुसलमानों का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। कर्नाटकी या दक्षिण भारतीय संगीत और उत्तर भारतीय संगीत में सबसे बड़ा अंतर यही है कि दक्षिणी मुसलमानी प्रभाव से बिल्कुल अछूता है और उसका आज भी प्रायः वही रूप है जो आज से एक हजार पूर्व था।

९वीं १०वीं सदी से भारत से मुसलमानों का संपर्क होने लगा पर यह संपर्क उस समय इतना नहीं था कि यहाँ कोई महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सके। दो-तीन सौ वर्षों बाद १२ और १३वीं सदी तक मुसलमानों का राज्य यहाँ स्थापित हो गया और तब भारतीय संगीत उनसे प्रभावित हुआ।

भारतीय संगीत पर मुसलमानी प्रभाव को सफल बनाकर इसे अधिक मोहक बनानेवालों में अमीर खुसरो का नाम प्रधान रूप से लिया जाता है। अमीर खुसरो प्रसिद्ध फ़ारसी कवि तथा संगीतज्ञ थे। इन्होंने भारतीय संगीत के मूल सिद्धांतों को पूर्ण रूपेण हृदयंगम करने की कोशिश की और तब मुसलमानी या ईरानी संगीत से ऐसी चीजें इसे दीं जिसने उसे एक नई गरिमा प्रदान की। उन्होंने भारतीय तथा ईरानी रागों के मिश्रण से कुछ ऐसे नए राग बनाए जो आज भी हिंदुस्तानी संगीत के लिए गर्व के विषय हैं।

खुसरो द्वारा आविष्कृत प्रधान राग निम्नांकित हैं। आगे कोष्ठों में वे राग दिखाए हैं जिनके मिश्रण से ये नवीन राग बने हैं।

१. मजीर (ग़ार और एक ईरानी राग)
२. साज़गरी (पूर्वी, गौड़, कांगली और एक ईरानी राग)
३. इमन (हिंडोल और नैरेज़)
४. उश्शाक (सारंग, बसंत और नवा)
५. मुवाफ़िक (टोड़ी, मालवी, दोगह तथा हुसैनी)
६. ग़नम (पूर्वी का थोड़ा परिवर्तित रूप)
७. ज़िल्फ (शाहनाज़ तथा पटराग)
८. फरग़ाना (फरग़ाना, गौड़ और कांगली युक्त)
९. सरपर्दा (सारंग, पतवल और रास्त)
१०. बकहरार (देसकार और एक ईरानी राग)
११. फ़िरदोस्त (कान्हरा, गौड़ी, पूर्वी और एक ईरानी राग)
१२. मनम् (कल्याण और एक ईरानी राग)

इनमें साज़गरी, उश्शाक और मुवाफ़िक में तो संगीत अपनी पूर्णता पर पहुँच गया है। शेष रागों में कुछ परिवर्तन करके उनके नए नाम क़ौव्वाली, तराना, ख़याल, नक्श, निग़ार, बसीत, तलन और मुहला—दिए हैं।

इन रागों के अतिरिक्त वाद्य-यंत्रों के क्षेत्र में भी मुसलमानों का प्रभाव पर्याप्त पड़ा। मिश्रणोपरांत विकसित नवीन हिंदुस्तानी संगीत के उपयुक्त मृदंग (पखावज) के आधार पर खुसरो ने तबला तथा वीणा के आधार पर सितार बनाया। कहना न होगा कि आज भी इन दोनों वाद्यों का विशिष्ट स्थान है। इस प्रकार मुसलमानों का उत्तर भारत के संगीत पर महत्वपूर्ण तथा अमिट प्रभाव पड़ा।

भारतीय संगीत पर मुसलमानी प्रभाव से संबंधित एक प्रश्न प्रायः उठाया जाता है कि इसके कारण भारतीय संगीत की उन्नति हुई या अवनति। इस प्रसंग

में दोनों ही प्रकार की सम्मतियाँ[1] व्यक्त की गई हैं। तथ्य यह है कि ईरानी या मुसलमानी प्रभाव के कारण भारतीय संगीत में वह व्यापकता, लोच और आकर्षण आया है जो अप्रभावित रहने के कारण दक्षिणी संगीत में नहीं आ सका है। इस प्रकार इसकी उन्नति ही हुई है। इस संबंध में पंडित वी० एन० भातखंडे का कथन प्रमाण माना जा सकता है।[2]

[1] The most flourishing age of Indian music was during the period of the native princes, a little before the Mohamedan conquest. With the advent of the Mohemedans its decline commenced. Indeed it is wonderful that it survived at all.

Capt. Day : Music of Southern India, page 3.

The conquest of Hindusthan by the Mohemedans princes forms a most important epoch in the history of its music. From this time we may date the decline of all arts and science purely Hindu, for the Mohamedans were no great patrons to learning, and the more bigoted of them were not only great inconoclasts, but discouragers of the learning of the country. The progress of the theory of music once arrested, its decline was speedy, although the practice which contributed to the entertainment of the princes and nobles, continued until the time of Mohamad Shah, after whose reign history is pregnant with facts replete with dismal scenes. But the practice of so fleeting and perishable a science as that of a succession of sounds, without a knowledge of the theory to keep it alive, or any mode to record it on paper, dies with the professor.

Capt. Willard, A Treatise on the Music of Hindusthan, page 106.

[2] Did music really detariorate by falling into the hands of the foreigners? Personally speaking, I am not one of those who will unhesitatingly assert that the foreign contact was an unmitigated misfortune. I shall not deny that the northern music during those times underwent some vital changes, but I am of opinion that our music gained considerably from the foreign influence. Are we not frequent-

सामान्य स्थिति और विभिन्न केन्द्र

८ वीं ९ वीं सदी से लेकर १७ वीं १८ वीं तक के इन ९ सौ वर्षों में उत्तर भारत के संगीत में पर्याप्त उथल-पुथल हुआ। इसके मूल कारण दो थे। एक तो मुसलमानों का आना और दूसरे भक्ति आंदोलन। मुसलमानों के सम्पर्क का भारतीय संगीत पर क्या प्रभाव पड़ा, इस पर पीछे संक्षेप में विचार किया जा चुका है। भक्ति आंदोलन के कारण संगीत लोक मानस के समीप आया। जयदेव, विद्यापति, चंडीदास, चैतन्य, हरिदास, कबीर, नानक, मीरां, सूर नामदेव तथा तुकाराम आदि ने धर्म का स्पर्श देकर इसे नई चेतना प्रदान की और पूरा उत्तरी भारत प्रबंधों, गीतों और अभंगों की तरंग में तरंगित हो उठा। मंदिर भी भजन और कीर्तन के माध्यम से संगीतमय हो उठे।

इस युग में संगीत की शास्त्रीय उन्नति को प्रेरणा देने वालों में प्रमुख नाम बादशाह अलाउद्दीन, ग्वालियर नरेश मानसिंह, अकबर तथा जयपुर नरेश प्रतापसिंह आदि का लिया जा सकता है।

अलाउद्दीन का राज्य १३ वीं सदी के अंतिम एवं १४ वीं सदी के प्रथम चरण में था। यह संगीत का अनन्य प्रेमी था। इसने १२९४ ई० में दक्षिण पर

---

ly told that the Southerners have more or less successfully kept the Northern contamination at arm's length, and preserved intact the ancient tradition? Well if their claim is true and allowable then the condition of their music of the North really was in its pristine condition. Now I openly ask, would you at the present moment like to throw up your current music in favour of the older one. I do not think you would. Do not our Southern friends themselves now and then tell us from their experience that the Hindusthani music, with all its weakness in the matter of a *shastric* foundation, does possess many evident points of pleasing excellence, which they would be only too glad to recommend their own professionals to carefully study and imitate.

—V. N. Bhatkhande, A Short Historical Survey of the Music of Upper India, page 20-1.

आक्रमण किया। देवगिरि के यादव राजा को पराजित कर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। उस समय दक्षिण में कई अच्छे-अच्छे संगीतज्ञ थे जो अलाउद्दीन द्वारा अपने दरबार में लाए गए। विद्वानों का अनुमान है कि गोपाल नायक नामक प्रसिद्ध संगीतज्ञ भी यादव दरबार में ही था। वह भी दिल्ली लाया गया। इधर अला-उद्दीन के दरबार में प्रसिद्ध कवि, विद्वान् और गायक खुसरो पहले से उपस्थित था। दोनों में होड़ हुई। खुसरो और अलाउद्दीन के तिकड़म के कारण गोपाल नायक को पराजित होना पड़ा।

इस होड़ की कहानी यों कही जाती है। जिस समय गोपाल नायक से गाने को कहा गया खुसरो दरबार में उपस्थित न था बल्कि वह अलाउद्दीन के तख्त के नीचे छिपा था और वहीं से गोपाल नायक का संगीत सुन रहा था। दूसरे दिन जब उससे गाने को कहा गया तो गोपाल नायक के संगीत के अनुकरण पर कुछ ईरानी तर्ज़ के साथ उसने ऐसा गाया जिसे सुनकर गोपाल नायक भी दंग रह गया। खुसरो में अनुकरण की अप्रतिम प्रतिभा थी। उसके गायन का फल यह हुआ कि गोपाल नायक अपने उचित सत्कार से भी वंचित रहा।

अलाउद्दीन के दरबारी कवि तथा संगीतज्ञ खुसरो की भारतीय संगीत को झुमरा, आड़ा, चारताल तथा सूलफाक आदि तालों, कव्वाली, तथा तराना आदि गीतों, जिल्फ़, साज़गिरी तथा सरपर्दा आदि रागों एवं सितार और तबला आदि वाद्यों के रूप में अप्रतिम देन है।

ऐसा अनुमान है कि अलाउद्दीन के दरबार में छोटे-बड़े और भी अनेका-नेक संगीतज्ञ रहे होंगे जिनके बारे में हमें कुछ भी पता नहीं है। बैजू बावरा का समय भी यही है। ग्वालियर भी बहुत प्राचीन काल से संगीत का केन्द्र रहा है। ग्वालियर के संगीत घराने को चालू करने वाले ग्वालियर नरेश मानसिंह तँवर (गद्दी पर बैठने का काल १४८६ ई०) थे। ध्रुपद गायन के प्रचलन का श्रेय इन्हीं मानसिंह को है। प्रसिद्ध नायक बक्शू जो संगीत में तानसेन की टक्कर के कहे जाते हैं मानसिंह के पुत्र विक्रमाजीत के दरबारी संगीतज्ञ थे। ग्वालियर घराने के अन्य प्रसिद्ध संगीतज्ञ झुर्जू, भगवान, दल्लू तथा ढोंडी आदि कहे जाते हैं।

संगीत की प्रसिद्ध पुस्तक मान कुतूहल इन्हीं मानसिंह की रचना है।[1] इसमें प्राचीन एवं तत्कालीन संगीत शास्त्र का विवेचन है। दुख है कि आज मूल पुस्तक नहीं मिलती। औरंगज़ेब के काश्मीर सूबेदार फ़क़ीरुल्ला ने १६७१ ई० के आस पास इस पुस्तक का फ़ारसी अनुवाद किया था, जो आज उप-लब्ध है। प्रसन्नता है कि श्री हरिहर निवास द्विवेदी की प्रयत्न से उस अनुवाद का हिंदी अनुवाद अब प्रकाश में आ गया है।

अकबर का दरबार भी संगीत के लिए बड़ा प्रसिद्ध था। अकबर के समय में ही प्रसिद्ध संगीतज्ञ और भक्त हरिदास स्वामी वृन्दावन में रहते थे। यही तानसेन के गुरु थे। तानसेन अकबरी दरबार के श्रेष्ठ गवैये होने के साथ साथ भारतीय संगीतज्ञों में भी अपना अत्यन्त महत्वपूर्ण और कुछ दृष्टियों से अप्रतिम स्थान रखते हैं। इनके बनाए राग दरबारी कान्हड़ा, मियाँ मल्हार तथा मियाँ की सारंग आदि हैं। रबाब नामक बाजे का आविष्कार इन्हीं ने किया था। तानसेन घराने के गवैये सेनिये कहलाते हैं। अकबर के समय के अन्य प्रसिद्ध संगीतज्ञों में पुंडरीक विट्ठल कर्नाटकी का नाम आदर के साथ लिया जाता है। इन्होंने राग माला, राग मंजरी, सद्रागचंद्रोदय तथा नर्तन निर्णय नामक चार ग्रन्थों की रचना की थी। ये खानदेश की राजधानी बुरहान-पुर के राजा बुरहान खाँ के दरबार में रहते थे।

अकबर के ही समय में जौनपुर के सुल्तान हुसेन शर्की ने विलंबित (बड़े) ख्यालों का आविष्कार किया और अमीर खुसरो द्वारा आविष्कृत कव्वाली से द्रुत (छोटे) ख्यालों का चलन हो गया। इस प्रकार ख्याल गायन का आरम्भ भी इसी युग में हुआ।

मुग़ल राजाओं में जहाँगीर और शाहजहाँ भी संगीत प्रेमी थे और

१. कुछ लोगों के अनुसार यह उनकी अपनी रचना नहीं है अपितु उनके दरबार में इसका संकलन हुआ था। उन्होंने संगीतज्ञों से शास्त्रार्थ करवाकर उसी को संगृहीत कराया था।

इनके दरबार में विलास खाँ, छतर खाँ एवं जगन्नाथ, लाल खाँ और ढिरग खाँ आदि संगीतज्ञ थे।

जयपुर की भी अपनी संगीत परंपरा रही है। यहाँ के राजा सवाई प्रताप सिंह (१७७९-१८०१ ई०) का नाम संगीत के क्षेत्र में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। ये स्वयं अच्छे संगीतज्ञ थे और संगीतज्ञों का बहुत आदर करते थे। इन्होंने उत्तरीय संगीत की गड़बड़ियों को दूर करने के लिए संगीतज्ञों का एक सम्मेलन करवाया और उसमें विचार-विनिमय के उपरान्त 'संगीत-सार' ग्रन्थ की रचना कराई।

इनके दरबार में चाँद खाँ नाम के एक अच्छे संगीतज्ञ थे जिन्होंने 'स्वर-सागर' नामक ग्रन्थ की रचना की थी।

जयपुर में प्रताप सिंह के पूर्व माधोसिंह प्रथम (१७५१-१७६७ ई०) तथा पृथ्वी सिंह के दरबार में भी संगीत का अच्छा आदर था। राग-चंद्रिका के लेखक द्वारकानाथ इन्हीं लोगों के दरबार में रहे। जयपुर में लिखे गए संगीत ग्रन्थों में सबसे प्रसिद्ध और बड़ा ग्रन्थ 'राधा गोविंद संगीत सार' है जो सात खण्डों में है।

१८ वीं सदी में मोहम्मद शाह रँगीले अन्तिम मुग़ल बादशाह था। इसे संगीत से पर्याप्त प्रेम था। इसके दरबार के प्रसिद्ध गायक सदारंग और अदारंग थे जिनके ख्याल आज भी गाये जाते हैं। शोरी मियाँ ने टप्पा गीत का प्रचार इसी समय किया।

इस काल में लिखा गया संगीत का प्रमुख ग्रंथ पं० अहोबल का 'संगीत पारिजात' है।

प्रस्तुत पुस्तक का विषय इसी काल तक सीमित है।

अमीर खुसरो

अपना घर भला और आप भली, न किसी के जाइए, न एतना दुख पाइए।
गराज नाक़े दाने तां उफ़ताद ख़ुसरो ग़रक शूद ख़ूब शूद मस्ते चरा बालाए चाहे तो बुग़ ज़रद ॥१॥*

अस्थाई संचाई सुल-नीजा अंतरा अरी बधावा आवो गावो सोहलरा ख़ुसरो लोग बुलावो।
कोठ बा कोठ दीयरे बारूनी जाम दी पीर मिलावो ॥२॥

री मैं धाउं पाउं हजरत ख़्वाज़दीन शकरगंज सुलतान मशायख़ महबूब इलाही ॥
निज़ामदीन औलिया अमीर ख़ुसरो के बल बल जाहीं ॥३॥

हज़रत निज़ामदीन औलिया माई ॥
निसदिन चिराक देहली ख़ुसरो अमीर बलि बलि जाई ॥४॥

हज़रत महबूब इलाही निज़ामदीन औलिया जर जरी ज़रबख़्श।
ख़्वाजा क़ुतुबदीन शेख़ फ़रीद शकरगंज अमीर ख़ुसरो गंजबख़्श ॥५॥

*अगर उनकी आलोचना करने वालों से ख़ुसरो गिर पड़ा और डूब गया तो अच्छा हुआ क्योंकि कोई मस्त किस तरह तेरे कुएं के ऊपर से गुज़र सकता है ?

गोपाल नायक

अत गत मंत्र गंम् मम गंम् मगं मम गम मग ममग अत गत मंत्र गाइया ॥
लै लोक भू में कमल रे हरि को लरे संतो लरे मकरंद अइया उदध चंद धरो
मन में अत गत मंत्र गाइया ॥

तड़तक झुमण जुग लरे ततकाल निरत अपार रे अधार दे धरु गावत
नायक गोपाल रे राजाराम चतुर भये अइया रे अत गत मंत्र गाइया ॥१॥

अरि दल मल रे जोधा नर दल भीम करन समान ॥
तड़तक झुमण जुग लरे ततकाल निरत अपार रे धारु गावत
नायक गोपाल रे ते एया एया आइया आइया आ मानर ॥२॥

कहावे गुनी ज्यों साधे नाद शबद जाल कर थोक गावें ॥
मार्ग देशी कर मूर्छना गुन उपजे मति सिद्ध गुरु साध चावै
सो पंचन मध्र दर पावें ॥
उक्ति जुक्ति भक्ति मुक्ति गुप्त होवै ध्यान लगावें ॥
तब गोपाल नायक के अष्ट सिद्ध नव निद्ध जगत मध्र पावें ॥३॥

कांधे कामरी गो अलाप के नाचे जमुना तीर नाचे जमुना तीर पीछरे पांवरे
लेति नाचि लोई मांगवा ॥
भुज आली मृदंग बांसरी बजावै गोपाल बैन बतरस ले अनंद ले मुरार मलवा ॥४॥

गिरधर गदाधर चक्रधर गोपाल माधव गरुड़पति गरुड़गामी मुकंद
माखन हारी तांगा ॥

ऐं ऐं यातें ऐं ऐं या तीया तीय तीय तीया तीया ईया ॥
जग उधरन जानकी रवन कृष्ण केसी मथन काली नाथन
विस्व पाय भक्तन सुखकारी जीया ॥
सम मगम मगम्मा मपधम्मा ए नाम गीत कूं गाइए सोतो सार है
संसार सागर भनत गोपाल नाम कृना शिव तीया ॥५॥

जय सरस्वती गनेश महादेव शक्ति सूर्य सब देव
देहो मोय विद्या वर कंठ पाठ ।
भैरव मालकोश हिंडाल दीपक श्री मेघ मूर्तिवंत
हृदय रहे ठाठ ।
सप्त स्वर तीन ग्राम अकइस मूर्छना बाइस सुतं
उनचास कोट ताल लाग डाट ।
गोपाल नायक हो सब लायक आहत अनाहत शब्द सों ध्याओ
नाद ईस्वर बसे मो घाट ॥६॥

झुकाय झुमकत झमक गहे कर बार अड़न अझट रे ॥
भुज परचंड औ बलवंड डंड अडं डडं डनखंड आखंड खंड खंडन अटल्ल रे ॥
धार गावत नायक गोपाल कृत ब्रतस ग्राम झुमरो रेते अड़य याउ ऐं ऐं
साइ ताननो याइया इया आ अलल रे ॥७॥

दिल्लीपति नरेन्द्र अकबर साह जाको डर डरे धरती पुहुप माल हलायो ॥
दल साज चतुरंग सैना अगाध जहाँ गुन तहाँ चहूँ विद्याधर
आय आय नाद भेद गायो ॥

गुनी जन जनत केतो को दियो अघाय तुम्र प्रताप सुन धायो ॥
कहत नायक गोपाल तुम चिरंजीव रहो साह देत करोरन आवत
धाय धाय मृग माला पहरायो ॥८॥

प्रथम आदि वोंकार तीन ग्राम चवदे सुर जब पावत गुनी जन कर कर विचार ॥
रोही अवरोही अस्थाई संचाई चारों बानी गुवरहारी खंडारी डागुरी नोहार ॥
उनचास कोट तान अकइस मुरछना उरपति रप बाइस सुरत गावत आकार ॥
भनत गोपाल जानत संगीत पंडित अति रिसाल नेम बृष लेत ठरन मुरन
यह विद्या अपरंपार ॥६॥

प्रथम नाद वोंकार तीन ग्राम सप्त सुर गावत गुणी जन कर विचार ॥
रोही अवरोही अस्थायी संचाई चारों बानी भेद लय सहित उचार ॥
उनचास कोट तान अकइस मुरछान बाइस सुरत गावत आकार ॥
भनत गोपाल नायक अति रिसाल नेम बरस लेत अठारह भार ॥१०॥

लग गुरु समझ धर रे ज्यों कहे ग्रंथन गुरुन प्रमान ॥
जेहि लग तेही गुरु लग गुरु बिंदक अंछर लख सोई उलट धर रे
ज्यों कहे ग्रंथन गुरुन प्रमान ॥
मगन नगन जगन तगन भगन सगन यगन न जान
छंद बंध प्रबंधन संगीत मत गोपाल नायक करत बिनान ॥११॥

हरिदास

आई नार री तूं कौन के रस बस मिस कर ॥
और दिनन में एक ही बार तूं अब जात हो पनिया भरन को
आजहूं केइ बेर आई गई एसे कहा भये हैं नंद के हर ॥
जो तूं सास ननद की कान न करत आपन को लहकर ॥
हरिदास डागर ताहि बरजत तूं अब कहि भइ हैं तूं अति निडर ॥१॥

आज की बानक मोहन तेरी प्यारी बिहारी मो पै बरनी न जाय ॥
इनकी स्यामता उनकी गोरता जैसे मैन बन रही मानों ज्यों भुयंगा धाय ॥
तिहारो पीतांबर उनको नील निचोल ज्यों ससि कुंजन घन बिजली चमकाय ॥
हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी की सोभा निरखत ज्यों मन जोरे कोट
कवि पार न पाय ॥२॥

एसो मोरी बतीयन पर मन ए अरुझे ए रहे एरी बस कहीं कैसी करूं ॥
कहा कहों अंखियन की रीत बस भई स्याम छबि निरखि संग नहीं छबि
फिरत न नहीं करूं ॥
नैन मुंद रही सनमुख धनी मानत नाहीं काहू की हेरी ॥
दास हरि मन वचन कापे कहूं पिय चाह से चितवत ही दरसन भई
प्रीतम में चेरी ॥३॥

एसो लियो नाद गढ़ महातंड रोही अवरोही अस्थाई संचाई महा विकट
निपट अत आगत ॥
छहो राग बुर्ज भए तीसो भार्या के कोट इकइस मुर्छना रंग बाइस सूरत के
कंगुरे तीय के नीके लागत ॥
सप्त स्वर सप्त पौर औडव खाडव के किवाड़ तामें करताल चलत गोला ओला

भयो धुरपद की चारो तुक चतुर दिशा में चुनेती दीनों एसेइ वाको कीनो नयो रंग
जल भरि राखे कंठ गुणी के रिसाल लासे गुन पागत ॥
हरिदास डागुर गुरुन गुरु ज्ञान कहे एसे जैसे लरे भगारे रचपचे अटुट टुट में
रीझ देत हीरा मोती रतन फल लागत ॥४॥

ए हरि मोसो न बिगारन को तोसों न संवारन को मोंहि तोंहि परी होड़ ।
कौन धों जीने कौन धों हारे परी बदि न छोड़ ॥
तुम माया बाजी पसारी बिबिध मोही मन मोको भूल्यो कोड़ ।
कह हरिदास हम जीनें हारे तुम तउ न तोड़ ॥५॥

कबहुँ कबहुँ मन इत उत जात याते कौन है अधिक सुख ।
बहु भांतिन तें घर आनि राखो नाहिं तो पावतो दुख ॥
कोटि काम लावण्य बिहारी तामें मुंहचहा सब सुख लिये
रहत रुख ।
हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी दिन देखत रहों विचित्र मुख ॥६॥

काहू को वश नाहीं तुम्हारी कृपा ते सब होय बिहारी बिहारनि ।
और मिथ्या प्रपंच काहे को भाखिये सो तो है हारनि ॥
जाहि तुम सों हित तासों तुम हित करो सब सुखकारनि ।
हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी प्राणनि के आधारनि ॥७॥

गायो न गोपाल मन लाय के निवारि लाज पायो न प्रसाद साधु मंडलीन
जाय के ।
धायो न धमकि वृंदा विपिन कुंजन में रह्यो न शरण जाय विट्ठलेश राय के ।
नाच्यो न [illegible] देखि [illegible] हू छबीली छबि सिंह पौरि पर्यो नाहीं सीसहू नवाय के ।
कहे हरिदास तोहि लाजहू न आवे जिय जनम गँवायो न कमायो कछु आय के ॥८॥

चन्दन खोर अंग अंग चढ़ाय अबीर लिए पैंडों पैंडों डोलत पनघट
हो आपन मन भाए ॥
बरबस पर धन कंठ लगाए तोहि सुख भए कहा होत है उनके दुख पाये
और न मानत तेरे भाए ॥
कबहूँ तिलक मुद्रा देत कबहूँ बागे बनाए नैनन नेह जनावत बन में गाय चराए ॥
हरिदास डागुर के प्रभु इन तिय नेह जनावत बैन बजाए ॥९॥

ज्ञान मदमाते जे नर निश दिना तिनको कबहूँ न होत खुमारी ॥
सत के प्याला भर भर पीवत रसना स्वाद लेत ध्यान धरत
जाको लागि रहत जिय नारी ॥
मनक रसायन तन करो भाटी पांचो आत्मा अग्नि जारी ॥
हरिदास डागुर के प्रभु ध्यान धरत ही मानो स्वात बूंद डारी ॥१०॥

ज्योंही ज्योंही तुम राखत हो त्योंही त्योंही रहियत है हो हरि ।
और अचर के पाइ धरी सु तो कहो कौन के पैंड भरि ॥
यद्यपि हों अनभायो कियो चाहों कैसे करि सकों जो तुम राखो पकरि ।
हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी पिंजरा के जनावर लों तरफराइ रह्यो
उड़िबे की किते कू करि ॥११॥

तरैया नाद महानद को मुरछना गमक नीर सुरत अगाध तान तरंग ताल तरल
वही अलापन औड़व खाड़व पूरण धार ॥
आरोही अवरोही दोउ कुल पुर अंस न्यास ग्राह ग्रह तान भंवर सरोज वादी
विवादी सिवार ॥
नौका अवाज पर राग रागणी पथिक चढ़त उतारत गुनी जन वार पार ॥
हरिदास डागुर उत्तम नायक धारु धुरपद छंद गुण वल्ली पत पतार संगीत
गीत अधार ॥१२॥

तान तंरग है सप्त सुर रंग जिन लगाम नसुध अलाप ॥
मुरछना गज गाह ताल तरल अदभुत गत हयकल की ले धुरापन ॥
धारु धुरपद काव्य सज जु ताल सवार गज गमक निडेशन ॥
हरिदास डागुर उत्तम नायक जो गुन लहे गरुवाये मन ॥१३॥

देखो इन लोगन की लावनि ॥
बूझत नाहीं हरि चरण कमल कों मिथ्या जनम गंवावनि ॥
जब जमदूत आइ घेरत है करत आपनी भावनि ॥
कहे हरिदास तबहिं चिरंजीवहु कुंजबिहारी चितावनि ॥१४॥

पायो मनोहर स्याम सुन्दर सुरति सुख मानो रली।
नव नेह अति रस रंग बाढ्यो दान दे उठि घर चली ॥
कहत श्री हरिदास नागर कामिनी गुण सागरी।
जिन रसिक श्री हरिराय मोहे अधिक चातुर नागरी ॥१५॥

पीवो श्री भागवत सुधारस ॥
सावधान श्रवण पुट भरि भरि श्री गोपाल बिमल जस ॥
निगम कलपतरु को फल परम मृदुल आनन्द लस ॥
कठिन ज्ञान गुठली नाहिं जामें भरम जाल को निपट नस ॥
अरथ धरम अरु काम मोक्ष पद प्रेम भक्ति कों कनक कस ॥
काम क्रोध मद लोभ गलित भय संत शिरोमणि सर्बस ॥
परम हंस कुल भूषण श्री शुक बदन कमल तें पर्यो खस ॥
कहे हरिदास परम यह सुन्दर जो न पीवें सो महा पस ॥१६॥

प्रभु जी दीन बचन प्रतिपारो ॥
भक्त हेत खंभते प्रकटे नृसिंह रूप जु धारो ॥

जै जैकार भयो त्रिभुवन में हरिनाकुश नग्व उदर बिदारो ।।
हरिदास प्रभु तुम चिरजीवो सब संतन को ताप निवारो ।।१७।।

प्रिया प्रिय के उठबे की छबि बरखी न आइ सबते न्यारे ।
मानो घोस रे निइ कटोरे होवन भये न्यारे ।
बार लटपटे मानो भौंर यूथ लरत परस्पर कमल दलनि पर ग्वंजरीट शोभा न्यारे ।
हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी पर कोटि कोटि अनंग कोटि ब्रह्मांड वारि डारे ।।१८।।

प्यारी आगे चली आगे गहवर वन भीतर जहां बोली कोयल री ।।
अति ही विचित्र पुष्प पत्रन की सोभा रुचिर चौर संवारी तहां तुव सोइल री ।।
घरी घरी पल पल तेरो ही कहानी तुव मग जोइल री ।।
श्री हरिदास के स्वामि श्यामा कुंज बिहारी कामरस मोहल री ।।१९।।

बेनी गुंथ कहा कोउ जाने मेरी सी तेरी सो राधे ।।
बिच बिच संत पितराने सोहत फूल को करि सके निहारी सों राधे ।।
बैठे रसिक संवारन बारन कोमल कर ककई सों राधे ।।
हरिदास के स्वामी स्यामा नखसिख लों गुथन हीं सो राधे ।।२०।।

भर भर धर धर आवत गागर नागर नारि री कौन के रस मिस केरे ।।
और ही दिनन में एक ही बेर जावत पनियां भरन आज केउ बेर आई गई एसे कहां भये नंद के हेरे ।।
जो तूं अब सास ननद की कान करत तो पावै है कुल डरे ।।
हरिदास डागुर प्रभु के कहे ते मेरे नैन प्रान सब गए डरे ।।२१।।

रोम रोम रसना जो होती तउ तोरे गुणन बखाने न जात ।।
कहां कहो एक जीभ सखी री बात की बात बात ।।
भानु अमित और ससीहू अमित भए श्री जुवतिन की जात ।।
हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी कहत प्यारी तूं राख तो प्राण जात ।।२२।।

सुफल जनम तेरा रे मिटे चौरासी का फेरा ।
कर दरसन गिरिधरन राज को सुफल जनम तेरा ।।
पूरब देश में पुरी जो मथुरा गोकुल का नेरा ।
सीतल जल ठकुरानी घाट का जहां वैष्णव का डेरा ।।
सुंदर मंदिर सात सरूप के देवल उंचेरा ।
ध्वजा फहर के नौबत बाजे घड़धी घड़धी सवेरा ।।
नर नारी हिल मिल के आवैं गुण गावैं हरि केरा ।
दरसन पावैं आनन्द आवैं तरे भवसागर बेरा ।।
हरि हरि करता हरे सकल दुख सुख होय अधकेरा ।
कृपा करो हरिदास के ऊपर राखो चरणन नेरा ।।२३।।

सेवा मेवा करत सेवे तेंतीसो कोट महादेव तुव नाम जप तप पार्वतीपत
पतित पावनि पातिगहर तेनु गन कैसे सुमरत ।।
त्रइलोक नाथ शंभु शंकर कर तरसुल धरे तपोभूत त्रपुरारी मानो महेश देश देश के
नरेस को धावत जोइ जोइ मांगत सोइ सोइ पावत है हरिदास डागर होत सुरत ।।२४।।

सोध सों न्हाय बैठी पहिरि पट सुन्दर जहां फुलवारी तहां सुकवति अलके ।।
सोभा कल नख करि केस संवारति मनो उडगन में उडपति झलके ।।
विविध सिंगार लिए आगे ठाढ़ि प्रिय सखि भरि आयो आनन्द रतिपति दलके ।।
हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी छबि निरखत मलके ।।२५।।

हरि के नाम को आलस कत करत है रे काल फिरत सर सांधे ॥
बेर कुबेर न जानत चढ़्यो रहत है कांधे ॥
हीरा बहुत जवाहर सचे कहा भयो हस्ती दर बांधे ॥
कहे हरिदास महल में बनिता बनि ठाढ़ी भई कछु न चलत
जब आवत अंधकी आंधे ॥२६॥

म्हांरी राखो लाज मुरारी जी मोरा मन लागो हरि चरनांमु ॥
जिन चरना कूं कमला सेवे ब्रह्मा आदि गनेस जी ॥
सारद नारद श्री सुखदेवा सेस महेश फनीस जी ॥
सुरपत नरपत गणपत नायक रस पीये रसनामु जी ॥
ध्रुव तारे प्रहलाद उबारे राख लियो जननामु जी ॥
चरन कंवल में चित बिलग्यो है पायो निगम भनामु जी ॥
जन हरिदास परम पद परसे रोम रोम रसनामु जी ॥२७॥

बैंजू बावरा

अचल राज करो कोट बरस लौं चिरंजीव रहो जसुमत तेरो लाल दरस देख

भये निहाल मैं जोगी सुख पायो मेरे जिय आनन्द भयो उर न समात है ॥

जौंलो ध्रुव धरन तारो जीवे तेरो राज दुलारो तौंलो रवि ससि सुमेर गगन पवन

पानि लोमंच की सी आर्बल होय यह असीस दे जात हैं ॥

डिम डिम डमरू बजाए सिंगीनाद कर मुख से गाये महादेवजु [illegible]

अलख की छवि निरख मंद मंद मुसक्यात है ॥

पांच बार फेरी कर कनु श्रवण लाग मंत्र धर बैजूनाथ कैलास के वासी प्रेम मगन

नाचे तांडव [illegible] तकडुथुंगा निरतत अपने मन सुख पात है ॥१॥

अनंत ब्रह्मांड के नायक परब्रह्म श्री श्रीधर महाराज ॥

कृपासिंधु भक्तपाल सुखकरन कृपाल गरिब निवाज ॥

यह बिनती सुन लीजे तेरो अंत नहीं तूं अनंत पूजूं

तोहे बांधू भुज कर जाए दुख भाज ॥

बैजू प्रभु आदि अलख अगोचर निरंजन निराकार

भक्त काज कोटि कोटि रूप धरे संतन सिरताज ॥२॥

आंगन भीर भई ब्रजपति के आज नंद महोत्सव आनंद भयो ।

हरद दूब दधि अच्छत रोरी ले छिरकत परस्पर गावत मंगलचार नयो ॥

ब्रह्मा ईश नारद सुर नर मुनि हरषित विमानन पुष्प बरस रंग टयो ।

धन धन बैजू संतन हित प्रगट नंद जशोदा ए सुख जो दयो ॥३॥

आज सखि लखि मनमोहनी मूरत माधुरी सुंदर चतुर सुजान कान्ह ॥

सीस मुकुट श्रवण कुंडल घुंघुरवारी अलक झलक चलत चाल ठुनक ठुनक

अधरन मुरली बजाई तान ॥

भूली सुध बुध सब गृह काज डार दियो बिसरि गयो खान पान
लखि मनमोहन चतुर सुजान ॥
बैजू बावरी रावरी कर डारी मोहे न सोहात आन त्याग दई कुल कान ॥४॥

आज सपने में सांवरी सलोनी सूरत देखि सैनन करि मोंसो बात ॥
तबतें मैं बहुत सुख पायो जागत भई परभात ॥
मधुर बचन बोल मदन मंत्र पढ़ डारी उन बिन छिन पल कछु न सोहात ॥
बैजू की ब्रज की नारी जंत्र तंत्र खिखि सारी कल न परत गात सब दिन रात ॥५॥

आजु रच्यो करतार दोउ जग होय प्रगट्यो उत श्री कमलापति
इत श्री नंद जी के नंदन ॥
उन सुरन सुख करन इत भक्तन दुख हरन निरगुण सरगुण
दोउ सरूप एक ही चंदन ॥
उन विष्णु बैकुंठ नाथ इत कृष्ण ब्रज के नाथ मोहनी मोहे ईश
इत मोहनी गोपी ईश गज द्रोपदी काटे कष्ट फंदन ॥
उन गदा पद्मधर इत मुरली मुकुटधर बैजू प्रभु को ध्यान धरो
जनम मरण जाय सब दंदन ॥६॥

आदि परब्रह्म देवनारायण निरंजन निरंकार सोइ साकार ॥
वाही ते त्रइलोक रचना रज सत तम पंच भूत वाही ते
अठाइस तत्व जगत पसार ॥
वही आदि वही अंत वही चराचर मधु भर पूर रहो संसार ॥
बैजू प्रभु करे सो होय करता अकरता सकल कोट कोट ब्रह्मांड
एक एक रोम प्रति ताहि भजो बारबार ॥७॥

आदेश कर गुरु कों जो गुरुन के गुरु कों ब्रह्म
गुरु कों तासों सप्त सुर तीन ग्राम आवे सुर भर कों ।

इकइस मुरछना उनचास कोटि तान अस्थाई
संचाई अलंकार बैजू प्रभु के चरण धर को ॥८॥

ए आज आयो आयो सुरजवंश छत्रपत राजाराम लंका नगर जीत
मन इंछा फल पायो आनंद भयो ।
आनंद भयो मेरे आली जीवन जनम सुफल हुवो चित चायो ॥
कोउ सुकृत मेरो उदै प्रगट्यो प्राप्त चार फल धर्मार्थ काम मोक्ष
निज चरन शरण दासन दास कहवायो ॥
अनेक पतित उधारे रघुबर गीध ब्याध गज गनिका गौतम नार
खेचर भूचर निशिचर अजामेल बैकुंठ पठायो ॥
जाको रटत शिव ब्रह्मादिक सनक सनंदन सनातन सनतकुमार
बैजू बावरे के प्रभु कूं नारद तुंबर गुणी गंधर्व हाहा हूहू गायो ॥९॥

ए आयो आयो मेरे गृह नंद को नंदन मन इंछा फल पायो ॥
कहा कहौं मेरे भाग की महिमा अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदारथ पायो ॥
अनेक पतित उधारे गिरिधर भक्तन के मन भायो ॥
बैजू बावरे रावरे कहावत चरन कमल चित लायो ॥१०॥

एजु नाद दरियाव तापै तन जहाज कीनें उमड़ि फिर लागे री चोंप डरन ॥
सुर के बरदवान कीने अचरा के बैन तापै गुणी लागे तान तरन ॥
गीत संगीत जुगल बंध त्रेवट ताके लागे भार भरन ॥
कहत आधीन प्रबीन सागर समुद्र उतरे पार बैजू लागे चरन ॥११॥

ए बंसी नाद सुर साध के बजाई प्रवीन कान्ह सप्त स्वर तान मधुरे धुनि ॥
श्रवण सुनत कछु सुध न रही आली भनक परी मेरे कान सुनि सुनि ॥
तन मन रोम रोम व्याकुल भइरी जीत लिए गंधर्व नारद मुनि गुनि ॥
बैजू के प्रभु नर नारी पशु पंछी मोहे और मोहे सुर नर मुनि ॥१२॥

ए ब्रह्म तेरे ही ग्यान ध्यान सुमरन रहत जप तप संजम भक्ति बैहार ॥
तूंही तन तूंही मन तूंही रोम में रम रहो तूहीं सब जग करतार ॥
तूंही आदि तूंही मध्य तूंही अंत तूंही तंत तूंही साधु तूंही संत ॥
तूंही सर्व व्याप रहो संसार ॥
तूंही रज तूंही तामस तूंही भक्तन कही अनेक होत भर रहो
निरंजन निराकार बैजू तूंही सार ॥१३॥

एरी अब आनंद भयो री ब्रज में श्रीकृष्ण जनम लियो आज ॥
शुभ घरी शुभ दिन महूरत प्रगट भये ब्रजराज ॥
ब्रह्मा वेद पढ़त महादेव दर्शन आए नाचत गोपी ग्वार
नारद बीन बजाए स्वर साज ॥
बैजू नंद महोछव देख मगन भए पूजे मन इंछा सुर नर मुनि काज ॥१४॥ ✓

एसे बहुत चले नए नए हुनर तिन छिन सीखत रहत ही विद्याधर ॥
बैजू कहे बात जिय नाहीं समझत को धनवंत भयो धरन पर ॥१५॥

एहो ज्ञान रंगे ध्यान रंगे मन रंगे सब अंगन रंगे ॥
प्रथम राम कृष्ण रंगे रहीम करीम रंगे घट घट ब्रह्म रंगे
रोम रोम मन रंगे हरि संग रंग रंगे ॥
जप रंगे तप रंगे तीरथ ब्रत नेम रंगे सर्वमयी अंग अंग रंगे ॥
जीव जन्तु पन्नग पशु एक ईश्वर रंग रंगे सुर नर मुनि संग रंगे
बैजू प्रभु कृष्ण रंग रंगे ॥१६॥

कर पै गुलफ धरे तिय दुचित अनमनी कर के सिंगार बिरहन ह्वै बैठी री ॥
पिय पिय रट लागी मग जोहत मोहत रंग उमंग भरी आलस अंग अंग
मरोरत ह्वै के एंठी री ॥

नख सिख लों आभूषन भूषन जगमग रह्यो पिय आवन की उछाह नाहिन पल
नेक लेटी री ॥
बैजू प्रभु मनमानी आय गए वाहि छिन धन धन भाग सुहाग नार
अंग अंग भेंटी री ॥१६॥

कहा कहूं उन बिन मन जरो जात है अंगन बरनें कर मन कियो है बिगार ॥
वह मूरत सूरत बिन देखे भावें न मोहें घर द्वार ॥
इत उत देखत कछु न सोहावन बिरथा लगत संसार ॥
बैर करत हैं दुरजन सब बैजू न भावे मन पिय के अचरज भयो है ब्यौहार ॥१७॥

कहा तुम गावत हो गायन नाद विद्या अति अपरंपार ॥
गीत प्रबंध चारु धुरपद को कहो कौन प्रमान केते गुणी रच पच हार ॥
सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मुरछना बाइस सुरत उनचास कोट
तान की कसौटी कल्यान को संभार ॥
कहत बैजू बावरे ताकी दुरन सुरन रोही अवरोही अलाप अस्थाइ संचाइ
प्रथम वोंकार ॥१८॥

काहे कूं भटकत फिरत रे मन जपो हरि नाम जासों काम ॥
तीरथ ब्रत नेम धर्म षट कर्म तज भए एक नाम ॥
कलिकाल और नाहीं एक रह्यो हरि ब्योहार वही जप वही तप वही है धाम ॥
कहे बैजू बावरे सुन हो गुनी जन सांचो संसार मध एक ही है राम ॥१९॥

काहे को गरब करत गुणी कहायो रे ।
गीत छंद धोवा माठा नीके गाय सुनायो रे ॥
गीत संगीत जुगल बंध एते राग काहे को गायो रे ।
कहे बैजू बावरे सुन हो गोपाल नायक अकारन जनम गंवायो रे ॥२०॥

कुंजन मध रच्यो रास अद्‌भुत गत लिए गोपाल
कुंडल की झलक देख कोटि मदन ठठक्यो ।
अधर तो सुरंग रंग बाँसरी सुहाय संग
टेढ़ी छवि देख मेरो मन अटक्यो ॥
एरी अब देखो जाय ऐसे सो कहा बसाय
अलकन की गत निरख शेषनाग सटक्यो ।
निरतत संगीत री तत तत थेई तत तत थेई
त्रिभंगी अंगी रंगी चाल देख इंद्र धनुष पटक्यो ॥
रुनक झुनक नूपुर ठुनक रुन झुन रुन
झनन ननन सनन ननन बंसी बाजे मंद मुख सों मटक्यो ।
रति विलास सुख की रास भनत बैजू गोपाल
यह स्वरूप दरस परस वृंदावन को सटक्यो ॥२१॥ ✓

चंद भाल सीस गंग गोरी अरधंग ललाट भस्म मुंडमाल कर पिनाक रैया ॥
महादेव महाजनी अमरामन रैया त्रिलोचन नीलकंठ अंधक रिपु रैया ॥
शंकर शंभु त्रिपुरारि डिमरु डिमडिम बजैया ॥
नाचत तांडव कैलाशपत रीझत विष्णु रिझैया ॥
बैजू नायक संगीत निरतत देवपति रैया तिएं ऐया ऐया ऐया
आयो आयो आयो ऐया ॥२२॥

जय सरस्वती गंगा गणेश ब्रह्मा विष्णु महेश शक्ति सूरज सर्व देव ध्यावैं ॥
सप्त स्वर तीन ग्राम इक्कीस मुर्छना उनचास कोट तान देही आवैं ॥
उत्पति रूप कला डाट राग रागणी पुत्रवधू सहित कंठ समावैं ॥
कहे बैजू बावरे सब देव दया करो राग रंग तान ताल लय अच्छर गावैं ॥२३॥

जहां लगि लगन लागन सो तहां लगि चित ललचाउं ॥
कौन मंत्र मोहन पढ़ डारो अपने हरि बस कर पाउं ॥

हा हा करों हरि को कैसे देखौं सांवरी सूरत हृदै ल्याउं ॥
बैजू बावरे रावरी कृपा तें तन मन धन वार बलि बलि जाउं ॥२४॥

जाको बैजंनी माला ताके मृगछाला जाके मुरली अधर डंवरू ताके कर रे ॥
जाके जटा जूट गंग त्रिशूल ताके शंख चक्र गदा पद्म रूंड मुंडमाला
जाके पीतांबर पट रे ॥
वृषभ वाहन ताके गौरी अरधंग गरुड़गामी गोपीनाथ हरिहर रट रे ॥
बैजू प्रभु हरिहर निश दिन ध्यान धर छाड़ दे जग को सब खटपट रे ॥२५॥

जागत भैरो जोती स्वरूप किरन तें प्रगट्यो तिमिर घट्यो शशि भयो मंद ॥
दिनकर दिन लायो सबके प्रफुलन कों बढ़ बढ़ कियो अनंद ॥
जग चछु जोति प्रकास प्रतच्छ देव जगदंद ॥
बैजू बावरे रावरे कहावत काटो जनम मरन के फंद ॥२६॥

जै काली कल्याणी खप्पधारणी गिरजा घनस्यामा चंडी चामुंडा छत्रधारिणी ॥
जग जननी ज्वालामुखी आदि जोत अनंता देवी अन्नपूर्णा आनन्दी तरन तारिणी ॥
जोगिणी जय रक्षा करनी त्रिपुरसुन्दरी ललिता बहुचरा भवानी असुरदलनी
महिषासुर मारणी ॥
हिम गिरि हिंगलाज रानी कास्मीरी सारदा कामरु कमच्छा तुलजा
बैजू भक्त मुक्त कारिणी ॥२७॥

जै माधव मुकुंद मुरार मधुसूदन मदनमोहन मन रंजन मन भावन ॥
जगतपति जगनाथ जगजीवन जगवंदन जगपावन जग प्रगटावन ॥
कृष्ण केशव करुनानाथ कंसारि कंस काल काली नाग नाथन काम जलावन ॥
बैकुंठनाथ बिहारी बद्री बामन बिष्णु वल्लभ बराह बिठ्ठल
बैजू बावरे प्राण जीयावन ॥२८॥

जोगी जती सती संन्यासी अवधूत जोग अडंबर भावै तुझ भेख धरे ।।
जप तप तैं संजम जम कत दुख हरे करत सब दुख हरे ।।
मन सुमरन ज्ञान ध्यान चित न हरि हरि केर कहे बैजू बावरे
रसना रटत नाम जातें पाप सबही टरे ।।२१।।

जोबन गर्ब सखि जिन कीजे रह्यो न काहू पै और न रहेगो ।।
रावण कुंभकरण हिरणांकशु बड़े बड़े छत्रपति सूर ढयेगो ।।
मधुर रसना से पिय संग बोल ले आगे पाछे कोई न कहेगो ।।
बैजू के साधे सप्त सुर बाजे पीगरे पथर मांझ ताल ढयेगो ।।२०।।

तान गजराज ज्ञान कीनो महावत त्रे वट घंटा बांध ताल अंकुस भर ।।
खरज पाखण्ड री तीन ग्राम सकल अधार धुरन मुरन रन सों जीत
मारत सब एक एक पर ।।
गीत नाद की असावरी धुरपत्त परबंध तुपक त्रे वट तिलाणा चतुरंग
प्यारे सोहत भूपर ।।
कहे बैजू नायक उक्त जुक्त की बुध वजीर मन राजा राज करत
हरि को ध्यान धर ।।२१।।

तार सुर के भेद गुनी जन की संगति रहै तो कछु पावै ।।
सीखत सुनत रहे सदा ही बरनी मुरनि मुद्रा प्रमान सो आवै ।।
आपुही गावैं आपुही बजावैं तान गीतन के ब्यौरे समझावै ।।
बैजू के प्रभु रस बस कर लीने तबहीं रीझ रिझावैं ।।३२।।

तीन भिखारी भानुजा की [illegible] [illegible] चन्द्रमा बीचें री जाकी चांदनी बीचे री ।।
[illegible] बीचें री जाकी राधिका बीचें री जनकसुता आधीन भई तेरी ।।
इन्द्रप री पग धो धो पीवें बिजरी सें उजरी कनोडी भई रहे री ।।
कहे बैजू बावरे सुनो हो गोपाल लाल ऐसी त्रिया कौन सी
जोविधना संवारी ।।२३ =

तूं आदि भवानी जग जानी सर्बानी सबैं कला दे विद्या बरदानी ॥
अंबे जगदंबे असुर संघारनी तरन तारनी तान ताल
शुद्ध राग रंग अच्छर दे बानी ॥
सप्त स्वर तीन ग्राम इकइस मुरछना उनचास कोट तान
तिनके लच्छन मोरे जीय में आनी ॥
बैजू बावरो रावरो सेवक यह मांगे नाद विद्या सूरनमान राग
मेरे गरे में समानी ॥२४॥

तेरे मन में केतो गुण रे जेतो होय तेतो प्रकास कर रे ॥
कहूं तोसे बार बार मूरख मन रे जोई सुर आवे सोई र र रे ।
गांधार को धैवत पंचम को रिषभ स्वरज को भर रे ॥
कहे बैजू बावरे सुन हो गोपाल नायक नाद विद्या अथाह काहूसों न अर रे ॥२५॥

तेरे मन में केतो गुण रे जेतो होय तेतो प्रकास कर रे ॥
हम जाने तुम सुरे पुरे सोई सुर आवे सोई भर रे ॥
पाहन पिगरावे हिरण बुलावे ज्यों बरसे मेह सरसुती वर रे ॥
कहे बैजू बावरे सुन हो गोपाल नायक अरहु न कर रे धाय
गुनीयन के पायन पर रे ॥२६॥

तोसों लागी रहे पिय सुंदर मन चल चल चतुर उठ नारी ॥
मान गुमान करति जोबन को गर्ब तोंहि वहीं आ वहां चल तूं आभूपन संवारी ॥
तोरी न मानी बात वेतो कहूं जात जानत हो लछन सब पहिचान
उत पर नारिन सों परम सुख पायउ कठिन होत दूती गंवारी ॥
इत गुरु जन की लाजबे आतुर ब्रजराज बैजू के प्रभु सों मिलोगी
तबहीं सब सौतन के मन मारी ॥२७॥

त्रस्ना कों तजि देहु छमा को भजन करहु मद को जीत लेहु नित दया हिय में
धारि पाप सों राखो दूर चित सत्य बचन मुख बोल साधु पदवी जीय धारो ।

सत पुरुषन के सेवन करो नम्रता अति बिस्तारो सर्व गुण सों आप गुप्त
विद्वज्जनन की सेवा करो यामें होवै निस्तारो ॥
मान अपमान त्यागो काम क्रोध दुरजन तें भागो ज्ञान ध्यान अनुरागो
हरि नाम उचारो ॥
कोमल बचन मुख भाखो एक ब्रह्म सब जग राखो बैजू प्रभु को घरी पल छिन
निश दिन रटना रटो तातें होय जग उधारो ॥३८॥

दशहरा मुबारक होय तुम कूं संतत संपत और सहित समझाउं ॥
गीत गाय गाय आनंद बधाए राजाराम रहस रहस कर गाउं ॥
लंका जीत राम घर आए सीता मंगल मिल सखि सोहेला सुनाउं ॥
बैजू प्रभु घर आज बधावा भक्ति दान वर पाउं ॥३९॥

दीनों करतार तुम्हें राज साज की सकल सोभा एसी नाह और कोउ जानी ॥
साहब सुजान समझ तान की राखत हो तुम्ह गुनी आय गावत
ए नीकी सुध बानी ॥
जानत है नीके भाग आपन बैजू रहत है रीझ जगत में तुमारी अमीर राव रानी ॥
देत हो दान सनमान दुख दारिद्र विड़यन हमरे कारन कियो तुमहूं कों
अब साहिब फिरा नसानी ॥४०॥

धायो रे सज कर दल रामचंद्र लंका नगर ॥
सप्त उदधि ग्रसित सेस कमठ कलमलानो महि डगमग
उठत धूर गगन थकित छिपत दिनकर ॥
अरिन दर दरेर चढ़ो महाबली पैलो मुरो पुरो अडं डडं डन अखंड खंडन नरवर ॥
बैजू प्रभु चले जीत कनकपुरी घर घर निशान नौबत बाजत आयो है
रघुबंस भूषन वर ॥४१॥

नाद पार किनहूं न पायो रचपच नर जनम गंवायो ॥
गगन बंद पवन मंद सप्त सुरन छायो पट रे दीपक गायो ॥
काहे को दीवरो काहे की बाती रूपे के दीवरो सोने की बाती
एकइस मुरछना जोत देखायो ॥
आरोही अवरोही बाइस सुरन प्रकास नायक बैजू दीपक गायो ॥४२॥

नाद ब्रह्म अपरंपार किनहूं न पायो पार सीखत पंडित कहायो गीत संगीत
गुनी जन मर जीया हूं न गलायो ॥
सात सप्तक गुप्त प्रगट तीन सप्तक गोपाल गायो ब्रह्मा बेद उचरायो
सारंग बैरायो मोतिन माल पहरायो ॥
गरब धर पार चलो बार उलट ठहरायो देश देश के गुनी सकल सृष्टि महामुनी
तेउ रचपच गायो भेद नहीं पायो ॥
तिनही लुकायो मृग बोलायो गर को हार गोपाल ही दिखायो ॥४३॥

नाद ब्रह्म को अगाध ब्योरो जानत गुनी जन बखानत याको
कोउ न पार पाइया ॥
सप्त सुर तीन ग्राम अकइस मुरछना उरपति रप लाग डाट
राग छतीसों नियाइया आइ आइया ।
रोही अवरोही बाइस सुरन उनचास कोट तान के बिधि गाइया ॥
कहै नायक बैजू मृदंग भेद ताल ध्याय संगीत मत कहे तियाइया पै गैया ॥४४॥

नाद समुद्र पार नहीं पायो सीखत पंडित कहायो धार धुरपद
धोवा माठा जुगन लों गायो ॥
प्रथम नाद बेद भयो ब्रह्मा बेद उचरायो सारद नारद तुंबर
गंधर्व हा हा हू हू गायो ॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र चायो हनुमन मत भरत भायो सुर नर मुनि रच पचायो
शिव सनकादिक गायो ॥

कहै बैजू बावरे सुनो हो गोपाल लाल सारंग बौरायो पत्थर मध
डूबे ताल पाहन पीगलायो ॥४५॥

नाम में रूप नाम में विद्या नाम में जप तप संजम रंजन ॥
नाम में ज्ञान ध्यान नाम में सुमरन नाम तिहारो दुख भंजन ॥
नामहीं तें जल पाखान तारे नाम ही प्रहलाद दुख गए दंदन ॥
नाम ही अजामेल बैकुंठ सिधारे बैजू नाम पवित्र मज्जन ॥४६॥

नित लीजिय नाम बनवारी स्याम हरि भक्त पूरन काम कृष्ण बिष्णु जगतारन ॥
जग निस्तारन जन प्रतिपालन कंसासुर मारन संत उधारन
भुवन के भार उतारन ॥
मछ कछ बराह नरहर वामन परसराम राम हलधर नारायण बुध कलंकी
नाना बिध बपु धारन ॥
बैजू के प्रभु एकनी अनेक होय बहु रूप बहु भेग धरे अपने सेवक के
जनम मरण निवारन ॥४७॥

निरंजन निरंकार परब्रह्म परमेस्वर एक ही अनेक होन ब्याप्यो विश्वंभर ॥
अलख जोत अबिनाशी जोती रूप जगतारन जगन्नाथ जगतपति
जगजीवन जगधर ॥
वाही में सब जीव जंतु सुर नर मुनि गुनि ज्ञानि नाभि कमल तें
ब्रह्मा प्रगटायो औ सतरूपा मन्वन्तर ॥
कहे बैजू वही ब्रह्म वही विराट रूप वही आप अवतार भए चौबीस बपुधर ॥४८॥

नैनन कों नहिं परत हैं कल कमलनयन बिन देखे जादोनाथ ब्रजराज ॥
कालिंदी के नीर भारी भई भीर बलबीर बासदेव बनवारी के कारन
तज दई लोक लाज ॥

बैजू बावरा

व्याकुल मलिन बदन सदन की न सुधि रही बुधि हर लीनी
कीनी बावरी सी सरी न एको काज ।।
काहे को देर करी हरि मेरी बेर बैजू को बेगि मिलो प्रभु मनमोहन माधो
सुख निधान सिरताज ।।४१।। ५

पंच दस साधो गुनि चतुरदिस दरिया ।।
द्वादस बिन घन विचित्र पिंग के गरजे सप्त ध्याय तिरीया ।।
सप्त स्वर तीन ग्राम अकइस मुरछना बाइस सुरत स्वरीया ।।
उरपति रप लाग डाट अति अनाघात घिरीया ।।
आतक खातक स्वरांतक ओडव खाडव संपूर्ण बैजू करीया ।।
उरपति रप लाग डाट अति अनाघात घिरीया ।।२०।।

पंछिनि मनि गरुड़ गजन मनि एरावत दिनन मनि दिवाकर ।।
गीतन मनि संगीत बनन मनि बृन्दावन तरु मनि कल्पतरु ।।
नरन मनि नारायण तारन मन ध्रुव तीरथ मनि गंगा देवन मनि संकर ।।
नारिन मनि उरवसी पुष्पन मनि कमल दास बैजू मनि मुख मुरलीधर ।।२१।।

प्रजापति द्विजपति आदिदेवपते जगतपति ब्रह्मा ।।
सावित्रीपति चारु निगमपति हंसवाहनपति ब्रह्मा ।।
षट्दर्शनपति भृगुपति कहिएत चतुराननपति चतुर करमा ।।
करि उक्त जुक्त जाचक जन बैजू नित उठ करे परकरमा ।।२२।।

प्रथम आदि शिव शक्ति नाद परमेश्वर नारद तुंबर सरस्वती फणपति रे ।
अनाहत आदि नाद गुण सागर स्वरूप ब्रह्मा बिष्णु महेस लछमन रे ।।
आदि धरणी शेष आदि चंद्र सूर्य आदि पवन पानी आदि अनगन रे ।
आदि बैजू के प्रभु कर गुरु प्रसाद सुध बुध मत गुन गन रे ।।२३।।

प्रथम ॐ कार टेरो ब्रह्म चतुरानन जाकों अच्छर सब रंग भरपूर रह्यो
वानी तारन तरन ।।
अलख अपार अगम निगम रहत करत राग रंग उर धार धरन ।।
गुन गुनरहित सरगुण निरगुन सब जग अधारन ।।
बैजू प्रभु आदि जोत निरंजन निराकार सूक्ष्म बिराट रूप घट घट
व्याप रही नारी नरन ।।९४।।

प्रथम उठ प्रात ही हरि हरि हरि हरि हर रे मन मेरे याते होवै सुफल अष्ट जाम ।।
यह लोक परलोक के स्वामी वैकुंठ होवे विश्राम ।।
दीन दयाल कृपाल भक्तवत्सल भक्त जनन अभिराम ।।
बैजू बावरा रावरा कहाय के अब काहे कूं भटकत चौरासी लच्छ धाम धाम ।।९५।।

प्रथम नाद मूल तें उचरे ताल बंधान सो गावै ।।
सत सुर तीन ग्राम इकइस मुर्छना बाइस सुरत उनचास कोट तान लावै ।।
अंस ग्रह न्यास विकल द्वादश भेद सों भरत संगीत हनुमत जतावै ।।
कहे बैजू बावरे सुन हो गोपाल नायक ऐसी बिद्या सो को लरे पाहन पिगलावै ।।९६।।

प्रथम नाद मूल तें उचरे ताल बंधान सो गावै जो आवै सो परे ।
सप्त स्वर तीन ग्राम इकइस मुर्छना बाइस सुरत उनचास कोट तान सम भरे ।।
उरपति रर लाग डाट अंस न्यास ग्रह आतक खातक स्वरांतक
ओडव खाडव उचरे ।।
कहे बैजू बावरे सुनो हो गोपाल यह विद्या अपरंपार गुण चरचा सों लरे ।।९७।।

प्रथम नाम गणेश को लीजिए जा सुमरे होए सिद्धि काम ।
जय गिरिजानंदन जगवंदन लंबोदर तोहि जपत आवे रिद्धि सिद्धि होय सुखधाम ।।
अष्ट सिद्धि नव निद्धि पाये सुख विश्राम ।
कहे बैजू बावरो निश दिन सुमिरो नाद विद्या प्राप्त होय लिए नाम ।।९८।।

प्रथम नाम लीजिए प्रात ही हरि हरि हरि हरि हरि हरि निशि दिन घरि घरि
पल पल अष्टजाम ॥
जशोदा नंद आनंदकंद मधुसूदन बालमुकुंद भक्तबछल जन विश्राम ॥
दामोदर दयासिंधु भक्तबत्सल भगवान बैकुंठपति बृन्दावन धाम ॥
बनवारी बैजू प्रभु बद्रीनाथ बिठल बिष्णु बामन ब्रज विश्राम ॥२१॥

प्रथम भैरवनी के बस प्यारे भए रवि के उदै आए राम किरिया खात ॥
बिभस भए देखियत गात उदै सकार कौन तिय ललित बचन बोलत हो तुतरात ॥
बेला बेर बीत गई आली आस पूज गई देव गरीब निवाज काको भो संगम
खटपट भई रात ॥
दे सीख सुघर तीय सु आ वस्त्र पहर खड़ी सुघराई जानि परात ॥
हम असावरी सारी रैनन तुम देव गंधारी गावत गुजरी सुन बीतो परभात ॥
तोड़ी हमसों प्रीत जौनपुर बसत हैं नवल तीय सी देख उने जाय लाचार हो
बहादुर हैं रात ॥
जंगल जंगल ढूँढ़त हारी झिम्झवट जिन करो मेरे प्यारे आस जोत बिहात ॥
सारंगनैनी पास जावो मधु माधवी बर हंसनी सामंत प्यारे बृन्दावन
मध इहां लंक दहात ॥
धन धन श्री मूल तान मंत्र पढ़ डाल्यो अभी में पलक छिन निरखत तुमको पूरी या
बड़ भाग गात ॥
जै श्री वाको पूरब पूरे पुन्य फल जाको पूरवा लखात ॥
भाग वाने दई है काम की श्री महराज गोरी गोरा टकरात ॥
एमन होत कल्याण को चाहत भूपाल बड़े हमीर पूरो
रात को सो दीयन कर छाया पग डगमगात ॥
एंड़ात जंभात वही नायक हो जु कांन्हर बागे केदरी कंठमाल
कौस्तुभ मणि गहना बोल सुहात ॥
वाके दरबार में गए बहार करन हिंडोरे पांच में बसत हो भंवर नाम कहात ॥

बिहागत भई मेरी खंभा पकर ठाढ़ि रहत बरज्यो दुख बीती मेरी कासे कहूँ बात ॥
सो रटना लागी स्याम मेरी जो जो बतियां करार कर गए सोहनी मोहनी
कर घात ॥
मोहिं अहीरी जान गोकुल ग्वालिन चाल चलत चलत छांद कहि जात ॥
कपोल कहां पीक लागी जानिहैं जु जानि दीपक चंद प्रकास भए लीलांबर
ओढ़ आए कालि गए अवधि दे रात ॥
ए घनस्याम मौला नटवर नर है वाही के गोड़े पग धरात ॥
बांके श्री बिहारी लहर लोभ पहाड़ पै कंकन गड़ात खंडिता नायिका की बात ॥
बैजू [illegible] तिल तिलक सिर मांझ देखात ॥६०॥

प्यारे तूंहीं ब्रह्म तूंहीं विष्णु तूंही रुद्र तूंही शिव शक्ति तूंहीं सूर्यं तूंहीं गणेश ॥
जल थल पवन पानि तूंही तेज तूंही आकाश तूंही अग्नि तूंही
जोत तूंही सुरेश ॥
तूंही उंच तूंही नीच तूंही है सबहींन के बीच तूंही चंद तूंही दिनेश ॥
तूंही एक तूंही अनेक गुरु चेला तूंही अलेख बैजू बावरो तोही सुमिरत
तोंहि तें कटत कलेश ॥६१॥

प्यारे बिन भर आए दोउ नैन ॥
अबतें स्याम गवन कीनों गोकुल तें नाहिं परत री चैन ॥
लगे न भूख प्यास न निद्रा मुख आवत नहिं बैन ॥
बैजू प्रभु कोई आन मिलावै वाकी बलिहार चरन रैन ॥६२॥

बंसीधर पिनाकधर गिरिवरधर गंगाधर चन्द्रमा लीलाधर हो हो हरिहर ॥
सुधाधर विषधर धरनीधर शेषधर चक्रधर त्रिशूलधर नरहरि शिवशंकर ॥
रमाधर उमाधर मुकुटधर जटाधर भस्मधर कुंकुमधर पीतांबरधर व्याघ्रांबरधर ॥
नंदीधर गरुड़धर कैलासधर बैकुंठधर कहै बैजू बावरे सुनहु गुनीजन निशदिन
हरिहर ध्यान उर धर रे ॥६३॥

बरनन को करि सकत हरि के गुणानुवाद शेष सहस्त्र सुक पावत नाहीं पार ॥
सनक सनंदन सनातन सनतकुमार ब्रह्मा शिव व्यास सारद नारद हा हा हू हू
गंधर्ब गावत नित नित नाम सार ॥
सुर नर मुनि सब रच गए पच गए वाको मरम भेद कोउ न जानत अपरंपार ॥
बैजू बावरे प्रभु भक्तबछल हैं सब जग के करतार ॥६४॥

बावरे के संग साथ बावरी सी भई मैं बापहू बिब्राह दीनी बावरो सो जान के ॥
जानिहू न जात कौन गुरु कौन नाथ लीलाधारी लीनो भेष सर्प विष
लपटान के ॥
त्रिशूल खपर हात नैनां जो अवात जात आडंबर बाघबर सिंगी पुरी आन के ॥
बैजू बावरे कापै कीजे रोष अपने करम दोष जीवै मेरा भोलानाथ
भाल मैं जो लीनों मान के ॥६५॥

बोलियो न डोलियो ले आउं हूँ प्यारी को सुन हो सुघर वर अबहीं मैं जाउं हूँ ॥
मानिनी मनाय के तिहारे पास ल्याय के मधुर बुलाय के तो चरण गहाउं हूँ ॥
सुन री सुंदर नार काहे करत एती रार मदन डारत मार चलत पत बुझाउं हूँ ॥
मेरी सीख मान कर मान न करो तुम एसे बैजू प्रभु प्यारे सों बहियां गहाउं हूँ ॥६६॥

मन में जोति प्रकास बारले दीयरा रे सारंग ।
अनाहत आदि नाद बेदांग गुणकार संगीत साधंग ॥
आदि नाम कुमार रे सत संगत सों नारद तुंवर सरस्वती साधंग ।
भनत बैजू बावरे नायक गोपाल लाल सब गुणियन में असाधंग ॥६७॥

मुरली बजाय रिझाय लई मुख मोहन नें गोपी रीझि रही
रस तानन सों सुध बुध सब बिसराई ।
धुन सुन मन मोहे मगन भई देखत हरि आनन ॥

जीव जंतु पशु पंछी सुर नर मुनि मोह लिए सब प्रानन ॥
बैजू बनवारी मुरली अधर धारी वृन्दावनचंद बस किए सुनत ही कानन ॥६८॥

मेरे तो कृष्ण नाम अधार जिन रच्यो जग पसार लोभ तृस्ना
काम क्रोध तजो जंजार ॥
जिन रच्यो आदि अंत भुव अकास त्रइलोक निरंजन साकार
निश्चय कर जपो श्री हरि मुरार ॥
जुग जुग भक्त हेत अवतार लेत हैं भक्तन प्रान अधार ॥
बैजू बावरे प्रभु को चरन सरन गहिए मनुष जनम नहीं बारबार ॥६९॥

मेरे नहीं आए हो नंद लला जाओ क्यों न तिनके गृह जिनके रस बस भए
रहे सुख वाही रैन जागे ॥
धन धन भाग सुहागनि सरस सुंदर तिया रंग अंग आभूषण रंग देखि
ब्रज भूप प्रेम पागे ॥
तुमहो गोपाल जु बाल जात अहीर बेपीर पर नारिन सों हित चित री
तुमरे नैना लागे ॥
बैजू प्रभु निडर ढीठ लंगर डगर डगर घर घर फिरत छैल लागे जावक चिन्ह
रस चाखे मदन तें सुख सदन देखो बदन ढिले बागे ॥७०॥

मोहन जागो मनोहर मधुसूदन मदनमोहन मुरारी माधो मुकुंद मन भावन ॥
जागो जागो जान राय [illegible] [illegible] जादोनाथ जमुनानंद जगत
सुख प्रेम बढ़ावन ॥
जागिए जु कान्ह कुंवर के मल कल्याण राय जागिये श्री कृष्ण चन्द्र
प्रेमानन्द पावन ॥
जगत के जगैया तुम प्रभु बैजू के स्वामी बलिराम कृष्ण जु के भैया पाप नसावन ॥७१॥

रंग रंग के अनेक रंग रंगे बिधना ताको वार न पार ॥
पशु पंछी सुर नर मुनि परमहंस भांत भांत के भांड बनाए,
स्वेत पीत श्याम रक्त है करतार ॥
तूंही आदि अंत तूंही तूंही सबमें रम रह्यो तोहीं ने सब जग बिस्तार ॥
एक ही अनेक होय व्याप रहो घट घट बैजू प्रभु निरंजन वही साकार ॥७२॥

राग रंग सुध मुद्रा सुध अच्छर सुध छंद पढ़यत है सांचो गुरुन सों पावे लेख ॥
सुर भेद ताल भेद बिचार के सार्थ ध्यान ताल ध्यान भाव नृत्य
प्रकीरन संगीत शास्त्र को देख ॥
धारु धुरपत प्रबंध छंद गीत गुनी मात्रा चतुरंग त्रे वट तिलानी देस बिदेस
भाषा संस्कृत बिसेख ॥
कहे बैजू बावरे सुन हो गोपाल नायक हिरन बोलावें पाहन पिघलावें
तेरी लाख मेरी एक ॥७३॥

री जाको जोगी मुनि जग जपत रिद्ध सिद्ध ऋषि जपत गुणी गंधर्व नारद सारद
जपत अष्ट जाम री ।
चंद्र सूर्य जपत इंद्र पवन पानि अग्नि बरुन सुर नर मुनि पशु पतंग
जपत कर परनाम री ॥
सती जती सूर बीर जपत असुर अखिल विश्व विश्वंभर जाको नाम सबको
बिश्राम री ॥
ब्रह्मादिक सनकादिक जपत शिव पार्वतादि तोंहीं तोंहीं बैजू जपत ब्रह्मा को
सुखधाम री ॥७४॥

विद्या सोई क्यों न गाइए जामें मिले हरी नंद लाल ॥
वृंदावन सघन कुंज रमित नाचत रास बाजे मृदंग
ताकट तक तक धुनकट तक गावत विविध दै दै ताल ॥

सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मुरछना प्रमान बंसी मध टेरत तान
थकित सुर मुनि बिमान रखत है कुसुम माल ॥
बैजू प्रभु के साधे तीन लोक मोह लियो ब्रह्मा महादेव ध्यान थकित
चंद्र सूर्य पवन पानि सेस पताल ॥७५॥

विद्या सोइ भली जासें पइयत हे री लाल ॥
कुंज भवन में आय बैठ रीझ दई मृगछाल ॥
गुन मत प्रगट छतीस डांडी बांध आयो नायक गोपाल ॥
बैजू के गाये ते सप्त सुर भूल गए पींगरे पाखान बूड़े ताल ॥७६॥

संसार तारन तूंही बिधाता तिहूं लोक पृथ्वी नमोनमो संसार तारन ॥
असुर संघारन रावन मारे लंका गढ़ जारन तूंही बिधाता तिहूं लोक
पृथ्वी नमो नमो संसार तारन ॥
कुंभकरन इंद्रजीत हिरण्य हिरण्याक्ष रक्तबीज महिषासुर भस्मासुर मारन ॥
दंतवक्र शिशुपाल कंस केसी अघा बघा बैजू प्रभु किए उधारन ॥७७॥

समझ सोच ले मूरख निदान रे जग में दोय दिन के हैं तेरे अभिमान रे ॥
आदि अंत वोही सबको प्रान रे कर ध्यान रे हरि उर अंतर घट घट में समान रे ॥
जल थल भूमि अकास रे सब ठौर जाको प्रकास रे जाकी धरो नित आस रे
सोइ है बैकुंठ निवास रे ॥
और बिकार दुबिधा तज रे हरि भज रे बैजू चरन प्रभु होय रज रे
गोपाल भजत जलज रे ॥७८॥

सुंदर अति नवीन प्रवीन महा चतुर तार मृगनैनी मनहरनी चंपक बरनी बार ॥
केसरी कटि कदली जंघ नाभि सरोज श्रीफल उरोज चंद्रबदनी शुक नासिका भौंह
धनुष काम डार ॥
अंग अंग सुध पद्मनी भंवर गुंजत सुबास आवत क्रोध नहीं सांत सरूप
कुच नाहिं दबी जात बारन के भार ॥

धन धन जाको भाग तोसों तिया ता घर बैजू प्रभु रस बस कर लीने
काम जाल डार ॥७६॥

सुंदर मृगनैनी का मन अन मानन पति संग ॥
भुज पर सीस कपोल दशन मध्र कुच पर कंचुकी तंग ॥
जांघन पर जांघ मुख तंबोल अधरन पर टपकत रंग ॥
यह आनन के मुख दे मुख ले रंग बात बैजू केल अंग ॥८०॥

सुफल जनम भयो री आनंद गोकुलचंद बसन बलिबंस उजियारो ॥
नीके दिन नीकी घरी मुहूरत शुभ योग प्रगटे बड़े भाग नंद दुलारो ॥
एक नाचत एक मंगल गावत एक मृदंग बीन एक घन शिखर उचारो ॥
एक हरद दूब दधि अछत रोरी ले छिरकत बैजू करत कोलाहल भारो ॥८१॥

हरि नाम बोल ले सुगना तेरो जनम सुफल सब होय ॥
एक दिन प्रान पींजरा तें जब उड़ जायगो तब कछु न बस चलिहैं
हरि के चरण चित पोय ॥
वृथा जनम जात है तेरो तन के पातक ले धोय ॥
बैजू प्रभु परम कृपाल दयाल है पतित पावन है सोय ॥८२॥

हरि प्रेम रस छके छके अजहूं न मन अघाए ॥
विरह बावरी रहत निस दिन आनंद उर न समाए ॥
सोवत जागत विहरत हरि हरि याही छिन छिन चित लाए ॥
बैजू बावरे प्रभु को ध्यावत और नहीं मन भाए ॥८३॥४

हित करे तासों ना कर रार गरब न कीज्यै रे गुनी ॥
गर्ब किए कछु हाथ न आवैं भरम गमावत क्यों अपुनी ॥
गीत छंद धारु धावा माठा प्रबंध चर्चा घनी ॥
कहे बैजू नायक सुनिए गोपाल लाल रचपच गए सुरार मुनो ॥८४॥

तानसेन

अति अलसाने में जाने पिय अनत रंगे जु रंगे हो रंग राग के ॥
रीझ हेत काहू पै रीझ कैसे बात जानत रस के वर भाई आज
भंवर काहू बाग के ॥
दोष तिहारो नहीं दोष काहू तिया को तुम सिखाई सीख अनुराग के ॥
तानसैंन प्रभु तुम बहु नायक बात कहा बनावो सुधारो पंच पाग के ॥१॥

अनत रितु मान आए पिय भोर ही मेरे ॥
मोहि तो सुध भूल गई री मोहन मुख हेरे ॥
जिय की औरे सों मुंह की हमसों कहत हैं टेरे ॥
तानसेन प्रभु ताहि पै सिधारीएतु अमन रवो जिन नत नेरे ॥२॥

अनहद शब्द उपज्यो मो घट में ताको ध्यान करु अष्ट जाम ॥
खरज रिषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषाद पावे ज्यों अति अभिराम ॥
अर्थ धर्म काम मोच्छ चारों पदारथ पाए जब प्रगट्यो नाद ब्रह्म
सहस रूप अनंदधाम ॥
धन धन जोती सरूप आचरज कर औरे परसें तानसेन कंठ ठाम ॥३॥

अब मैं आगम पायो री माई री पिय के आवन को सो कुच भुज फरकीली और
आंख वाही कागा सगुनवा सुनाई ॥
नीके सगुन सब होत हैं मन इंछा पूजु नैनन की तानसेन मिलें मोहे
सुखदाई ॥४॥

अब मैं राम राम कह टेरों ॥
मेरे मन लागो उनहीं सीतापति पद हेरो ॥

चरन सरोज श्रवन मन मेरो भुज अंकुस सुख केरो ॥
तानसेन प्रभु तुम हो नायक इन नरवन पर फेरो ॥५॥

अरुन बरुन सरस्वती गुप्त प्रगट होत चंद्र किरण जोति आकाश पर छुवत भुज तेनी
तैसे बन बन नेहु मिलन चली लाल अति रंग भीनी ॥
भागिरथी तुंरो भगत तारन सरगउ धारण साराखी ॥
सब भू अपावन पै धार तीरथ प्रयाग वे तारी जलौधापति धरनी तरनी ॥
तो लों उतपति नर नारी ब्रह्मा बिष्णु मकर न्हावत करत अस्तुत गावत भर
नाद तानसेन गुणी ॥६॥

आइए जु कैसे आवन पाये भले हे आये मेरे नवल लाल ॥
तुम हो चतुर सुजान बूझन सब गुण निधान महा ज्ञान मूरत हो अति रसाल ॥
हम सों अवध बद अनत विरम हैं एसी न कीजे दीन दयाल ॥
तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक दीजिए दरस कीजिए निहाल ॥७॥

आज कहां तज बैठी हैं भूवन एसे अंग कछु अरसीले ॥
बोलत बोल रुखाई लिये तुम कहे कुढंग किये अहसीले ॥
क्यों न कहो दुख प्राण पिया सो अंसुअन रहे भर भर नैन लजीले ॥
तानसेन सुख होवे जिनके तिनके मन भावन छैल छबीले ॥८॥

आज कान्ह बृंदाबन मुरली बजाई सुखदाई है ॥
स्वर्ग लोक नर लोक पताल लोक सब सुन धुन सुध बिसराई है ॥
सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मूरछना बाइस सुर्त उनचास कोट तान रंभन में छाई है ॥
तानसेन के प्रभु रस बस कर लीने ब्रज बधू घर छोड़ स्याम जू पै आई है ॥६॥ ✓

आज बन बन मुरली बजावत सुधि सिधि सुध तान के लेवैया ॥
कांधे कमरिया हाथ लकुटिया टेढे ही टेढे आवत नंद को कुंवर कन्हैया ।

सांवरी सूरत माधुरी मूरत वृंदावन के बसैया ॥
तानसेन प्रभु बनवारी गिरधारी ब्रज बिहारी बलि जु के भैया ॥१०॥

आज बजाई मुरली मनोहर ने सुध न रही री कछु मो तन मन में ॥
हों जमुना जल भरन जात ही कान्ह ठाढ़ोरी वृंदावन में ॥
सुध न रही री कछु गठन की अंगन में भूली काम काज सब घरन में ॥
तानसेन के प्रभु तुम बहुनायक मेरो मन मोह्यो आली मदन मोहन में ॥११॥

आज मेरे भाग जागे पिव भोर ही सुध लई ॥
इतनी भई निहाल पिय तुम पै बल बल गई ॥
तन मन प्रान तुमहीं निसदिन तुमरे रंग रँग गई ॥
तानसेन प्रभु तुम चतुर शिरोमणि रस बस निहारे भई ॥१२॥

आज हरि लिए और अन होली गइया एक ही लकुट हो हांको ॥
क्यों क्यों रीझी तो मोहन तुम सोई त्यों अनुराग हम पर देखत मुखा को ॥
हम जो मनावत कहूँ जो तुम मानत बतिया गउवां की ॥
तृण नहीं चरत बछरा नहीं चोखत हम कहां जाने कहे कहां की ॥
तानसेन प्रभु वेग दरस दीजै सब मंतर पढ़ आंकी ॥१३॥

आदि देव महीसुर गौरी ईश बिरूप आछे गंगा जटा जूट ॥
यह अनुचर वंदन कर मांगत तुम्र पग प्रसाद तें पाउं राग
विस्तार तान उनचास कूट ॥
तुम्र समान और नाहीं अविगत अबिनासी ह्वै रहे भुवलोक अध अटूट ॥
भोलानाथ भस्म भूषन गंग शिखर डिम डिम डंवरू बाजे ॥
तानसेन सेवक को दीजे अन धन दूध पूत अखूट ॥१४॥

आनंद भयो आज आयो बिजै कर घर घर मंगल चार ॥
अनेक गज तुरंग साजे नौबत नगारे बाजे गज तुरंग साजे सवार ॥
तन बित न घन शिखर नाना बिध बाजत सुरपति के द्वार ॥
ब्रह्मा बेद पढ़े नारद मुनि गावैं राजा रामचंद्र जू के बार ॥
तानसेन कहे सुनो साह अकबर दशहरा सुफल भई तिथि वार ॥१५॥

ओंकार ब्रह्मा उचारो चारहू मानन तार करन सप्त प्रमान ॥
सप्त स्वर तीन ग्राम इकइस मूर्छना बाइस सुरत उनचास कोट तान ॥
आरोही अवरोही अस्थाई संचाई असंन्यास ग्रह जान ॥
औडव खाडव सुर संपूरन तानसेन गुरु ज्ञान उर आन ॥१६॥

इंदु से बदन नैन खंजन से कंठ कोकिल बचन सुहाई ॥
नासा कीर अधर बिद्रुम दाड़िम दसन दमकाई ॥
श्रीफल उरोजन ग्रीव कपोत बैनी नागन सी सुखदाई ॥
कटि केहरि कदली जंघ पद सरोज पद्मा सी तानसेन एसी ते बल बल जाई ॥१७॥

इत भान उत साह अकबर दो दरस ज्यों देखे सोई होत पवित्र इंद और जन
मंद सुर के बर पावैं गुपत आनंद ॥
वे तिमिरहरन ए दुःखभंजन ताकि सोहे करियत साह दिनों मकरंद ॥
वह सहस किरन प्रकाश कीनों अति बुध श्रेष्ठ मयाधर जगबंद ॥
तानसेन कहे कहां लों अस्तुत करे काटन हार विकार दुख दंद ॥१८॥

ईद मुबारक होवैं जम जम नित नित तुम कूं मेहरबान ॥
सकल विद्या गुन निधान अति ही आनंद करो देत गुणीन कूं आदर मान ॥
जुग जुग जीवो कोट बरस जी देवो करो नित दान ॥
तानसेन कहे सुनो साह अकबर चहूँ चक राज करो मरदन महा मरदान ॥१९॥

ए आज बांसरी बजाई बन मध्य कौन ढंग कौन रंग फूकि फूंकि ॥
सुनत श्रवण सुधि रही नहीं तन की भई हैं बावरी बृंदाबन दिशि हेरि
झूकि झूकि ॥
ब्रह्मा बेद पढ़त भूले शिव समाध मांह डोले सुर नर मुनि मोहे देवांगना देखे
लुकि लुकि ॥
सप्त स्वर तीन ग्राम इक्कीस मूर्छना ले तानसेन प्रभु मुरली बजावत बोलत
मोर को कला कुहुकि कुहुकि ॥२०॥

ए आज भोरहीं आए हैं कान्ह गुजंरी के धाम ॥
सप्त सुर सों गावत तानन मुरली में गुजंरी नाम ॥
उरपति रप लागडाट आनक स्थानक स्वरांतक ओडव खाडव सो रिझावत बाम ॥
तानसेन प्रभु नित प्रात आंनद देत घर घर गोकुल गाम ॥२१॥

ए आयो आयो मेरे गृह छत्रपति अकबर मन भयो करम जगायो ॥
पाछलो पुन्य मेरो प्रगट भयो याते अर्थ धर्म काम मोक्ष चारो फल पायो ॥
काहू की न इंछा रही तेरे दरस देखे पाप तज धर्म राज अचल कर पठायो ॥
तानसेन कहे यह सुनो छत्रपति अकबर जीवन जनम सुफल कर पायो ॥२२॥

ए आयो आयो रे बलबंड साह आयो छत्रपति अकबर ॥
सप्त दीप और अष्ट दिसा नर नरेंद्र घर घर थर थर डर ॥
निसदिन कर एक छिन पावे बरनन पावे लंका नगर ॥
जहाँ तहाँ जीतत फिरत सुनियत हे जलाल दीन महमद को लश्कर ॥
साह हुमायूं को नंदन चंदन एक तेग जोधा अकबर ॥
तानसेन को निहाल कीज्ये दीज्ये कोट नजर जरी नजर कमर ॥२३॥

ए ईश्वर मोहीं को जानत गत जो बितत बिना देखे तुम्र दरस ॥
एक निमख्न पे नाहन निरखन में सांस अकुलात कछु न सोहात मन
नैन दोउ जात तरस ॥

भव भंजन मन रंजन काटत दुख दंद फंद एसो जग में व्याप रहो सरस ।।
तूंही आदि तूंही अंत तारन तरन तानसेन तूंही अरस परस ।।२४।।

एक कर दर्पन एक कर कजरा अचरा गहे सुधारत ।।
ललना एक काजल में दूर करन उठत मोर मुख कमल परत सीसफुल
अति बिराजत ।।
गगन जरत की उपमा जीय भई मेरे जानवेउ दूर रहे सकुचात लजात ॥
जे कहियत हैं मानो फुर दुरत हीं तानसेन देखत दुख भाजत ।।२५।।

एकदंत गजबदन बिनायक बिघ्न बिनासन हैं सुखदाई ।।
लंबोदर गजानन जगबंदन शिव सुत ढुंढीराज सब बरदाई ।।
गौरी सुत गणेश मुशक बाहन फरसाधर शंकर सुवन रिद्ध सिद्ध नव निद्ध दाई ।।
तानसेन तेरी अस्तुत करत काटे कलेश प्रथम बंदन करत दंद मिट जाई ।।२६।।

एक बल निरंकार दूजे बल चंद सूरज तीजे बल लोक चौथे बल प्रकाश ।।
पंच बल भूत आतम छठए बल नारायण सतए बल सागर अष्ट भुजिन
नव बल नव कुली नाग दशए बल अवतार प्रगाश ।।
ग्यारह बल रुद्र एकादशी बारह बल वामन तेरहे बल त्रईलोक चौदहवां बल
दे विद्या पचास ॥
पनरे बल तिथि सोरह बल सिंगार सत्रह बल सत्यावती अठारह बल वनस्पति
उनवीस बल पिनाकधर बीस बल लक्ष्मी अकइस बल तानसेन प्रगाश ।।२७।।

ए तुम सज साज दल चढ़त जब भूप पर भार होत
थर थरात देश देश के गढ़पति सुन धाक धर हरात ॥
जाके चढ़ें तें खुर रेनु उड़त गगन छिप जात खलबल परत सिंहहू पै
बाजत निशान जब शब्द घहरात ॥
देव दानव और राव रंनो भाज गए सब पाताल लों कमठ पीठ कलमलात ॥

सहस सहसकुन फाटकहि चूर चूर भयो थरहरात ॥
महाराजन्मणि राजाराम रामचंद्र की असवारी होत ॥
अश्वदल गजदल पयदल सुन सुन अकबकात धक धकात ॥
एसो सुरो पूरो तप तेज वो सो वोही दूजो नाहीं मेरे जान तानसेन गुनी जन को
अजाचक कीनो वाकी सुरत मूरत पर खल बल जात ॥२८॥

एकदंत मंत लंबोदर फिरत जाहे बिराजे ॥
गणेश गौरीसुत महा मुनि महिमा सागर गुरु गन नाथ अबिघन राजे ॥
हे रंब गन दीपक तूंही महातुर उग्र तप बट चंद्रमा सों छबिनायक जगत से
सिरताजे ॥
तानसेन को प्रसाद दीजे सकल बुध नव निध के सदा दायक लायक जगत
के सरे काजे ॥२९॥

ए दारु पिलाव कलाली तानसेन कूं खुमारी भई अंत बिहाली ।
दुवा साह जलाल की प्याला भर भर पिवाउं हो लाल दुलाली ॥३०॥

ए मन जब लग नैन प्रान तब लग जीयत सब काहू को दीदार ॥
जब लग जिए तब लग कीजिए राग रंग घरी घरी पल पल छिन छिन
जात न लागे बार ॥
साच ही बोलत साच ही तोलत साच ही कीजे बनज बिहार ॥
तानसेन के प्रभु साच ही में रम रहे यातें समझ बूझ देखिए जग
सपनो संसार ॥३१॥

ए मन तूं जो अपनो सुख चाहत है घरी घरी पल पल छिन छिन
सुमर ले श्रीराम नाम ॥
जो जग जप तप नेम धर्म ब्रत संजम ज्ञान ध्यान गहे दृढ़ हरि चरनन बिश्राम ॥
और उपाय नाहीं कलिजुग में कृष्ण कृष्ण कहत होय आराम ॥
तानसेन प्रभु को चरन सरन गह ले जामों पावै वैकुंठ धाम ॥३२॥

ए मेरे भाग जागे पिय भोरहू सुध लई ॥
मैं इतनो भलो मनावत हूँ बलमा हो तुम पर बल गई ॥
अधर न अंजन महावर भाल मत गत और भई ॥
तानसेन के प्रभु ठाढ़े रहो बलैया लैहों कहाँ पै तिय नई ॥२३॥

ए री अब आनंद भयो री लालन आए री मेरे महल ॥
तत बितत धन शिखर मृदंग बजावो तार तानसेन की गावो करेगी सहल ॥२४॥

एरी अब लुक भाज जाइबो सनमुख होय पीयारे सों रंग भरी कीजिए बतियाँ ॥
मान सिख मेरी काहू कूं मन न लीजिए छाड़ यह हठ चल लिपट लाग लाल की छतियाँ ॥
देख तूं एसी फुलवारी सी हो रही कर अपबस सुंदर में मनाय रही रतियाँ ॥
कब के जोवत बाट प्रानेश्वर प्यारो जान बूझ के काहे को तानसेन प्रभु सो घतियाँ ॥२५॥

एरी आली आज शुभ दिन गावहु मंगल चार ॥
चौक पुरावो मृदंग बजावो रिझावो बंधावो बांधो बंदनवार ॥
गुनी गंधर्व अपसरा किन्नर बीन रबाब बजे करतार ॥
धन घरी धन पल मुहूरत तानसेन प्रभु पर बलिहार ॥२६॥

एरी गंवार ग्वार तूं कहा जाने रोगी पीन को मरम ॥
कांध कामरी और हाथ लकुट लिए ताको जिय कहा होत नरम ॥
कटि सोहै पीत बसन डारो फिरत याही तें जानि जात तेरो धरम ॥
तानसेन कहे शबरी को जूठो खायो ताके जिय कहा होत सरम ॥२७॥

एरी तूं अंग अंग रंग रानी अतही सयानी रितु पिय मन मानी ॥
सोलह कला समानी बोलत अमृत बानी तेरो मुख देखे चंद जोतहू लजानी ॥
कटि केहर कदली जंघ नारा का पर कोट वारों श्रीफल उरोजन की छबि आनी ॥
तानसेन कहे प्रभु दोउ चिरजीवी रहो तेरो नेह रहे जौलों गंग जमुन पानी ॥३८॥

एरी हम जात रही डगरी डगरी पहै सगरी सीस धरे गगरी ॥
हमहू देख दौरो एकटक गोरी अनट कीनी सगरी ॥
जमुना जान देइ ना जल को नाहन फिरे नगरी ॥
मुरली अधर धरे ठाढ़ी पग री अचगरी बातें करत हंसी की
अहो जशोदा सुनो कान्ह की कीरति बिगुरी तानसेन प्रभु सबन तें अगुवाए सो ढीट
कोइ नाहिन या जगरी ॥३९॥

एरी हो रीझ देख भोरही उठ के प्यारी कजरारे दग दोउ कर सों लागे मलन ॥
पुनि या छबि सो ऐंडात जंभात नीर बही मानो कमल मध ते अलक सुत छुटे
लागे चलन ॥
चंद्रबदनी मृगनैनी बिन देखे घरी पलकन ॥
तानसेन देख रीझ मगन भए सुंदर नार अबलन ॥४०॥

ए सखि नंदकुमार बालापन में मेरो मन हर लीनो ॥
जिय अकुलात और नैनन सो नीर जात मेरे हिय को दुख दीनो ॥
सांवरो सलोनो स्याम बाट रोक ठाढ़ो भयो मोको बुलाय पास
अधरन को रस लीनो ॥
नैनन सों नैना मिलाय हर्दे सो हर्दे लगाय तानसेन बंसी बजाय
जादू सो कीनो ॥४१॥

एही सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मूरछना गीत छंद धोवा माठा प्रबंध त्रेवट तान ॥
आरोही अवरोही अस्थाई संचाई बादी बिबादी संबादी अनबादी जान ॥

खरज ऋषभ गांधार मध्य पंचम धैवत निषाद तान आन ॥
सारें गम पधनी सानीं धप मगरे सा तानसेन कह्यो ग्रंथ प्रमान ॥४२॥

कटाछ बाट देत कर पल्लम बस्तर लाए अंजन सुधार ॥
अंजन किए चाहत एक कर दरपन लिए बदन निहार ॥
कटि केहर कदली जंघ शुक नासा पै बार ॥
तानसेन के प्रभु एसी प्यारी सुंदर निरख बलिहार ॥४३॥

कठिनाई पिय को री निहार गेहरा नहीं भावै रही नित उदास ॥
सबन समान मेरे जान आली अरध उरध दोउ सांस ॥
मोहे जगत रैन चैन नहीं नैनन तातें सुपनेनहू में कहा सो भई सुपनेनहू आस ॥
तानसेन प्रभु समझ समझ कियो भोग बिलास ॥४४॥

कराल बदनी काली त्रिसूल खपर सोहै चंडी असुर संघारन कारन ॥
महिषासुर मर्दनी इंद्रानी महेश्वरी मेनकात्मज उमा कात्यायनी भैरी
तरन तारन ॥
नारायणी निरग्रंथा काश्मीर अस्थानी शिवा रुद्रानी अपरंपारन ॥
नग्रकोट रानी महिमा तुम्र जानि तानसेन निसदिन सुमरत संकट निवारन ॥४५॥

कृष्ण केशव कमलनयन केसी दलन कान्हर करतार सुरन के बरन करुणानिधि
कुंजबिहारी काम कंदन किशोर ॥
जोग ध्याजो तरु जनार्दन मकुन्द माधो रंगनाथ रागी के सरन छोर ॥
पारब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम प्रह्लाद उबारन महाबली जोधा नहीं और ॥
तानसेन प्रभु भक्तन रखो करो अनत अकोर जन चितवत कोर ॥
रच पच बिरंच साह अकबर कीनो दीनो त्रइलोकनाथ माथे भाग भरो अभार ॥
मेरी अवनी धारन अधार निरा नाम निरा अदभुत सोई प्रतच्छ धन
दीदार पायन पर कर संसार जुहार ॥

गरीब निवाज साहन सिरताज दायक छाजत राज सब काज आज कोउ नाहीं
संसार में कियो बिचार ॥
तानसेन कहे उनचास कोट सुधाकर करे करतार और कर कौन सकत जलाल-
दीन महमद को फिर अब अवतार ॥४६॥

कहो जी तुम कौन हो कहां ते आए कहाँ कित ह्वै जावोगे सबेरे ॥
हम तुमको पहचानत नाहिंन मेरे घर आवत दरेरे ॥
लाल पाग पीतांबर सोहत और बनमाल गरेरे ॥
तानसेन के प्रभु नेक ज्यों ठाढ़े रहे सब सखियन मिल हेरे ॥४७॥

कानन मुद्रा मुंडमाला गरे भस्म बिराजे अंग ॥
कर त्रिशूल चंद्रमा लिलाट पारवती अरधंग ॥
बृषभ बाहन सीस जट सोहत जटा जूट गंग तरंग ॥
त्रइ लोचन त्रिशूल खपर डंवरू लिए तानसेन तान गावत रंग ॥४८॥

कान्ह ते अब घर झारो पसारो कैसे होय निरबारो ॥
यह सब घेरो करत है तेरो रस अनरस कौन मंत्र पढ़ डारो ॥
मुरली बजाय कीनो सब बोरी लाज दई तज अपने में बिसारो ॥
तानसेन के प्रभु कहत तुमही सों तुम जीतो हम हारो ॥४९॥

काशी कारमीर कामरु करणाटक बूंदी बुंदेलखंड मालवा मुलतान मेवात खुरासान
बलख बुखारनो कुल मंड ॥
बीजापुर थंग ददर कमान रुमसाम भरत सम डंड ॥
कहत तानसेन सुनो हुमायूं के नंद जलालदीन अकबर जाके डर डरत ब्रह्मंड ॥५०॥

कुबज्या को राजरी न्यावरो जासे गोविंद बोल बोले ॥
त्रइलोकनाथ हित कर चाहे सो क्यों न गुंडी बंडी डोले ॥

जग जीवन के सुहाग माती री माई तातें बतियां घड़ घड़ छोले ॥
वाको उतर बूझत जासे तानसेन बिरह कबहूँ हिय डोले ॥२१॥

कुबज्या ते काहे न मंगल गावै मंगल गावै ॥
त्रइलोक के ठाकुर सो तेरे द्वारे आवै ॥
धन तेरो भाग सोहाग री नारी तोही सो चित चावै ॥
तानसेन प्रभु पूरब पुन्य ते रसबस कर अपनावै ॥२२॥

केते रतन जगत में ऊते प्रगट किए प्रथम कामधेन सुर बिधने बनाए ॥
फुन कीने बिष बारुनी अमी औ सुधाकर चारो खान चिरावनी पर बाजी
बिरथ तें पाए ॥
धनुष धन्वंतर दरन सुरन गज श्री मणि रंभा छंद धारु धुरपद गायन ले बसाये ॥
तानसेन कहे कंबु कंठते हुमायूं को नंदन कल्पवृक्ष अकबर पारख पाए ॥२३॥

कैसे आछे सोभत लाल कैसी मुकुट सीस कटि किंकनी नूपुर रुनक झनक ठनकन
चाप धरत चाल चलत गज गयंद की ॥
काछ कटि कांधे कामर गर सोहे बैजंती माल मृगमद तिलक ललाट कोट काम
लजित भए अधर मुरली बजत चित फंद की ॥
सांवरे सलोने गात शोभा कछु कहो न जात चितवन नैनन बिसाल रवि ससि की
जोत भई मंद सी ॥
तानसेन के प्रभु अंगना में खेलत सब ब्रज जन आनंद मुदित जय बोलत
बृंदाबन चंद की ॥२४॥

कौन भरम भूल्यो रे मन अज्ञानी सीखत न राग रंग तान अच्छर सुध बानी ॥
और स्वारथ सो जनम गंवायो विद्या बात अधिक सयानी ॥
जे साधु गुनी भए तिनको न गुन की मत ठानी ॥
बिलास के प्रभू को जो भलो चाहते तो मिलहो तानसेन गुरु ज्ञानी ॥२५॥

कौन दिशा है अजहूं न आये सखि हरि न आए ।।
और जो जान जिय ध्यान मेरे रसना नाम लयो री मानों उनहीं सो मिलाए ॥
मृगमद घनसार छुक चंदन नहीं लै आये एनों को कृपा करो प्रभु तुम
हमहूं मंगल गाए ॥
मलया चंदन क्षुद्र घंटिकी इनहीं लेवन लाए ।।
तानसेन प्रभु बेग दरस दीजे हम हो मंगल गाए ।।५६।।

कौन सों रीन मान सांची कहो मन भावन ।
निसि के जागे अनुरागे आए ही झुकन लागे
तब झूम झूम आये हो मोहें रिझावन ॥
बचन बनावन बैन नहीं आवन कहे देत नैन बैन दरसावन ।।
तानसेन के प्रभु वहीं सिधारो जहाँ सारी रैन रहे रति रंग जगावन ।।५७।।

स्वरज साधे गाऊँ मैं श्रवनन सुनहुं सुनाउं ।।
बेद पढ़ाऊं जोइ जोइ कहे सोइ सोइ उचराऊं ।।
भैरव मालकोश हिंडोल दीपक श्री राग मेघ सुर हो लै आऊं ।।
तानसेन कहे सुन हो सुघर नर यह विद्या पार नहीं पाऊं ।।५८।।

राए मेरे सब दुख देखे ते आप दरस ॥
अष्ट सिद्ध नव निद्ध देत हो पलक मधन धन कंचन जात बरस ॥
एकन को राज तुरंग एक न को भूपन एकन को बस्तर देहो सरस ।।
तानसेन कहे राजा राम सकल काज पूरन गुनियन के दारिद्र जात परस ।।५९।।

गावत सुघर गुनी गंधर्व सुध मुद्रा संगत सो नाद ।
सुश्रुति कला ध्वनि मूरछना पूरन लगे तब राग को स्वाद ॥
रंग लिख रस रूप लय ताल काल लय समान पर रहे उठ महानाद ।
तानसेन कहे ग्राम तान अलंकार सब समझ कीजे गुनियन सों संवाद ।।६०।।

गोबर्द्धन गिरिधर गोपाल गदाधर गरुड़पति गरुणगामी गोविंद गोपीनाथ ॥
एनन राजा महाराजा गजानन जे बिद्या जगदीस ॥
सस्वर सों गाऊं बजाऊं सब राग रागणी पुत्र बधुन सहित छतीस ॥
बाइस सुरत अकइस मूरछना उनचास कोट तान आवै जगदीस ॥
तानसेन को दीज्ये छह राग छतीस रागणी ताल लय संगीत मत
सो होय कंठ प्रबेस ॥६१॥

गोबिंद गोपाल गरुणगामी गोपीनाथ गोबरधनधारी गोप मन रंजन ॥
बंसीधारी गिरधारी कुंजबिहारी बहु रूपधारी कंसारी मुरारी गर्व
प्रहारी दुष्ट गंजन ॥
मधुसूदन माधव मथुरापति मुक्तेश्वर मन भावन दुख भंजन ॥
बासुदेव बिठल बनवारी बद्रीनाथ बौद्ध रूप बिष्णु तानसेन भक्त मन मंजन ॥६२॥

घर घर तें ब्रज बनिता जो बन निकसी आज कंचन थार भर भर नग नोछावर
करन लाल की ॥
सप्त सुर ले गावत कंठ कोकला लाजत उपजत अति रसाल गमक तान ताल की ॥
मदन महोछव साज समाज गोपिन वृंद मिल चलत चाल मराल की ॥
तानसेन प्रभु रसबस कर लीनो तिरछी चितवन मदन गोपाल की ॥६३॥

चंद्रबदनी मृगनयनी ता मध तारका गंग पुतरी कालिंदी इह बिधि डोरे बनाय कीनी
तिरबेनी ॥
छूटी पोत कंठ दीपक मुख को जोत होत तामेंगुप्त प्रगट सरस्वती मिली एन मेनी॥
सुंदर रूप अनुपम सोभा त्रिभुवन पाप ताप हरनी करत सुख चैनी ॥
तानसेन को करो निरमल तूं दाता भक्त जनन की बैकुंठ कीने सैनी ॥६४॥

चंद्रबदनी मृगनयनी हंसगमनी चली है पूजन महादेव ॥
कर लिए अग्र थार पोहपन के गुंथे हार मुख दीयरा जराए देवन में देव महादेव ॥

सोलह सिंगार बनीसों आभरन मज नखसिख सुंदरताई छबि बरनी न जाई
है निरमल मंजन कर सेव ॥
तानसेन कहहैं धूप दीप पुष्प पत्र नैवेद्य लै ध्यान लगाय हर हर हर
आदि देव ॥६२॥

चटक चित्र मित्रहूँ मिल नग मग नगन चित चढ़न रूप रंग भरन जगत मन हरत ॥
प्रथम ही आभा आदरत फुन अरतन कूक करन बड़ी बड़ी बार परत ॥
रस ढरत लटपटात थर थरात बेर समद हैं लरत एक मारत मरत एको
दस रत हेरत रोर दारिद्र इनकों दरत ॥
वही ज्ञान जी में धरत परसत संसार नित तार मन में याते फूलन परत ॥
तानसेन कहत अकबर अल्ला भर के नाम गाए एक दरसनहीं सुरत निरत ॥६६॥

चढ़ो चिरंजीव साह अकबर साहनसाह बादसाह तखत बैठो छत्र फिरे निसान ॥
दिल्लीपति तुम नबी जी को नायब अति सुंदर सुलतान ॥
चारों देस लिए कर जोर कमान राजा राव उमराव सब मानत तेरी आन ॥
कहैं मियां तानसेन सुनियो महाज्ञान तुम से तुमहीं और नाहीं दूजो गुनी जनन
के राखत मान ॥६७॥

चरन तक आए हो पीर अता तुमारे द्वार ॥
करतार तुम सब बिध कीनो निस्तारबे को राग ताल तानसेन सो आज ॥६८॥

चलो जाय पूछिए हरि के समाचार जसोदा के आंगन कछु तो लगी है री भीर ॥
पिया पेते पाती आई बांचीहू न परे उनको कहा हमारी पीर ॥
आवन कह गए अवधहूँ बीती अब कैसे जिय धरिए धीर ॥
तानसेन प्रभु मधुबन को बिरम रहे कबधों मिलिहै जे हरे है चीर ॥६९॥

चलो नहीं जात अंग भीजे जात प्रसेद मांझ पुलकित गात जानी समझी न बात है ।।
पीया बिन जात जरो अंगन थहरात सब आन को रंग कछु आन भयो जात हैं ॥
आंसू चले जान प्यारी लीन सी देखात हेरी तेरी दसा देखि मेरो हियो हहरात है ॥
नेक निहारै मन मोहन को रूप आली तानसेन प्रभु रोम रोम दरसात है ॥७०॥

छत्रपति मान राजा चिरंजीव रहो जौलों ध्रुव मेरु तारो ।।
चहूँ देश ते गुनीजन आवत तुम पे धावत पावत मन इंछा सबही को जग उजियारो ।।
तुमसे जो नहीं और कासे जाय कहूँ दौर वही आज कीरत करे मो परेछा करन हारे ।।
देत करोरन गुनी जनन को अजाचक कीए तानसेन प्रतिपारो ॥७१॥

जनम योहीं गंवायो बावरी अब गहे न हरि के चरन ॥
हो जानो पीय जोबन थिर रहेगो भूली याही भरमन ।।
लख चौरासी भटकत भटकत सरन सुमेर पायो मनुष्य धर्मन ।।
तानसेन के प्रभु सुमरन कर ले सुध चित करमन ॥७२॥

जब करता करम करे तो सब कुछ पावें नाद विद्या सुध संगत आवै ।।
जान बूझ भूलो फिरे रे क्यों न वोही नाम जा सुमरत ही सुर तान गावै ॥
जे नर मुनि गुनि पच पच हारे बिना कदर कोउ न बतावै ।।
तानसेन प्रभु निसि बासर अब तेरो नाम ध्यावें ॥७३॥

जल-थल भई और जहां तहां इत उत जित तित नित नित तूंही भर रहो साहन साह सतार रब ।।
तोसों और नहीं दूजो तोसों तूंही दूजो तोसो तूंही नरेस तूंही दीन तूंही दानी तूंही धनी तेरी सरब ।।

नाम ना जपत ना संजम ना तीरथ ब्रत लुबध्यो दरब ॥
तानसेन को साहब दुखियन को दुख दूर करनहार भंजब न गरबीन को गरब ॥७४॥

जा दिन तें लगत हम कूं आली री सुनो भवन जब तें प्रीतम परदेस गवन कीनो ॥
घरी घरी पल पल छिन छिन बरस से बीतत उन बिन बिरह अति दुख दीनो ॥
सुंदर श्याम मनोहर मूरत वाने मेरो मन हर लीनो ॥
तानसेन प्रभु बेग दरस देहो तेरे रंग में निस दिन भीनो ॥७५॥

जिन करो मोसें झूठी झूठी बतियां तिहारी प्रतीत मोहिं नेक नहीं आवत ॥
वे तो लंगर कान्ह नहीं छाडे अपनी बान सौतिन के ग्रह जावत ॥
मेरे प्रतच्छ आय लाखन सौंहें खवावत पग परस परस निज चूक छमा करावत ॥
बार बार को रिसावन तानसेन ए नाहीं सोहावत ॥७६॥

जे गुण बिबेक कर साधे तें चतुर अति प्रबीन ह्वै रहत नीको ॥
तिनमें सुघ संगत अति बहुत पइयत है ताल तान की गहन हीं को ॥
सप्त सुर तीन ग्राम मूरछना श्रुति कोट तान ओडव खाडव संपूरन ही को ॥
बादी संबादी अनबादी बिबादी अंसन्यास तानसेन समझ जी को ॥७७॥

जे गुनीजन गुरु पावैं गावैं नीकी तान गुन सों रिझावैं ॥
जो बजावैं बीन अच्छी नीकी परमान सोच समझ तान छेत
ध्यान धरत जिया में जब सुर संगत पावैं दुरत मुरत सों वाको समझ आवे ॥
सप्त तीन अकइस बाइसो लागडाट खुली मुंदी दरसावैं ॥
सप्त ध्यान संगीत मत करके तब तानसेन प्रभु को रिझावैं ॥७८॥

जेइ जेइ बचन कहत हों री तोसों तेइ तेइ बचन तूं मान ले सयान ॥
मेरे कहे तूं उठ चल री ललना धरे ही रहेगो तेरे जिय को गुमान ॥

कल न लागे और तें तेरी तेरो है जीवन प्रान ॥
तानसेन तेरी कहां लों अस्तुति करे क्यों तूं जान हो रही अजान ॥७६॥

जै जै कर पूजो धोलागढ़ की रानी ने ॥
पान सोपारी धजा नारियल पहले भेंट भवानी ने ॥
तेल फुलेल अरगजा अंबर ले चढ़ावो वाक्बानी ने ॥
तानसेन यह प्रसाद मांगत दीजे बुध और बानी ने ॥
ब्रह्मा बेद पढ़े तेरे द्वारे शंकर ध्यान समानी ने ॥
बीरबल बंश ब्राह्मन कुल तारन तानसेन बरदानी ने ॥८०॥

जै गंगा जग तारनी जग जननी पाप हरनी बेद बरनी बैकुंठ निसानी ॥
भागीरथी विष्णुपदा पवित्रा त्रिपथगा जाह्नवी जग पावनी जग जानी ॥
ईस सीस मध बिराजत त्रइलोक पावन किए जीव जत खग मृग
सुर नर मुनि मानी ॥
तानसेन प्रभु तेरी अस्तुत करे तूं दाता भक्त जनन की मुक्त को बरदानी ॥८१॥

जै शारदा भवानी भारती बिद्यादानी महाबाक्बानी तेहि ध्यावै ॥
सुर नर मुनि मनि तोहिं कूं त्रिभुवन जानि जो जाकी मन इंछा
सोई सोई पुजावै ॥
मंगला बुध दानी ज्ञान को निधानी बीणा पुस्तक धारनी प्रथम तोहिं गावै ॥
तानसेन तेरी अस्तुत कहां लों सप्त स्वर तीन ग्राम राग रंग लय अच्छर आवै ॥८२॥

जै सूरज जग चच्छु जग बंदन जग त्राता जगत करता जगन्नाथ ॥
आदित्य सबिता अरक खग पूषा भानु दिवाकर जग कारज होय तेरे हाथ ॥
ज्ञान ध्यान जप तप तीरथ ब्रत संजम नेम धर्म कर्म सब उदै होय सनाथ ॥
तानसेन पै प्रभु कृपा कीजिए राग रंग स्वरन सों निसि दिन गाऊं तेरो गाथ ॥८३॥

जोबन के ओर तोर कैसे समझाय राखूँ मेरो कह्यो मान प्यारी आज तेरो दावरी ॥
तन मन धन नोछावर करहूँ बीत गई रैन तासों छूट गयो चावरी ॥
लाल मनावत तूं नहीं मानत उठ री गंवार नार घने समझावरी ॥
तानसेन कहें प्रभु से तजो मान हाथ से गंवाय लाल फेर पछतावेरी ॥८४॥

ज्ञानपति महेश विद्यापति गणेश पृथ्वीपति नरेश बलपति हनुमान ॥
सरितापति सागर गिरवरपति सुमेर राजनपति इंद्र धर्मनपति दान ॥
बाजनपति मृदंग पत्रनपति पान पंछिनपति गरुड़ भक्तनपति कान्ह ॥
साहनपति साह [illegible] नपति बान ॥८५॥

ज्ञानवंत को रस अगम बुध देनी तूं सबही अंगन मानि हंसबाहनी गिरा
[illegible] ॥
जेहि तोहि ध्यावे मन इंछा फल पावे साधक कंठ प्रानी करन बखानी ॥
तोसो तूंही और नाहीं विद्या दानी जे साधे आराधे त्रिहूं लोक जग जानी ॥
तानसेन को दीज्ये राग रंग बर बानी जौलों गंगा धरन ध्रुव पवन पानी ॥८६॥

टोडी रागणी अलापत गावत बीन बजावत उपवन मृगन रिझावत ॥
गांधार स्वर गृह प्रथम मूर्छना संपूर्ण तान सुनावत ॥
सप्त तान बाइसो अकइस उनचास को तान ताको ब्योरो जनावत ॥
उज्वल बसन पहर केसर करपूर चर्चित रतनन आभूषन
तानसेन तान साजत ॥८७॥

तखत बैठो और नर जग को कीनो निहाल ॥
छत्र चंवर ढरि ढारे मन मोती लगाए दिन दुलहा लाल ॥
बीजापुर [illegible] करनाटक लंक लाहौर तानसेन कहे एहो
जलालदीन जग कीने प्रतिपाल ॥८८॥

तखत बैठो महाबली ईश्वर होय अवतार ॥
देस देस के सेवा करत हैं बकसत कंचन थार ॥
जोइ आवत सोई फल पावत मन इंछा पूरन आधार ॥
तानसेन कहे साह जलालदीन अकब्बर ॥
गुनी जनन के काज करन को कियो करतार ॥८९॥

तन की तपत तबहीं मिटेगी मेरी जब प्यारे कूं दृष्टि भर देखूंगी ।।
जब दरस पाऊं प्रान पीतम को जनम जीतब सुफल अपनो लेखूंगीं ॥
अष्ट जाम मोहिं को ध्यान रहत वाको आली कोली भेटूंगी ॥
तानसेन प्रभु कोउ आन मिलावे ताके पांयन सीस टेकूंगी ॥९०॥

ताही बदो चतुर और जीवन गुन रूप जा बस करै प्राणपति प्यारे को ॥
जौलों न देखौं एक घरी आली तानसेन प्रभु दस भारे को ॥९१॥

तिमिर हरन प्रभातकर दिनकर तेजसकर जन मन दृग मनि बिभाकर ॥
सहस किरन भसम करन पतंग गुपत में को मिहिरबान महा मार्तंड महर ॥
तोहीं तें चंद तोहीं तें अग्नि पानि नाग तोहीं तें अनेक रंग तोहीं तें चोख तोहीं तें भोग गत तोहीं तें छूटत डर ॥
तेरे उगतें सब जग चंद्र भानु बिभावान सभी सविता कबिता तानसेन यह बिनती करत जौलों तूं नित ही नित रहे जो तूं सुर तौलों रहे छत्र धरे साह अकबर ॥९२॥

तुअ समान को दूजो रच्यो नाहन गुण समर्थ न आयो है धर्मराज गरीब निवाज ॥
तुअ सम और कौन महाज्ञान गुण निधान दाता बिधाता रचपच बिरंच ज्ञात समाज ॥
भरन पोषन दुख दारिद्र हरन पट दरसन निवास सकल साज ॥
तानसेन कहे प्रभु हिंदू सुलतान भक्त उधारन भगवान ताने प्रगट कियो सकल गुन साज ॥९३॥

तुम हो गणपत देव बुधदाता सीस धरे गज सुंड ॥
जेइ जेइ धावै तेइ तेइ फल पावै चंदन लेप किये भुजदंड ।
सिद्धेश्वरी नाम तुमारो कहियत जे दिद्याधर तिन लोक मध सप्त दीप नव खंड ॥
तानसेन तुमको नित सुमिरत सुर नर मुनि गुनी गंधर्व पंडित ॥६४॥

तूंही ब्रह्म तूंही विष्णु तूंही महादेव तूंही गुरु तूंही चेला ॥
तूंही सोना तूंही सोनार तूंही कसौटी कसनहार तूंही मंदिर तूंही मेला
तूंही अकेला ॥
तूंही रैन तूंही दिन तूंही पर्वत तूंही पाखान तूंही जल तूंही थल तूंही सों मेला ॥
तानसेन के प्रभु तूंही सबन में तूंही छैला तूंही अलबेला ॥६५॥

तूंही एक आदि निरंजन निराकार नाद रूप तेरो ही पसारो पुरो सब संसार ॥
अलख अव्यक्त जग बिस्तारन कर तूंही एक पाक परवर अपरंपार ॥
जल थल धरनी धवल तूंही पूरन सकल महिमंडल तेरो ही अधार ॥
तानसेन को दुख दारिद्र दूर करो करता हरता तूं करतार । ६६।

तैं कहूं देख्यो री नंद नंदन कान्ह मटुकी झटकि के पटकि गयो ॥
माखन चोरी चोरी मन लीन्हों कीन्हों नेकु न डर नट ज्यों उलटि के सटक गयो ॥
मारग रोक रहत खोरन में लजानो नैन सैन दे अटक गयो ।
तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक रस गोरस ले गटक गयो ॥६७॥

तैं कहूं देख्यो री बनमाली आली बंसी बजाय मन ले गयो ॥
धुन सुन कल न परत निसि दिन उन बिन नैन तरसत बिन देखे टोना सों
जंत्र मंत्र कर गयो
जब नहिं देखत छिन न सुहावत भावत नहिं गेह मेरे नयनन में अटक गयो।
तानसेन मैनन की मूरत कोटि बार डारों सांवरी सुरत जिय बस गयो ॥६८

तेरी आली रूप पिय के मन कों खेलौनो निसि दिन लिए रहत संग ॥
कबहूं बागो बनाय कबहूं बीरो खवाय कबहूँ निरख रीझ दिन दिन बढ़त तरंग ॥
तूंही तन तूंही मन तूंही कर रही पिय मन अरध ंग ।
तानसेन प्रभु प्रबीन के चित चढ़ी एसे जैसे ईस सीस बसत गंग ॥९९॥

तेरे तो सरस्वती घट घट पूर रही नाम धरायो बाक्बानी ॥
जल थल मध पइयत जालपा भवानी यातें कहियत तोकूं सर्बानी ॥
क ट कटानी मृडानी सत दीप प्रमानी एसी नग्र कोट रानी ॥
तानसेन को प्रसाद दीज्ये भवानी दयानी कंठ पाठ ताल स्वर दे महरानी ॥१००॥

तेरे नयन लौने री जिन मोहे श्याम सलोने ।
अति ही दीर्घ बिसाल बिलोल कारे भारे पिय रस रिझाये कोने ॥
बदन जोत चंद्रहूतें निर्मल कुच कठोर अति ठोने बोने ।
तानसेन प्रभु सों रतिमानी कंचन कसौटी कसौंने ॥१०१॥

तोकों प्यारे पठई किधों तूं आपते आइए मनावन ॥
प्रानेसुर के मुख की बतियां एन होवें री होनी के जानत जैसी तूं मोसों री लागी बनावन ॥
या मुख की अब कान न करत हो अनमिल पिय सों कह्यो न परत तेरी भौंहे तनावन ॥
कहा कहों राजाराम सो तोसी री पठावै हमारे ग्रह बनावन ॥
तानसेन कहे आवत अपनी औरन को चित लावत मुँह की बात कहलावन ॥१०२॥

त्रिपुरारी गरीब निवाज निवाजन समरथ पुरि रह्यो सब धाय धाय ॥
जे तोहिं ध्यावैं मन इंछा फल पावै तिहारो ही गुण गाय गाय ॥
सुर नर मुनि ध्यान धरतु हैं तिनहूँ के मन पाय पाय ॥
तानसेन के प्रभु तिहारी अस्तुति करूँ तिहारे ही मन भाय भाय ॥१०३॥

दया कर दयानी सो राग रंगन सो गाऊँ उत्तम बानी ।
अंबा दुर्गा भवानी राग तान ताल सहित सो अब होवै परम ज्ञानी ।।
उक्त जुक्त काव्य करत रिद्ध सिद्ध नव निद्ध आनंद दानी ।।
तानसेन प्रभु इतनों मांगत तुम पै सुख संपत बिद्या दे काशमीर रानी ।।१०४।।

दारु प्यावो कलाली अबहीं दारु प्यावो कलाली ।
तानसेन को खुमारी भई है अत बिहाली ।।
दुहाई साह जलाल की प्याला भर भर पिवावउ हो लाल दुलाली ।।१०५।।

दीजिए जू हमें ब्रज बसबो बांसरी न बसै बांसरी बजावन कान्ह हमें छिन दीजिए
बांसरी को टेर सुनत रहो न परत मोपै कान सुन सुन बन बसेरो कीजिए ।।
जेते उन सुर गाए तेते हम भेद लीने जहां राग तहां दाग रोम रोम छीजिए ।।
तानसेन के प्रभु माया कीनो मो पर अंग अंग चीर चीर सिंदूर मांग दीजिए ।।१०६।।

दीदार पुर नूर एसो जाहि दरस कों तरसत नैना मेरे लुबध रहे एसे जैसे चंद किरन पर चकोर
एक पल अंतर रह न सकों रहौं तुव पांयन समीप तन मन धन जोबन वंदौं कर
जाको अमृत बचन श्रवन सुन होत मेरे मन प्रान लेत झकोर ।।
एसो जो है तानसेन प्रभु मो दिन दिन सोतन मोव कोर ।।१०७।।

धन धन रूप तेरो बिरंच गुरु रचौ घेरदार घूँघटन मो चंद्र बदन
घूम घूम पगाधर चलत चाल गज गत धरन को ।।
घटाटोप घूंघट गरे सोहैं मुक्तमाल कटि किंकनी सुंदर बरनी घायल होत
लागत कुच कठोर श्रीफल से जंघ कदली मन मोहत संचरन को ।।
घेर आई चहुं ओर सभी सहेली रंभा सी लागत भुज मृनाल मृगनैनी मानो निसिकर किरन को

तानसेन प्रभु मन हर लीनो घायल करत रसिकन को राजा महाराजा बस कर
लीनो गिरिधरन को ॥१०८॥

धन धन भाग सुहाग तेरो तूं पिय के मन भाई ॥
धन जोबन तेरो री चतुर सुघर नार जो पिय तेरी करे मुख सों बड़ाई ॥
धन जनम जीतब धन तरुनताई ते रसबस कर लिए पिय सुखदाई ॥
धन धन तानसेन प्रभु को रिझाय लीनों तूंही सबन में देत दिखाई ॥१०९॥

धन धन मेरे भाग भोर भए आए लालन सब निसि कहां जागे प्यारे ॥
आलसवंत जंभात जात मलिन गात सांची कहो बात नंददुलारे ॥
लटपटी पाग खुल रही पेंचन सों अधरन पीक लीक धारे ॥
तानसेन के प्रभु तुम बहुनायक सांचे बोल सांझ के तिहारे ॥११०॥

धन भाग मेरी धन आवन धन धन पीत प्रेम भयो मन दरस देखत इन अंखियन
सों तन इन अंग संगतें बिरह गयो टर ॥
इन आनंदन आनंदी बांदी भई हों इन चरनन रहन कहत गार बगार अगसर ॥
जनम जीतब सुफल सखि मदनमोहन माया कीनी लीनी रसबस कर ॥
तानसेन प्रभु सुख के नैनन सैनन हाव भाव कटाछन सों मोह लीनी
जब मिट्यो दुख डर ॥१११॥

धरनी धरन अधरन दाता बिधाता विश्व भरन पोषन ॥
भागवंत नो भाग तरन तारन भक्त जन कूं सकल सुख करन मोखन ॥
आदि अंत तूंही रोम रोम रम रह्यो सबमें तूंही चर अचर थावर जंगम तोखन ॥
तानसेन तेरी अस्तुत कैसे करो अलख निरंजन निराकार ध्यान रहो तेरो दूरनहू
बोखन ॥११२॥

धीरे धीरे धीरे मन धीरे ही सब कुछ होय ॥
धीरे राज धीरे काज धीरे जोग धीरे ध्यान धीरे सुख समाज जोय ॥
धीरे तीरथ धीरे व्रत संजम धीरे ही करै सत्संग सेवा साध के बैठ मन को धीरे गम्बोय ॥
तानसेन कहें सुनो साह अकबर ऐसो बड़ो राज ऐसी बड़ी बादसाही धीरे ही ते पाई सोय ॥११३॥

धौरी धूमर पीयरी काजर कहे कहे टेरे ॥
मोर मुकुट सीस श्रवण कुण्डल दधुनंदन फेरे ॥
ग्वाल बाल सखा मंडल में आवत ब्रज नेरे ॥
तानसेन प्रभु सुख रज लपटानी जसुमति निरख मुख हेरे ॥११४

नगर नाद मध चक्र मत चौपर हाट बनायो ॥
सुर हाटी अक्षर जिनस लेत सुघरन हाथ बेचायो
सुर कोट बाल सुरत ले प्यादा गमक गस्त फिरायो
सुनत भाव सब गुनियन मिल के तानसेन निरख मंगायो ॥११५

नमो रट शंकरदेवा मन रे वृषभ बाहन तपस्वी प्रबल ईश्वर महा जोग ईशान ॥
गंगाधर जटा जूट ललाट ससि सोहे हरि ध्यान ॥
नीलकण्ठ उर शेष कराल माला बिभूति भूषन गरल पान ॥
गौरी अरधंग डंवरू कर पिनाक पान ॥
धन धन धन महादेव गुण सागर आगर गावत तानसेन बिनान ॥११६

नवरंगी नेई अंग कीनो गुनी कौन सा रे आराधे जो जाने अकबर ॥
कौन विद्या अन पूरो नर ऐसो कौन को पूरो
सरस्वती दढ़ श्रवन अंगी वृषभवाहन सीस जटा
कर डंवरू त्रिशूल खपर चंद ललाट बाघंबर ॥

गंग अरधंग वर लिए मुंडमाला सोहै त्रइलोचन तूही है हर हर ॥
और सुर नर मुनि गुनी गंधर्ब जे तोहिं जपत हैं
दूसर तानसेन बलवाय भंवर बिसतर तापर हित
निवाजनो बात तानसेन को देहु इंछा भर ।११७।

नाद अगाध बहुत गए हैं साध सुर नर गुनी गंधर्ब रचपच गए सिद्ध समार ॥
काहू न पायो पार कर कर थाके विचार कंवल अश्व तर शिव श्रवन धार
अंजनी नंदन कहे उचार सरस्वती तरन लागी हिय में दो तूंबा डार ॥
सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मूर्छना बाइस सुरत उनचास कोट तान असंन्यास
बिकृत धार ॥
छह राग छतीस रागणी औडव के भेद सुध मुद्रा सुध बानी तानसेन करो बिनान
जाको सूझत न आरपार ॥११८।

नाद अगाध संपूर्ण सोध साध समझ सोच ताल बिस्तार ओंकार ॥
सुर सवार सप्त सलिल सुर सुर सों संगत नाद विस्तार ॥
स्वर धाय राग ध्याय ताल ध्याय नृत्य ध्याय प्रकीर्ण प्रबंध मृदंग ध्याय
सप्त ध्याय बिचार ॥
गुनी गंधर्ब सुर नर मुनि पच हारो केउ न पायो तानसेन अपरंपार ॥११९॥

नाद गढ़ मन राजा राज सजत छहों राग उमराव बैठे बूर्ज पर नीके रच्छा करत ॥
नाना राग रागणी छतीस तुपक भर भर धर सोई इकइस मूर्छना गीत
नाल धारु धोवा माठा पर माठा चतुरंग जंत्र राग जल बैंत पारसी छंद रच्यो
शत जंजाल त्रेवट राग चंगी संगीत दारु तानन गजबांस ढांस कुमरा गोला भरत ॥
सप्त सुर सप्त पौर औड़व खाड़व किवाड़ आरोही अवरोही खाई बनाई कौल
तिलाना कोतवाल ध्रुवपद वजीर प्रबंध की निसानी आय लरबे को
धाय विद्या की लराई लरत ॥

तानसेन कहे एसो अगम अथाह जाको पार न पायो रचपच हारे
कहूं न लाग लगी कान पकर पकर धरत ॥ ॥१२०॥

नाद नगर बसायो सुरपति महल छायो उनचास कोट तान अच्छर विश्राम पायो ॥
गीत छंद तत बितत घन शिखर कंचन ताल काल के किवाड़ अलाप ताली
हीरा पै पाट नग लगे खरज जंजीर त्रे वट कुंजी तामें ध्रुवपद सो नग छिपायो ॥
आरोही अवरोही अस्थाई संचाई जवार अरब खरब और करोर मन मिलाय
कंठ लायो ॥
जौहरी मीयां तानसेन गाहक जलालदीन जिन याको कोल कीनों अकबर
पारखी पायो ॥१२१॥

नाद समुद्र अथाह सुनियत है ताके सहल करन को लागे गुनियन के मन ॥
ओंकार को जहाज कीनो तीन ग्राम सप्त सुर लै लै ताल मूल तें बैठो
सौदागर बन ॥
अकइस मूरछना बाइस सुर तेनेहूं मलाह भए बन ठन ।
ओडव खाडव संपूरन को ध्यान बिदा दो अंग्रेजी सन ॥
अलाप की धमक सों उनचास कोट तान तुपक छूटन लागी तानसेन जतन ॥१२२॥

नाद समुद्र अपरंपार काहू न पायो पार अपार भेद ॥
केते गुणी गंधर्व यक्ष किन्नर रच पच हार रहे सुर नर मुनि गुनि चारों बेद ॥
सप्त सुर शब्द ब्रह्म निरंजन निरंकार निरभय भेय रच पच कर थाके स्वेद ॥
तानसेन जन आरनी बिनय करत धन धन नाद अलख अभेद ॥१२३॥

नाद समुद्र परख न पायो सीखन पंडित कहायो धारु धुरपन मार जुगन ठगायो ॥
सप्त गुप्त सप्त प्रगट नायक गोपाल लायो ब्रह्मा बेद उचरायो सारंग बौरायो गायन
भाव तेरी मार जुगन ठगायो ॥

जिन तिन श्रेष्ठ गुनी ब्रह्म भेद रुद्र मुनि तें उपजत के गायो पाषान पिघलायो ॥
कहे प्रभु तानसेन जिन ही रच पच गायो तिनहीं रिझायो ॥१२४॥

नाद समुद्र पार नहिं पायो सुनियत गुनी कहायो प्रबंध छंद धारु धुरपत
मार्ग देसी द्वै विधि गायो ॥
ब्रह्मा बेद उचरायो सारंग बौरायो भरथ मन कालिनाथ हनुमत मत सप्त ध्याय गायो ॥
अनेक सृष्टि रच गए पच गए ब्रह्मा बिष्णु रुद्र महा मुनि प्रसन्न भए सारंग
बौरायो ॥
सप्त प्रगट सप्त गुप्त नायक गोपाल ध्यायो तानसेन ताको बैजू पाखान
पिघलायो ॥१२५॥

नीके नीके सुर गाय राग देखाय प्रथम कपट तज रंग जुगत लाय ॥
बुधि सरसाय काव्य बनाय खुली मुंदी मुद्रा तान सुनाय ॥
उरपति रप लागडाट देखाय ॥
सप्त स्वर इकइस मूरछना ताको ब्योरो जनाय ॥
और संगीत रत्नाकर के सप्त ध्याय समुझाय ॥
तानसेन के प्रभु को रिझाय संगीत बिद्या दरसाय ॥
गुनिन सों गुण चरचा कर परमेसुर के धरिए पांय ॥१२६॥

नींद न आवत पिय बिन देखे मोरी आली कैसे परे अब चैन ॥
घरी घरी पल छिन योंही बीत जात रहत मारग जोहत नैन ॥
बिन देखे कल न परत है मानो मन मोहत है मैन ॥
अब कबधों मिल प्रान प्यारो यह प्रभु तानसैन ॥१२७॥

नील बरन बहरे दुकूल रही घटा सी कामिन दामन लगत माधो रैन ॥
जाको पचरंग किनारी सोई मेरे जान धनक भई बंद श्रम जल की और बोलत
कोकला बैन ॥

पुहपन के हार छूट रम रहे सोई बग पंथ ऐसी लागी मेरे नैन सैन ।
यह छबि देख रीझ तानसेन के प्रभु ऐसी लागत मानों मूरत मैन ॥१२७॥

नैन सलोने री तेरे नैनन हो हरि बस कियो ।
दीरघ जमाल बिमल बिलोल कटाछन भर रहे तापर कजरा दियो ॥
भौंहे धनुष और चंद सों बदन और कंचन सों तन तेरो कंवल कली सों उठो हियो ।
तानसेन प्रभु जान बूझ कर बोलबे को नेम लियो ॥१२८॥

परस्पर दंपति मिल करत सिंगार एक अंगोछा ले पोंछत मुख एक सुधारत पेंच पाग ।
सब निस जागे प्रेम रूप रस मध छके ताते झुक झुक गरे लाग लाग ॥
ले दर्पन आपस में निरखत प्यारी प्यारी ले बीन बजावत गावत राग ।
तानसेन प्रभु दोनों चिरंजीव रहो देत दरस भक्तन को धन ध । भाग ॥१२९॥

पार नहीं पाइए गुण समुद्र अथाह कौन बिध तरिए कहा करिए कवन भांत जानिए ।
मन ज्ञान नेत्रन असुझ लागे सुर तान ताल किस तरह घट में आनिए ॥
जब उठत है ध्यान अति प्रान डरो जाय चरन धरो धाय कैसे गर ठानिए ।
कहे गुरु ज्ञान तानसेन सुरसती ध्यान धर अगस्त सों अचवानिए ॥१३०॥

प्रथम ही आनंद रच्यो नीकी घरी महूरत पंचो शब्द बजाए ।
देस देस के जाचक जेते आवत तेते पावत गज तुरंग नग दान मुक्ता बरसाए ।
अष्टो धरन मध्य नाम जोति अरिन मारबे को बिधि ने बनाये ।
तानसेन कहे जुग जुग चिरंजीव रहो राजाराम तेरो जस तिहूं लोक छाए ॥१३१॥

प्रथम उठ भोर ही राधे कृष्ण कहो मन जासों होवे सब सिद्ध काज ।
इहलोक परलोक के स्वामी ध्यान धरो ब्रजराज

पतित उधारन जन प्रतिपालन दीनदयाल नाम लेत जाय दुख भाज ।
तानसेन प्रभु को सुमिरो प्रात ही जग में रहे तेरी लाज ॥१२२॥

प्रथम नाद सुर साधे आराधे सोई गुनियन में गावे ।
सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मूर्छना तिनके ब्योरे तब कछु पावे ॥
आरोही अवरोही उलट पुलट के होत द्रुत मध बिलंबत आवे ।
तानसेन के प्रभु महा बाक्बादनी प्रसाद ते गान कंठ करावे ॥१२३॥

प्रथम नाद सुरसती गणपति बुध दाता ।
जाकी कृपा तें अन धन लछमी पालन करे सब जगन्नाता ॥
जोइ जोइ आवत मन फल पावत सब गुनियन को देत बिधाता ।
तानसेन प्रभु जुग जुग जीवो चरन कमल रंगराता ॥१२४॥

प्रथम मंजन अंजन कर पहर चीर चार ।
आली जे दिल लेले कमल बहुतेहिं आभूषन रूप सुधा कंठमाल रतन
मुक्तन के हार ॥
याही अति भायो दाद रूद कटाच्छ सलामुन अलकें कन नाहत से पिय प्यार ।
तानसेन नग रतन जटित सोरह सिंगार किए नर लोक इंद्र लोकहूँ
नहीं नार ॥१२५।

प्रभाकर भास्कर दिनकर दिवाकर भानु प्रगटे बिज्ञान ।
तेरे उदै ते पाप ताप छूटे कर्म धर्म प्रेम नेम होय गुरु ज्ञान औ ध्यान ॥
जगमगात जगत पर जग चक्षु जोति रूप कस्यप सुत जगत के प्रान ।
तानसेन के प्रभु उदै जगत कपाट खुलत दीजिए दिवा कृपा निधान ॥१२६॥

पाक मोहम्मद अल्ला रसूल तेरो ही नूर जहूर ।
धन धन परवरदिगार गुनहगार तूं कृपन तूं हीं जग रम रह्यो भरपूर ॥

बेंच न बेंच गुन बेगुने बेनमून अव्वल आम्बर तूंही निकट तूंही दूर ।
जिन देखूं तिन तूंही तूंही ब्याप रहो जल थल धरनी अकास तानसेन
तूंही हजूर ॥१२७॥

पीके आवन की सुनी प्रथम अस्नान कर मानो मकुच बादर मे बरस ऊघर गए
ता मध बदन चंद से निरख री पूरन सेन वर यह मानों चांदनी निसि खेल रही ।
फूलेल सने बार मानो रैन भीनीं सो लागत मांग मुक्ताहल और
आभूषन उडुगन से लागत इंद्र अपसरान की सोभा इन आगे ना
ठिग एक तिल रही ॥
मुड़ मुसक्याइ देखत भुज बदन हरिन की सी मज्जन दसन
चमकत अधर पान लाली प्रतिबिंब देखियत ता मध मानो
रत हैं गए काम मूरत की चोप में आप राम मिल रही ।
तिलक दामन किनारी चंदन रस सों लागत अंजन नैन
नेह स्याम प्रगटी चरन महावर मानों कंवल देखरी सी
लागत एड़ी मानो कुंज कोमल पराग कंचन पायल की
कला कंठ तानसेन गाय रही ॥१२८॥

प्यारे तूंही ब्रह्म तूंही बिष्णु तूंही रुद्र तूंही गुरु तूंही चेला ।
तूंही जल तूंही थल तूंही प्रबल तूंही अबल तूंही छैल तूंही अलबेला ॥
तूंही ऊंच तूंही नीच पाप पुन्य तूंही बीच तूंही मों मेला ।
तानसेन कहे प्रभु कहां लौं बखानूं तूंही बहुत तूंही अकेला ॥१२९॥

प्यारे तूंही ब्रह्मा तूंही बिष्नु तूंही रुद्र तूंही [illegible] तूंही [illegible] तूंही [illegible] ।
तूंही जल तूंही थल तूंही पवन तूंही आकास तूंही अधूरा तूंही पूरा ॥
तूंही [illegible] तूंही [illegible] तूंही रोवन तूंही हंसन तूंही उठन बैठन चलत
तूंही दूरा ।
तानसेन के प्रभु एक ही अनेक होय जग में व्याप रहो हजूरा ॥१३०॥

बर्णं में पवित्र ब्राह्मण पशुन पवित्र गऊ भोजन पवित्र घृत सार ।
जल में पवित्र गंगाजल देवन में पवित्र बिष्णु महेस तृन में पवित्र कुस तार ॥
धातु में पवित्र सोना पत्र में पवित्र तुलसी पत्र पुहपने पवित्र पारिजात पंछिन
में पवित्र हंस प्यार ।
कहे कविता नवरस में पवित्र तानसेन नाम में पवित्र हरिनाम उर धार ॥१४१॥

बरसाने तें आए अरसाने हम जाने जू लछन तिहारे पहचाने ।
कहूं कज्जर कहूं पीक लीक अनगन स्वभावन मोपै जात बखाने ॥
नयनन नींद ध्यान मन हृदय बसत तीय ताही के लगत गुन गाने ।
धन्य तेरो नेह तानसेन प्रभु ऐसे नटनागर को जल कर नाच नचाने ॥१४२॥

ब्रजराज सांवरे मुरली में गावत नीकी तान ।
धुन सुन थकित भए सुर नर मुनि देव गुनी गंधर्वं चकित ह्वै जू बिमान ॥
उरपति रप लागडाट ढुरन मुरन सुर प्रमान ।
तानसेन नैन सैन बैन दैन गायन करत राग रंग बंधान ॥१४३॥

ब्रह्मागत अपरंपार न पाऊं ।
पृथ्वी पार पताार ढंढोरा और गगन लों धाऊं रे जोलों न होय सुदिष्ट तुमारी
मन इंछा फल नहीं पाऊं ॥
तीरथ प्राग सुरसती त्रिबेनी सब तीरथ पोखर गुरु द्वार जाऊं ।
भागीरथी गोमती और गंगा तानसेन गावै हरी के द्वार चाऊं ॥१४४॥

बाक्वानी बराही वैष्णवी ब्राह्मी भैरवी दयाली दया कर दीजै ।
महेस्वरी मैनात्मजा सुरसरी पाप नासनी महामाया मृडानी तानसेन
सेवक पर सुदृष्ट कीजै ॥१४५॥

बागे बनाए आए हो पिय लटक पाग की चटक अटकत मन ।
लटक लटक चलत चाल मटक मटक मुसक्यात अलसाने सरसाने नैना री

नैना नींद न आवै निपट सोभत नेक छुब छुत्र तन ॥
तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक रस बस कर लीनो तन मन धन ॥१४६॥

बाजे नीकी घुंघरिया ठुमकत चाल सहेली ।
अनुपम चाल चलत मतंग गत मानो पग परत बेली ॥
ज्यों जल में प्रतिबिंब देखियत चंद किरन तैसी नेह नवेली ।
ते रस बस कियो तानसेन प्रभु स्वानन्दाता पिय पाऊ अकेली ॥१४७॥

बादर आए री लाल पिया बिन लागे डरपावन ।
एक तो अंधेरी कारी बिजुरी चमकत उमर घुमर बरसावन ॥
जब ते पिया परदेस गवन कीनो तबते बिरहा भयो मो तन तावन ।
सावन आयो अत झर लावत तानसेन न आए मन भावन ॥१४८॥

बादर उन्ह आये सो पिय बिन लागे डरपाए ।
एक तो अंधियारी कारी लागत डरावन तैसे ही अवधि बीतन लागे
अजहूं न आए ॥
दादुर पीक मोर सोर करन लागे बिरह तन लागे डराए ।
तानसेन के प्रभु तुम नीके जानो भली सुध लीनी मोरे धाए ॥१४९॥

बादर उन्ह आए सो पिय बिन लागे डराए ।
एसी अंधियारी कारी डरपावनी लागत जिय को भारी ते समै अवध बचन गए
हरि न पाए ॥
दादुर पिक मोर सोर करन लागे बिरही तन लागे डराए ।
तानसेन के प्रभु तुम नीके जानो भली सुध लीनो सुध सो अजहूं न आए ॥१५०॥

बानी चारो के ब्योरे सुन लीज्यै हो गुनी जन तब पावै यह बिद्या सार ।
राजा गुबरहार फौजदार खंडार दीवान डागुर बकसीनो हार ॥

अचल सुर पंचम और चल स्वर बाद करत रिषभ मध्यम धैवत निषाद गांधार।
सप्त तीन अकइस बाइसो उनचास कोट तानसेन आधार ॥१५१॥

बिद्या में नाद बिकट शास्त्र न में न्याय बिकट गढ़ में लंका बिकट लोक में बिकट
सुरलोक देव बिकट हर जानिए।
पशुन में बिकट सिंह मुनिन में बिकट दुर्वासा मणिन में बिकट कौस्तुभ मणि
पंच भूत में बिकट अग्नि मान ॥
पंछिन में बिकट गरुड़ उदधि बिकट छारो दिक अवतार बिकट नरसिंह मीन बिकट
मकर मीन बिकट संगीत प्रमान।
कहत 'कबितान बरस' सुर बिकट नाभि गायन तान बिकट तानसेन जाको
सुजश बखान ॥१५२॥

बिरह की बेल बोइनि अंखियन मन में।
सोच सोच जल अंसुअन पानी री दिन दिन होत चाह नई ॥
उलहत पातन नये सो बूंद पताल गई।
तानसेन प्रभु तुमरे दरस बिन सब तन छीन भई ॥१५३॥

बेदन दरद दरि करो हज़रत मीरा अवर कहो सुमरन हज़रत
इमाम काम मरसद सांचे हो तुम पीर।
जो फल मांगे सो फल पाए राजपाट सुख तरीर ॥
तानसेन प्रभु रहीम करम कीजे पापन रहत शरीर ॥१५४॥

भक्त ज्ञान भक्तन की सेवा कर रे जब तेरी भक्ताई पूरन हो
सुमरन कर हरि को।
कौन भरम भूलो भटकत फिरत अष्टजाम याद रख राम कृष्ण को
पार ब्रह्म परमेसुर को ॥
निरंजन और निराकार अलख जोत जगतपति भक्तबछल गिरिवर धर को।

तानसेन के प्रभु ध्यान धर निसि दिन घरि घरि पल पल
छिन छिन या विश्वंभर को ॥१२५॥

भांत भांत के भांड घड़े एनो विधना कुंभार ।
एकन उत्तम न्यामत एकन मधम न्यामत एकन निकृष्ट न्यामत एकन राख्यो
न्याली कर मिकदार ॥
एकन देत रीझत एकन लेत रीझत एकन करोरन दए एकन को हाथ पै खपर
देय मांगते भीख द्वार द्वार ।
एकन को नरक एकन को सरग देत तानसेन प्रभु रच्यो संसार ॥१२६॥

भोर भए भैरव गावत भर मुरली में श्रीवृंदावन मध बनवारी
सप्त स्वर तीन ग्राम अकइस मूरछना लागडाट उरपति रप भारी ॥
मधु माधवी भैरवी बंगाली बरारी सैंधवी यह भैरव की संग नारी ।
तानसेन के प्रभु तानन मानन मोह लीनी ब्रज नारी ॥१२७॥

भोर ही राग अलाप सुनाय के नीकी नीकी तान ॥
खरज रिषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषाद सप्त सुर गान ॥
उरपति रप लागडाट देसी मारग कृष्णाय असंन्यास श्रुति मूर्छान ॥१२८॥

भोर ही भैरव राग अलापो अहो प्यारे ऐसी में आन ।
खरज गांधार रिषभ पंचम मध्यम निषाद धैवत तान ॥
आरोही अवरोही अस्थाई संचाई ताल काल और मान ।
उरपति रप लागडाट देसी मारग तानसेन सुनो साह अकबर प्रमान ॥१२९॥

मंजन कर प्रात चौकी नवन की दई बिछाय तापर बैठी प्यारी ।
अलक ढिग कपोल डार कच छिटुर रहे मानो फुलवारी ॥

जो तुम पै प्यारी किरनहु कर जूथ ता ढिग मुक्ता की जोत चंदहूँ ते उजियारी।
रच पच विरच बनाय बिधना संवारी लाह की अंगिया उड़ी सारी ॥
उनकी छबि न्यारी अनवट बिछुआ शब्द बोलत झनन झनन झनकारी।
बाजूबंद पहुँची अबोस को हीरे जड़ित तामध्र मोती मानो लेते हस्त रंग
चंपक की चंदहार और काजर रे सुभेष बनो तिय को सिंगार॥
पान खाए पीक डार लें दर्पन मुख निहार आइहे इंद्रवधु अनारत बसत सिंगार।
सर्ग चली गरे हार अगन रिझय तानसेन प्रभु लेहे करि कृपा बलिहार ॥१६०॥

मंदिर मणि दीपक काया मणि जीव रजनी मणि चंद्र दिन है जू भान।
फूल मणि पंकज मणि कल्पवृक्ष बिद्या मणि भोज बिक्रम जनन मणि जान॥
बेदन मणि सामबेद राजन मणि राजा राम आनंद मणि सुख निधान।
सरिन मणि गंगा बीर हनुमान गुनियन मणि तानसेन गुरुन मणि ज्ञान ॥१६१॥

मनमोहन मनमानी याते तूं प्रबीण सयानी।
संदर बदन चंद्रकला लजानी तोसी तूंही तिया और नहीं तिहूँ लोक सानी॥
तानसेन चिर चिर जीवो ऐसी प्रीत रही जौलों जमुन गंग पानी ॥१६२॥

मन ही मन में तू रार रही धर आप अपबस कर के सबन तें दुराय बिराय
कर सही सो अरगट परगट नैन बताय देत।
प्रानेसुर की प्रीत अति गुपत कियो चाहे अत री तेरे दगपाल तें अनजान
जान लेत॥
जौलों मैं न सिखाई तौंलो आई नेह नजर जनम जनम हित समेत।
तानसेन प्रभु के रंग रँगे जे अरन बरन सेत असेत ॥१६३॥

मरगजे बागे रात के जागे छूटे बदन अरसात ॥
जंभात बहियां गहन आगे आवत सकुचन लागत ॥

छियो छाड़ों अंचरा सो हो कुकिए में आनि सुकावत ॥
लाख जो जतन करो तउ न बोलिहौं लाल ए तुम बातें करके लावत ॥
तानसेन प्रभु खन खन तुम इनहि रिझाए ए कहा पावत ॥१६४॥

महम्मद नबी हबी अल्लह के साह मर्दान अली वली मरद कुफ़र [illegible] हज़रत
हस्सन बुज़रग इमाम ॥
संसार के साहब हुसैन सैयद सहज़ादे जे बखानदीन दीन परवां महम्मद बाक़र
करतार कीने मन चीने करत काम ॥
हज़रत जाफ़र सादक साचो सीदक इमाम मुसिकाजम हज़रत अली बिन मुसीर
रज़ा जाको दरस देखे जात दारिद्र नाम ॥
हज़रत तक़ी अलीन की हज़रत हसन असगरी इमाम महंमद मेंदी साहब ज़मान
दे सुख संपत संतन राखो त्रिलोक माम ॥
ख्वाजा पीर निज़ामदीन औलिया तूं सत्तार परवरदिग़ार करीम रहीम दरीयाई पीर
सेमन गाज़ी धाम ॥
हैदर रसूल ग़ौस कुतुबदीन अल्ला फ़क़ीर तानसेन को दीजे राग रंग तीन
ग्राम ॥१६५॥

महा गनेस कहत सुख चैन ।
भेटतहूं न छाड़े भावे साध थिरात लागे चित्त कैन ॥
नाम लेत कटत पाप अन धन लछमी देन ।
तानसेन सेवक पै कीजिए कृपा ज्यों कल्पवृक्ष कामधेन ।१६६॥

महादेव आदिदेव दिवादेव महेस्वर ईस्वर हर ।
नीलकंठ गिरिजापति कैलासवासी शिवशंकर भोलानाथ गंगाधर ॥
रूप बहु रूप भयानक बाघंबर अंबर खपर त्रिसूल कर ।
तानसेन के प्रभु दीजे नाद बिद्या संगत सो गाऊं बजाऊं बीन कर धर ॥१६७॥

महादेव देव आदि देव महेसुर ईसर हर ।
शंभु शतकंठ ईस विरूप डंवरू कर त्रिपुरार त्रिलोचन गंगाधर ॥
नीलकंठ भस्म भूषन वृषभ बाहन पारवती बर ।
जटा जूट बहु रूप शिव जो गांडव धरत तानसेन को दीजे सुख संपत बर ॥१६८॥

महादेव देव देवनपति सुर ईश्वर शंकर पारवतीपति दुखहरन ।
बामदेव आदिदेव जटा जूट धुरजटी डंवरू वाजत डिमडिम सब
सुखकरन ॥
रूप बहु भूतनाथ भुवनेश्वर भोलानाथ गौर बरन ।
तानसेन के प्रभु रीझत तुरत ही देत मन इंछा करे काज असरनसरन ॥१६९॥

महादेव देव देवनपति ईस सुरेस नीलकंठ शिव पंचानन पारबतीपति दुखहरन ।
बामदेव महादेव जटा जूट गंग शिखर डिमडिम डंवरू बाजत रीझत
सुखकरन ॥
वृषभवाहन जटाजूट गंग शिखर बहु रूप द्रुम द्रुम डंवरू बाजे त्रिसूल धरन ॥
तानसेन शिवशंकर दया कीजे भोलानाथ जगत पोषन भरन ॥१७०॥

महावाक् बादिनी सनमुख हूज्यै अब हूज्यै हो ।
याहीं ते त्रिभुवन मानी याते तूं भवानी जो जाके मन इंछा सोइ सोइ पज्यै हो ॥
रिद्ध सिद्ध तबही पाइए मात जब तुअ चरन छूज्यैं हो ।
तानसेन यह प्रसाद मांगत जहां तहां जुरत फुरत तहां तहां रस रंग की करतु
जै हो ॥१७१॥

माइ री महा कठिन भयो मिल बिछुरे की पीर ।
घरी घरी पल छिन जुग से बीतन लागे नैनन भर भर आवत नीर ॥
जब से प्यारो भयो न्यारो कल ना परत मेरी बीर ।
तानसेन के प्रभु बेग आवन कीनों जियरा धरत नहीं धीर ॥१७२॥

माता जालपा भवानी जाके नगार लोक नर लोक भुव लोक इंद्र लोक त्रिभुवन
मांनी सर्बांनी सकल जगत जानी और दारिद्र भो हरनी महारानी ।
जे मन बच करम कर तुमकूं ध्यावे तिन कूं बुध दानी एसी प्रसिद्ध महावाक्
बानी ॥
असुरन दलमलन अंबे आदि शक्ति सुर नर रटन रहत गुनी ज्ञानी ।
तानसेन सो मनमानी करम कर तूं दया कर दयानी तान ताल अछर दे नारदा
भवानी ॥१७३॥

मानों त्रिधु घूंघर वारे वार डार छतरी बनाए हैं ।
टीका कीने जान चारों बिध खंजन नैन मीन मृग को लजाए हैं ॥
नासा कीर दसन दाड़म कुच श्रीफल से दरसाए हैं ।
तानसेन प्रभु को रस बस कर लीने चंद्र बदन देखाए हैं ॥१७४॥

मुरारे त्रिभुवनपते इंद्र सुरपते शेष नाग हैं फनपते ।
क्षीर उदधि सलिलपते कौस्तुभमनि रतननपते दिनकर दिननपते कमलापते ॥
ससि उडुगनपते हनुमान बलनपते नारद भक्तनपते बाजन मृदंग बीनपते ।
चिर चिरंजी रहो साह अकबर नरनपते तानसेन ताननपते ॥१७५॥

मुरलिया कैसे बाजे रस सानी गरजि धों करे अमृत बानी ।
अति ही नाद प्रबाह ताल मूल जिय धारें एसो रस कहां तें उपजत एसी स्यानी ॥
सप्त स्वर तीन ग्राम अकईस मूर्छना यह गायन सब गानी ।
तानसेन के प्रभु मुरली अधर धरें जाकी ब्रह्मलोक राजधानी ॥१७६॥

मुरली की धुन सुन चकित भई सब ब्रज की नारी सुध न रही कछु
अपन तन मन घर की ।
टूक टूक कर रीझ रीझ कर लेत बलाई कान्हर हर की ॥

ऐसे सुरन बजावत जामें नीके सात सप्तक तान बिरह भरी सुर की।
जिनहूं सुन्यो तिनहूं सुख पायो तानसेन प्रभु तान राधावर की।१७७।

मुरली बजायो रिझायो मनमोहन मधुर स्वर तान।
सप्त तान अकइस बाइसो लागडाट और मान ॥
ठाट भेद मिलपत आतक खानक स्वरांतक ओडव खोडव पूर्ण आन।
तानसेन प्रभु संगीत गत ले नृतत कर हो सुगान ॥१७८॥

मुरली बजावे आप न गावे नैन न्यारे नचावे यह सबही तियन के मन
को रिझावे।
दूर दूर आवें पनवट काहू के घट न दुरावे रसना प्रेम जनावें ॥
मोहिनी मूरत सांवरी सूरत देखत ही मन ललचावे।
तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक सबहिन के मन भावें ॥१७९॥

मेरे मन बौराय राखो इन गोबिंद नैनन।
हों पाछे पछताय रही वे तो अंतरजामी स्वामी कहियत हैं मन बस कीनो मैनन ॥
सूरत ठगोरी मोहे ठग जो चले सो पीर हरन चिए मो तन सूखे इन नैनन।
तानसेन को प्रभु सुख सागर सुनो वे देखे ही निहचे चैन न ॥१८०॥

मेरे मन मांह हरि नाम जिन रच्यो अखिल धाम काम क्रोध तज लोभ बह्यो
जात संसार।
जिन रच्यो स्वर्ग मृत्यु और पाताल निरंजन सोई साकार निस दिन जप ले श्री मुरार।
दीनबंधु दीनानाथ काटत दुख दंद फंद ताहि घरी पल छिन न बिसार ॥
तानसेन कहे निरमल रहिए भजिए भगवान मानुष जनम नहीं बारंबार ॥१८१॥

मेरो मन मोह लीनों सुंदर नैन रैन चैन परत नाहीं बनवारी।
मेरे तो एक ध्यान तुमारो तुमरी गति तुमही जाने अवगत गत गिरधारी ॥

जप तप नेम कछु न जानूं नागर नंदकिशोर अब तो कोटिन केटि जतन कर हारी ।
प्रानप्यारे दरस दीजे सुख संपत आनंद कीजे तानसेन सरन तेरे एहो
कुंजबिहारी ॥१८२।.

मैं तोहे पूछूं गायन बजायन कौन गुरु ज्ञान संगी कौन मूर्छना कौन सुर
कौन ग्राम बिस्तार ।
कौन मूल तान कौन प्रथम उचार कौन गुरु को प्रकार ॥
कहां राग बसत कहां रंगत संगत कौन नाड़ी में पवन धार ।
कहां तीख चोख नेम बरस उरपति रप लागडाट आतक स्वातक ओडव
खाडव संपूर्ण तानसेन तत बितत घन शिखर तार ॥१८३॥

मोर मुकुट पीत बसन सोहत मोहत नवल छैल नंदलाल ।
जमुना के तट तट नट ज्यों नाचत गावत तान रसाल ॥
तन मन धन नोछावर करहूँ व रूं मोतिन थाल ।
तानसेन प्रभु तुमरे दरस कूं सुंदर रूप गोपाल ॥१८४॥

मोसों अवधि बद गए गुंसाई रहे कवन भांत ।
रैन दिना मग जोवत जात एसी कौन तिय जेह रीझाय कीनो मात ॥
अंजन धर भाल महावर नवल तिया ललचात ।
तानसेन प्रभु वहीं सिधारो जहां जागे सारी रात ॥१८५॥

मोसों जे अवधि बद गए सांझ के भोर ही आए ।
एसी काहू चतुर नार तुम रसबस किए एसे नेह नए ॥
अधरन अंजन भाल महावर सिन तिलक ठए ।
तानसेन प्रभु जावोजो जावो नई नार रंगए ॥१८६॥

मोसों ज्यों अवध बद गए सांझ को यहां आए भोर भए ।
एसी को चतुर सुघर नार जिन तुम बिरमाए एसे सुख दए ॥

अधरन अंजन कहूँ पीक पलक लीक और न सों चित हित बहु भांतन सों ल॰
तानसेन के प्रभु वांही पांव धरिए जहां किए नेह नए ॥१८७॥

मोहन मैं वारी वार डारी नार जिन करो कपट की बातें ।
रहत ज्ञान ध्यान तिहारे नाम को सुमरन है दिन रातें ॥
घड़ी पल छिन रहो न जात मोपै करत रहत तेरी बातें ।
तानसेन प्रभु कृपा करो मोपै नेक चितवो चहातें ॥१८८॥

मोहन लाल दयाल कृपाल कृपा कीजे तुम्हें कहां हम पावें ।
जो अब कृष्ण कूबरी चाहे ते हमहूं कूबरी ह्वै आवें ॥
लिख लिख जोग पिटरिया भेजत काहे कूं पतिया लिखावे ।
तानसेन प्रभु दासी ह्वैके हमहूं मथुरा जावें ॥१८९॥

मोहन सृष्टि के आधार तन को अब राख लीजे गोपाल ।
नैन प्रान सुख दीजे तन तें दुख दूर कीज्ये इतनी बिनती मेरी सुन लीजे हाल ॥
पतित पावन करुणा सिंधु दीन दुख भंजन अनेक रूप लीलाधारी भक्तबछल जुग
जुग भए कृपाल ।
मदन मोहन मधुसूदन मुरार गज सुदामा द्रोपदी सहाय करि तानसेन प्रभु भक्त
प्रतिपाल ॥१९०॥

मोह लेन पिय को मन तेरे नैना प्यारे ।
खंजरीट मृग मीन हीन तें बिन काजर कजरारे ॥
भौंह धनुष तिरछी चितवन नासिका सुकवारे ।
चंद्रबदनी कटि केहरी रंभा जंघ संवारे ॥
तानसेन प्रभु प्यारे को रस बस कर लीनो जोबन भार संवारे ॥१९१॥

मोहे जागत भरे चैन न रही नैनन तामें ते सुपने में करा समाइए ॥
तानसेन प्रभु समझ कैसे कीजे भोग विलास कठिन सुध बुध सबहीं ले री पुनि
अमृत भेंट सोना दे रतन जड़ाइए ॥१६२॥

मौन दिन ख्वाजा नाम लेत दुख टरत सरस होत सुख परसत ही दरगाह ॥
रोशन जम्बीर दस्तगीर हाज़ी उनके करत मन चिते काजा ॥
चिस्ती चिराग़ अत दीनि उजारे भार तोरे रटत कीनो इसलाम कुफ़र भाजा ॥
तानसेन सेवक को रहम कर कीज्ये दीन इमान गरीब निवाज सी करता जा हित
पतराजा ॥१६३॥

यह कमाल कुदरत कादिर तेरी स्वत ही कहो यल ली यला ॥
सबहीं में छायो याही तें पायो है कालु अला ॥
दो दो ते सब ही की दोउ आप बनाय राखो लेले के महा मरद बिल्ला ॥
तानसेन प्रभु पै बिल्ला बिल्लातिल्ला सम बिल्ला ॥१६४॥

यह लराई लरो रे गुनी ज्ञानी सुर समसेर मजलिस मैदान ।
अलाप चारों तुरंग चढ़ के धुरपद नंगी तरवार ता रसी पर कर रसना कटारी काढ़न
जब सुख ज्ञान ॥
कहो राग उमराव नाद गढ़ को परीछक छतीस भार्यो तुरक भर धरान ।
धारु बाग धोवा माठा जंतु सुर दारु तानसेन यह प्रमान ॥१६५॥

या अल्ला मोमन तूं आपसो एलें कर लगा ॥
हों हीन मत तूं प्रवीन सुमत दे कुमत भगा ॥
जिन तेरो नाम लियो तिनको दुख गयो सुख ध्यान पागा ॥
तानसेन मांगे सुख संपत संतत तानन रंग रंगा ॥१६६॥

रंग कुरान सों गाय सुनावें नाम कुन सुर संगत लावें ॥
दुन्न निपुन सँपुन सों भेद बजावें जब ल[illegible] मन मान न दुखावें

अपने मुख ते न गुनी कहावें ताल मूल को ब्योरो न पावें ॥
तानसेन कहे होवें गुनी जन छत्रपति अकबर को रिझावें ॥१९७॥

रहत न अटके नैन अपनो सों दुराव कियो चाहत होवो देत जनाय ॥
जाके रंग रस रिझे भीजे समझाऊं नाहीं समझत हिल मिल देत वाही तानसेन बनाय ॥१९८॥

री या तन की मत कर मान मन में नहीं चाहे मन मन करत हो मान ।
मानो मेरी मति मो हनी माननी मो मति मन में मान मत करो मोहन सो मान ॥
मुर मुर चितवत मन ही मन भावन को माधो मुकुंद वे हैं मथुरापति मुरार मरदान ।
मानरी मान मेनका सी माधुर्य तानसेन प्रभु मन मोहन को मान ॥१९९॥

रूप निरंजन अंजन रहत ताहि बरनबे कूं उदित भए छहो शास्त्र अठारहो पुरान ॥
ताको भेद नहीं पावत शिव शनकादिक ब्रह्मा नारद शेष रटत केउ ब्रह्मा शिव घट घट ब्यापक को काट ब्रह्मा रचत देख लें हो बुधवान ॥
आदि अंत मध्य वोही त्रइलोक चराचर वाही की इंछा ते करत बिनान ॥
तानसेन के प्रभु सब जग व्यापक हो पूरन ब्रह्म अबिनासी निरंकार अबिनासी भगवान ॥२००॥

रूम झूम भर आए री नैना तिहारे ।
बिथुरी सी अलकें स्याम घन सों लागत झपक झपक उघरत मेरे जान तारे
अरुन बरन नैना तेरे तामें लाल डोरे तापर अंबुज वार वार डारे ।
कहे मीयां तानसेन सुनो साह अकबर उपमा कहांलौं दीज्ये बिन अंजन कजरारे ॥२०१॥

रेमन जब लग पिंड प्रान तब लग जग नातो सबहिन सों ब्यवहार ।
जब लग जीजिए तब लग हरि नाम लीजिए रागरंग कीजिए यह तन मन नैन
प्रान जात न लागे बार ॥
बालापन तरुणापन और बृद्ध अवस्था पुन पुन जनम मरन होत संसार ।
तानसेन कर ले ध्यान बिश्वंभर को यही पूंजी यही जमा यही है सार ॥२०२॥

रैन बिहाय गई भोर भयी होरी कहां खेले प्यारे ।
कौन नवल तिय पिय बिलमाए गिनत बीते मोहे सब निसि तारे ॥
कहूं कज्जर कहूं पीक लीक अधरन अंजन भाल महावर धारे ।
तानसेन प्रभु तुम बहु नायक सांझ के गए हो सिधारे ॥२०३॥

लंगर बटमार खेले होरी ।
बाट घाट कोउ निकस न पावै पिचकारिन रंग बोरी ॥
मैं जू गई जमुना जल भरने गह मुख मींजी रोरी ।
तानसेन प्रभु नंद को ढोटा बरज्यो न मानत गोरी ॥२०४॥

लंबोदर गजानन गिरिजा सुत गनेस एकरदन प्रसन्नबदन अरुण भेस ।
नर नारी गुनी गंधर्ब किन्नर यक्ष तुंबर सिद्धि ब्रह्मा बिस्नु आरन पूजवत महेस ॥
अष्ट सिद्ध नव निद्ध मूषकबाहन बिद्यापति तोहि सुमिरत तिनको नित मेष ।
तानसेन प्रभु तुमही कूं ध्यावे अबिघन रूप बिनायक रूप स्वरूप आदेस ॥२०५॥

लाल अरसाने भोर ही आए ।
कौन बाम हित चित सों चाहे सगरी रैन जगाए ॥
ढिग ढिग काजर फैल रहो हैं जावक अधिक सोहाए ।
तानसेन के प्रभु वहां ही सिधारो नवल तिया मन भाए ॥२०६॥

लाल मया के बोलाई सौतन दुख पायो ।
जे मेरी हितू तिनके आनंद भयो मृदंग बजायो मन भाए मंगल गायो ॥
पिया की मया मोपे कहि न परत हैं सब तियन छाड़ मेरे गेह आयो ।
तानसेन के प्रभु पलकन सो मग झारी जीवन जनम सुफल करायो ॥२०७॥

वा दिन के बल बल जैए री जा दिन पीतम तै होय मिलन ।
तन मन धन नोछावर करहूं चरण कमल पांवड़े बिछौहूंगी नैनन पलन ॥
अनेक दिनन से प्यारे मोहे मिलहैं लेऊंगी बलैया दोउ करन ।
तानसेन के प्रभु सुधा की दृष्टि करि मोर मुकट की हलन ॥२०८॥

वा दिन के बल जइए री जा दिन पीतम होय मिलन ।
तन मन धन सब वारूंगी इन चरन कमल पर पांवड़े बिछाऊंगी नैन पलन ॥
कारन मोहन अपनों ही गरे डार लैहें सरस रस ललित अधरन ।
कहे मीयां तानसेन कबधों मिले आय दरस परस इन संजोगन ॥२०९॥

शब्द प्रथम ओंकार वर्ण प्रथम आकार जाति प्रथम ब्राह्मण प्रणाम कर लीजिए।
देव प्रथम नारायण ज्ञानी प्रथम महादेव क्षमा प्रथम धरनो तेज प्रथम भान
लिख लीजिए ॥
नदी प्रथम गंगा पर्वत प्रथम सुमिर साज प्रथम बीण भक्तन प्रथम नारद
कहि दीजिए ।
गीत प्रथम संगीत नर में प्रथम स्वयंभू मनु राजन प्रथम राजाराम तानन प्रथम
तानसेन उनचास कोट रस पीजिए ॥२१०॥

शाके को बिक्रम देवे को कुल करन बेद सम नहीं ज्ञान ।
बल को भीम पेंज को परसराम बाचा को युधिष्ठिर तेज प्रताप को भान ॥
इंद्रसेन राज मूरत को कामदेव मेरु समान ।
तानसेन कहे सुनो साह अकबर राजन में राजाराम नंदन बिरहभान ॥२११॥

शिव शक्ति अनादि आदि भवानी दयानी दया करो दीजे दरस इन नैन दारिद्र
दरन ।
तीनों लोक में जानि मृडानिए सो प्रसाद दीजे दुख दंद दूर होत सुख शरीर
आनंद करन ॥
महामाया भद्रकाली कल्याणी शिवानी मैनात्मजा दुखहरन ।
चंड मुंड महिषासुर मर्दनी तानसेन सेवक सुख करनी तूंही जगत पोषन
भरन ॥२१२॥

श्रीनंद को नंदन खेले जी हो होरा ।
ग्वार बाल सब संग सखा ले ब्रज की बीथन ही डोरा ।
ताल पखावज आवज बाजत ढोलक और तंबोरा ।
बीणा रबाब मुरज डफ मुरली मधुर मधुर ध्वनि थोरा ॥
कुंकुम केसर चंदन बंदन अबीर गुलाल भर झोरा ।
तानसेन प्रभु फाग रच्यो है खेलत किसोर किसोरा ॥२१३॥

शुभ नखत तखत बैठो राजत छाजत है सब मूलक खलक जे बिधना किए सब
छत्र धरे ते सब लागे सब सेवा करन ।
धन धन चक्रवती नरेस अकबर दुखहरन तानसेन ऐसो सुरपुरी नर नरेंद्र
नरन ॥२१४॥

शेष फरीदी गंज शकर जाकर पइयत है न्यामन मो मन की मुराद भरन तंबर ।
दोउ जहान कबूल मकबूल अब सेवक सेवाकर पावन एक पावन
तत छिन नाम लेत तरंग ऐसी पाटांबर बस्तर जर ॥
मो मन को मुराद देत और एक जाहर बातन सों हित मिल रहे ऐसे पर
सुमरन करे सब नारी नर ॥
बात यह जान तानसेन बिनती करत दीपक चेम कुसल आनंद गुनवर ॥२१५॥

सकर गंज गंज बक्स सेप फरीद आलम पीर नाम एसे के लीजे निवाज रहे जग
में भाज जाए तन तें रंज।
जेइ जेइ मांगिए तेइ तेइ फल पाइए तन को करत दारिद्र भंज ॥
तानसेन कहे एते ही मांगिते तुमपै जो हो मद तन पुंज ॥२१६॥

सघन बन छायो द्रुमबेली मध भुवन अति प्रकास बरन बरन पुष्प रंग लायो।
कोकिला खंजन कीर कपोत अति आनंदकारी चहूं ओर झर बरसायो ॥
सप्तसुर तीन ग्राम इकइस मूर्छना उक्तयुक्त लागडाट कर देखायो।
तानसेन कहे सुनो साह अकबर प्रथम राग भैरव गायो ॥२१७॥

सपनेहूं न बिसरिए हो हरि सों मन यों बांछे।
स्याम सुंदर बहुनायक सुखदायक सबहिंन को मोहि कबहूं न पूछे री आछे ॥
नंद नंदन जू अनत रस कीन्हों काम जरावत री सौत साले दूजे ताछे।
तानसेन प्रभु के बिछुरे ज़रद भई मोहिं निहोर न आवे री जो कोऊ पाछे ॥२१८॥

सब समूह करिहै तूं नर नारी रहसन ले चले करन लाड़ लरे की मंगन की।
सहनाई एक कर लिए और टकोरन बीन रबाब नगारन की झांझ झनकारन की ॥
बाजत ए धूम धाम धावत याके अनेक दल गजदल पैदल अश्वदल संगन की।
तानसेन सब नगर नर नारी प्रफुलित भए गुनी जन गावत छिरकत अतर गुलाब
सुबास आवत सुगंधन की ॥२१९॥

समझ समझ आली प्रान जात प्यारे मोहन बिन।
बहुर न यह रंग बहुर न यह रूप बहुर न रहे आली यह दिन ॥
अंजुरन जल घटत छिन छिन तेरे री मान बढ़े चौगन।
तानसेन के तुम प्रभु बहु नायक मान न कीजे आली छिन छिन ॥२२०॥

सर्बमणि अल्ला बड़ेन मणि खुदाई जोन मणि नूर थिरता मणि आकास कारन
मणि करना भोगन मणि भूतनें सृष्टिकरन ।
बेदन मणि सामबेद मारन उचाटन मणि अथर्बन नादन मणि अनहद पंचम
बेद कल मणि [illegible] मणि [illegible] बनन मणि बृंदावन ॥
आसानमणि अरस कुरस नरन मणि नारायण बृच्छन मणि कलपबृच्छ रसिकन मणि
गाल [illegible] बिहारी भूषन मणि कौस्तुभ मणि ।
सुखमणि संतोष लाभन मणि हरि नाम ज्ञान [illegible] धर्म मणि इमान तानन
मणि तानसेन अखिल मणि भगवान ॥२२१॥

सर्बमणि ब्रह्म ताको रच्यो संसार पुरुष मणि पुरुषोत्तम अवतार ।
बर्ण मणि ब्राह्मण नाम मणि राम नाम पुराण मणि भागवत ज्ञान मणि
कर बिचार ॥
भक्त मणि प्रहलाद पंछिन मणि गरुड़ बनन मणि बृंदावन रसिक मणि मुरार ।
तानन मणि प्रभु तानसेन ज्ञान मणि महादेव प्रेम मणि नारद बालक मणि
सनत कुमार ॥२२२॥

सरस्वती आदि रूप नाद ब्रह्म बीना [illegible] ।
मनावत पूरन गुनी मन इंछा फल पावत ॥
मनि को मंदिर सोने को कलसा जगमग जोग लागी ध्याता पग ध्यावत ।
इछा देवी बाक्बानी सारदा तानसेन को दीजे
स्वर ताल राग रंग सुध मुद्रा गावत ॥२२३॥

सरस्वती [illegible] मोकूं बाक्बानी ।
खरज ऋषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषाद गुरुमुख प्रसाद आवत तान सानी ॥
रूप की निधानी दयानी बिद्यादानी जगत जननी सारदा संतन मन मानी ।
तानसेन मांगे ताल स्वर अच्छर राग रंग संगत सों गावैं इंछा फलदानी ॥२२४॥

साधो बिद्याधर गुननिधान गुनदाता सरस्वती माता को कर आदेस ।
नमो नमो रिद्धि सिद्धि के स्वामी सकल बिद्या प्रबेस ॥
जो इनकूं ध्यावै मन इंछा फल पावै दूर होत तन तें कलेस ।
तानसेन प्रभु तुम ही को ध्यावैं ब्रह्मा बिष्णु महेस ॥२२५॥

सावन आयौ आली मोतो बिरह सतावन चहूँ ओर ते घन उमड़ घुमड़ आयो मन भावन बोलत चातक मोर पपीहा रटत पीऊ बिरह बिरहनी करत मान तान-
सेन प्रभु के कैसे करै दिन रैन गननी बन ॥२२६॥

साह अकबर को रिझायले री मान कि एतें कहा पावेगी ।
पिय की चोंपमतू उठ चल हे तो दिन ही भावेगी ॥
होत मेरे कहे कहे देखे री नातर सोरह सेगी ।
तानसेन पीको मन मोहें तासे तू हठ निवार फेर पछतावेगी ॥२२७॥

सुंदर अति प्रबीन महा चतुर चल राज करो रवि ससि जौलों भूमि पर ।
चिर चिरंजी रहो जौलों ध्रुव धरन तरन पवन पानि राजन मनि राजा रामचंद्र
रघुबर ॥
तोसों तूंही और दूजो नाहीं मेरे जान सब जग को बिश्वंभर ।
तानसेन तेरी अस्तुत कहालों बखाने भक्तबछल तोहैं ध्यावत सुरनर
मुनिवर ॥२२८॥

सुंदर छबि छाजत राजत मोहन कहा कहो रूप की निकाई मोसों बरनी न जाई
आस्ती औसे श्याम कन्हाई ।
श्रवन कुंडल मकराकृत कटि पीत बसन हाथ लकुट मुख मुरली मधुर धुन गाव
अतत सुहाई ॥
सप्त स्वर और तीन ग्राम ले बाइस सुरत उनचास कोट तान लाग डाट
सकल छाई ।

ओडव खाडव संपूर्ण आतक खातक स्वरांतक बादी बिवादी संबादी अनुबादी
तानसेन ले रिझाई ।।२२६।।

सु नजर भई अपने प्यारे को काहे कूं चिह्न दुरावत मोने तब ही जानी
तेरी चतुराई ।
रात को जागि पागि पीतम संग छिपावत गात नैन उनींदे तेरे लेत जंभाई ।।
सुंदर मृगनैनी बोलत पीक बैनी प्यारी रंग भरी सूरत मन समाई ।
तानसेन पिय बस कर लीनों धन-धन महारानी सुखदाई ।।२३०।।

सुनत ही बुलावन की बातें आंखन के ओर धाई हो आगे जो रजा ।
मनकी फूलन सों अंग अंग अंक की सुरन मिलाय हो आगे जो बजा ।।
सूरत देखाई मन लाई चाही आभरन सजा ।
मन बस कर लीनो तानसेन प्रभु रस बस कर ले लजा ।।२३१।।

सुमरन ताकों करो क्यों न ज्यों है सतार ।
यह सुन ले कान और निहचे जान मान एक पाकर परवरदिगार ।।
जोइ जोइ धावै सोइ मुराद पावै एसो है गफ्फार ।
तानसेन को दीजे अन धन लछमी यह मांगत बार बार ।।२३२।।

सुमरन हरि को करो रे जासो होवै भव पार ।
यह सीख जान मान कह्यो है पुरान मों भगवान आप करतार ।।
दीनबंधु दयासिंधु पतितपावन आनंदकंद तोसे कहत हूं पुकार ।
तानसेन कहे निरमल सदा रहिए नर देही नहीं बार बार ।।२३३।।

सेख बहावदीन गोसल आलम मेंही ही सरमस्त ।
अष्ट सिद्ध नव निद्ध पइयत मन बिच कर मकर के अल्ल रसूल परस्त ।।

दारिद्र भंजन और अंजन की जे उपज मेरी बरज़स्त ।
तानसेन को औलाद लों सहत दामन होवै बरग़ास्त ॥२३४॥

सोवन उठ रैन रस लेत अति सुंदर सोहत बदन प्यारी को ।
ले दर्पन मुख देखत अपने मन में सोच सकुच रही नैन होत लजोहैं नारी को ॥
सुकमल बदनी मन हरनी मोहनी मूरत पिय रस बस कर काम आतुर चित
हारी को ।
तानसेन प्रभु संग रंग रात जागी पागो आलस जंभात गात तिरछे नैन
निहारी को ॥२३५॥

सोहन कामिन उत्तम रूप पहरत संवार चीर ओपै बढ़ाय कुंदन अंग ।
टीके को कियो उद्दोत ताते तिमिर फटो सिरन परे पाछे सीसफूल युत
असमान श्रवण कुंडल कवरी अचक कटाच्छ आप जाते बन रहो दोउ अनंग ॥
दृग अंजन दिए खंजन बस कर लिए कर दर्पन हार सुख देत सुख पैयेअन निरखे
उड़ जान यह बरनन गुनी गावै मानक हीरा कपोल मुक्त लर मुक्तमाल भुज विशाल
कर कमल बाजूबंद फुंदन लटक-लटक अलि जुग संग ॥
काम किरन उपज्यो नवल बिचित्र कंचुकी मधु अतंग अधर सुंदर त्रिवेली तेरे
बाट रनन झनन ठनन ।
अम्रत नाभ और लीप पीला रस लेत अत जात तानसेन के प्रभु साह अकबर
सों बन रहे जैसे पारबती महादेव अरधंग ॥२३६॥

सोहन बनी बाल भाल चंद्र भुव धनुष नेत्र कमल श्रवण कुंडल सुंदर कपोल
बिलोकत रंभा रे ।
नासिका कीर बिद्रुम अधर दाड़म दसन चमक सुंदर बीजरी सी चौंधत स्वरन
मानों कंठ कोकिला रे ॥
ग्रीव कपोत कुच श्रीफल नाम कटि केहर कदली खंभ जंघ रच के धरे री ।
तानसेन निरखि मैन रति लजित भई आवत गज मत चाल मनकै ब्रे री ॥२३७॥

सोहत भीने बार चंद्र बदन धनक सी बनी ठनी श्रवन कुंडल सीसफूल कपोल
लोचन रतनारे ।
नेत्र कमल नासिका सुंदर अधर बिद्रुम दसन दाड़म चिबुक सुंदर सुघर कंठ
कोकिला के शब्द सों प्यारे ॥
भुज भाए ऐसे उतारे कुच कंचन के बनाए सांचे में डारे ।
उदर अलपलंक छीन कट केहर कदली जंघ तानसेन ऐसी प्यारी पर सर्वस वार
डारे ॥२३८॥

सोंहे खात तोतरात बात कहत अरसात आए भए प्रात डगमगात गात ।
ऐंडा जंभात धक धकात सुरझात थरथरात भर भरात ॥
वहां जी जावो जहां नवल तिय संग जागे सारी रात ।
याही तें मुसकात मेरो मन मनात बात कहात हंसात सोंहे न सोहात
तिहांही सिधारिए जाकी मन ललचात ॥
तानसेन के प्रभु मीठे बचनन बतरात झूठी झूठी सोंहे खात तेरी सों तेरी सों
मैं अब नहीं जात ॥२३९॥

हज़रत अली की सुदिष्ट नजरी मोपर जो दुख जाय सब तन तें भाज ।
हों सेवक तिहारो तुम जात पाक करीम करम कीजे राख लीजे यह जहान में
मेरी लाज ॥
बेचुन बेच गुन बेसुभे बेनमून पाक जात रियाज न्याज ।
तानसेन रब रहमान करीम रहीम बिनती सुनिए आवाज ॥२४०॥

हमारे लला के सुरंग [illegible] कुंवर कन्हैया ।
अगर चंदन को पलनों बनो है हीरा लाल जवाहर जरैया ॥
अमरी [illegible] चहा बहा हंस चकोर मोर चिरैया ।
तानसेन प्रभु जसुमत झुलावैं दोउ कर लेत बलैया ॥

हमारे बबा के दामोदर पछैया ताकि हौं लेहौं बलैया ।
जीयो जागो कोट बरस लों जौलों ध्रुव चरन तरन रवि सहित रैया ॥२४१॥

हारी हमेल सों नीकी लागत और गोरे चूरीहरी ।
कंठ कपोत बदन जोति कानन बीरी और बेसर केसर की खोर तापर लटपटात
लटकत लट मुथरी ॥
भुज मृनाल श्रीफल से कुच कट केहरी जंघ कजरी ।
चंद्रवदनी सावक नैनी बोलत अमृत बैन धजरी ॥
तानसेन प्रभु रिझाय लायो सोलहो सिंगार बतीस आभरन सजरी ॥२४२॥

हिंदनी कबहूं जनन कहो रे तुरका संग तुरकानी भयेली ।
अनुपम चाल चलत मतंग गत मानो पग परत पवेली ॥
ज्यों जल में प्रतिबिंब देखियत चंद किरन तैसी जे हर बेली ।
ते रस बस कियो तानसेन प्रभु खानखाना पिय पाक अकेली ॥२४३॥

हेली चलो देखो री चितचोर ।
रैन अंधेरी कारी बिजरी चमकत मोर करत अति सोर ॥
ब्रज गोपन सब सुख मदमाती कित रजनी कित भोर ।
बृंदाबन की कुंज गलिन में मदन जगी चहूं ओर ॥
नंद महर को ढीठ सांवरो हम सों भयो कठोर ।
मन व्याकुल बिन दास स्याम के चंचल चित मन जोर ।
तानसेन दरसन दीजे श्रीबल नंद किसोर ॥२४४॥

हैं कालिंदी पति प्रताप वरे औधा तरी सरस्वती मिल भई त्रिबेनी ।
पीछे तें आवत जमुना स्याम रूप भरन वोर रूप बरसत पाषाण तोर गुमान ते
चली जम के बेनी ॥

अरुन बरन सरस्वती गुप्त प्रगट होत चंद्र किरन जोत आकास पर छुवत
भुज नेनी ।

तैसे बन बन तेहू मिलन चली लाल अति रंग भीनी ।।
भागीरथ तूं री भगत तारन सगार उधारन सारानी ।
सब भुव पावन पै धार तीरथ प्रयाग त्रे तारी उत्पति धरनी नरनी ।।
तीलों उत्पति नर नारी ब्रह्मा बिष्णु मकर न्हावत करत अस्तुन गावत भर तानसेन
गुनी ।।२४५।।

है यह माननी मनायबे को अत ही हुलास जिय मनहूं न मानों पिय कैसे
के मनाइए ।

बहुत ही सौंह दई उठ चल प्यारी वाके पांय पग धरि सीस नवाइए ।
माने न मनायो नेक रच पच हारी कैसे कर वाको समझाइए ।
तानसेन प्रभु प्यारे आप नेक चलिए बल पांयन में सिर नाय बिनती
कराइए ।।२४६।।

हीं ओंकार महादेव शंकर तुम सकल कला पूरन करत आस ।
निहचेही धरत ध्यान सुमरन कर मनमान देखत दर्शन गई त्रास ।
हरे दुख दंद सोहत जटा गंग रुंड माल सोहीं बाघंबर बास ।
तानसेन वाके ध्यावे तब मन इंछा फल पावै होय कैलास निवास ।।२४७।।

कवि-परिचय

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।

नामक दोहा कहकर बेहोश होकर गिर पड़े। कहा जाता है कि उन्होंने उसके बाद अपना सब कुछ लुटा दिया और उसी वर्ष (१३२५ ई०) इनका देहांत हो गया। इन्हें इनके गुरू की कब्र के पास ही गाड़ा गया जहाँ १६०२ ई० में ताहिर बेग़ ने एक मक़बरा बना दिया।

खुसरो एक योग्य विद्वान, कवि, इतिहासकार, संगीतज्ञ और सेनानी थे। इन्होंने अपने जीवनकाल में सात राजाओं की सेवा की।

खुसरो की प्रसिद्धि का विशेष कारण कविता एवं संगीत के क्षेत्र में उनकी देन हैं। कहा जाता है कि इन्होंने लगभग १०० पुस्तकें लिखीं जिनमें अब २२ फ़ारसी ग्रंथ तथा कुछ फुटकर हिंदी कविताएँ ही प्राप्त हैं।

खुसरो ने ईरानी संगीत से यथोचित चीजें लेकर भारतीय संगीत को समृद्ध बनाने का पूरा प्रयास किया। इनके युग के प्रसिद्ध भारतीय संगीतज्ञ गोपाल नायक से इनकी होड़ लगी थी जिसमें ये विजयी रहे। भूमिका भाग में इसका कुछ विस्तार से उल्लेख किया जा चुका है।

कुछ लोगों का अनुमान है कि इन्होंने संगीत के विषय में भी कई पुस्तकें लिखी थीं जो आज उपलब्ध नहीं है।

भारतीय संगीत को खुसरो की देन चार क्षेत्र में है—

१. वाद्ययंत्र—सितार तथा तबला।

२. राग—ज़ीलफ़ सरपरदा तथा गारा आदि।

३. ईरानी संगीत के अंदाज पर हिंदुस्तानी रागों में तराना कौल तथा नक्शोगुल आदि गीतों की रचना।

४. ताल—झुमरा तथा सूलफाक आदि।

खुसरो नाम के एक संगीतज्ञ तानसेन के समय में भी थे जो कुछ लोगों के मत से ये तानसेन के दौहित्र लगते थे। प्रसिद्ध सितारिया फीरोज़ खां इन्हीं के पुत्र थे। फीरोज़ खां के ही पुत्र मसीत खाँ के नाम पर विलंबित

लय के मसीतखानी बाजा का प्रचलन हुआ । सितार आविष्कार के संबंध में इन दोनों ख़ुसरों में बहुत विवाद है । कुछ लोगों के अनुसार अमीर ख़ुसरो ने ही सितार का आविष्कार किया था जैसा कि उल्लिखित है । कुछ अन्य लोगों के अनुसार ख़ुसरो द्वितीय ने आविष्कार किया था । तथ्य यह है कि इस संबंध में प्रमाणिक सूत्रों का इतना अभाव है कि निश्चय के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता। एक तीसरे ख़ुसरो का भी पता चलता है।

गोपाल नायक

अन्य बहुत से कलाकारों एवं संगीतज्ञों की भाँति गोपाल नायक के जीवन के विषय में भी प्रामाणिक सामग्री का बहुत अभाव है । यों अधिकतर विद्वान इसी बात से सहमत हैं ये अलाउद्दीन खिलजी के समकालीन थे और दक्षिण के तत्कालीन यादव वंशी राजा के दरबार में देवगिरि में रहते थे । सन् १३१० ई० में जब अलाउद्दीन ने देवगीरि के राजा को पराजित कर अपने कब्जे में कर लिया तो ये उत्तरी भारत में चले आये । इस संबंध में कई तरह की किंवदंतियाँ कही जाती हैं । एक के अनुसार अलाउद्दीन स्वयं बहुत कला प्रेमी था और गोपाल नायक को अपने साथ लाया था । दिल्ली पहुँचने पर अलाउद्दीन के दरबारी कवि एवं संगीतज्ञ ख़ुसरो से इनमें मुठ-भेड़ हुई जिसमें ख़ुसरो की चालाकी से गोपाल नायक को मुंह की खानी पड़ी इस घटना का कुछ विस्तार से उल्लेख भूमिका भाग में किया जा चुका है । एक दूसरे मत से अलाउद्दीन ने जिस समय वहाँ लूट मचायी वे वहाँ वृंदावन चले आये । एक तीसरे मत के अनुसार गोपाल नायक किसी छोटी जाति में उत्पन्न हुए थे और लड़कपन से ही इनमें संगीत के प्रति विशेष अभिरुचि देखकर बैजू बावरा ने इन्हें अपने साथ रख लिया था । बैजू बावरा से ही इन्होंने संगीत की शिक्षा प्राप्त की और शीघ्र ही चारों ओर इनकी ख्याति हो गई । ख्याति के कारण इनमें कुछ अहंभावना आ गयी और एक दिन किसी कारणवश अपने गुरु बैजू बावरा से रुष्ट होकर ये चले गये और विजयनगर के दरबारी गायक हो गये ।

राजा ने उसकी संगीत साधना से चकित होकर इनके गुरु का नाम पूछा पर इसका उत्तर गोपाल नायक ने यह दिया कि उसका गुरु कोई नहीं है, मुझमें यह गुण सहजात और ईश्वर प्रदत्त है। राजा को इस पर विश्वास न हुआ पर जब उनके बार बार पूछने पर भी बैजू ने यही कहा तो राजा ने रुष्ट होकर कहा कि ठीक है, पर यदि तुम्हारे गुरु का पता चल जायगा तो तुम्हें फाँसी की सजा दी जायगी।

संयोगवश गोपाल को ही खोजते उसके गुरु बैजू बावरा दर्बार में पहुँचे और राजा को इसका पता चल गया। राजा ने गोपाल से पूछा पर उसने फिर वही बात दुहरायी। राजा ने इसका प्रमाण देने को कहा गोपाल ने गाना शुरू किया और इतना सुंदर गाया कि उसके चारों ओर हिरन का झुंड आकर खड़ा हो गया। गोपाल ने एक हिरन के गले में एक माला डाल कर गाना समाप्त कर दिया और सब हिरन चौकड़ी भरते हुए चले गये। गोपाल ने गर्व पूर्ण स्वर में बैजू से कहा कि यदि तुम मेरे गुरु हो तो माला मँगा दो। बैजू गाने लगा और फिर सब हिरन आ गये। इन हिरनों में वह भी था जिसके गले में माला थी। राजा यह देख कर बैजू पर बहुत प्रसन्न हुआ और गोपाल नायक को फाँसी पर चढ़ा देने की आज्ञा दी। बैजू ने अपने शिष्य को छुड़ाने का प्रयास किया पर वह सफल न हो सका और गोपाल को फाँसी दे दी गई। इस किंवदंती के विषय में निश्चय के साथ कुछ कहना इसलिए संभव नहीं है कि प्रायः लोग बैजू को तानसेन का समकालीन एवं तानसेन के गुरु हरिदास का शिष्य मानते हैं। अतएव उसका ख़ुसरो कालीन गोपाल का गुरु होना संभव नहीं लगता। यों कुछ लोग इस मत के भी हैं कि गोपाल ख़ुसरो का समकालीन न होकर उसका परवर्ती था।

लोगों का कहना है कि गोपाल का विवाह हुआ था और उसे एक मीरां नाम की पुत्री भी थी जो स्वयं बड़ी ख्याति नामा संगीत विशारदा थी। 'मीरां की मल्हार' उसी की देन है। कुछ लोग इसका संबंध प्रसिद्ध भक्तिकालीन कवियित्री भी मीरां से जोड़ते हैं, पर शायद यह ठीक नहीं है।

संक्षेप में गोपाल के संबंध में किंवदंती रूप में प्रचलित प्रधान बातें ये ही हैं। इनमें अधिकांश विश्वसनीय नहीं जान पड़तीं।

हरिदास

स्वामी हरिदास के जीवन के संबंध में प्रामाणिक सूत्रों की बहुत कमी है। कुछ लोगों के अनुसार इनका जन्म हरिदासपुर में हुआ था और इन्हीं के नाम पर उसका उक्त नाम रखा गया। कुछ लोग इनका जन्म हरियाना में मानते हैं और हरियाना नाम का संबंध हरिदास से जोड़ते हैं। कुछ अन्य लोग इन्हें मुलतान या [illegible] में उत्पन्न मानते हैं। 'श्री निंबार्क माधुरी' के अनुसार स्वामी हरिदास का जन्म वृंदावन से एक मील की दूरी पर राजापुर ग्राम में हुआ था। '[illegible]' की भूमिका में श्री सुदर्शन सिंह ने इनके जन्मस्थान के संबंध में विभिन्न मतों पर बड़ी विद्वत्ता से विचार किया है और वे अंत में इसी मत पर पहुँचे हैं कि स्वामी हरिदास का जन्म [illegible] जिले के '[illegible]' नामक स्थान में हुआ।

स्वामी जी के जन्म संवत के संबंध में भी कम विवाद नहीं है। ग्राउज़ ने अपने मथुरा मेमायर्स में '[illegible]' के '[illegible]' नामक ग्रंथ का उल्लेख किया है और उसके आधार पर स्वामी [illegible] जन्म सं० १४४१ बतलाया है, पर वहीं ग्राउज़ ने इसका खंडन भी किया है। श्री [illegible] की 'गुरु [illegible]' में इनका जन्म सं० १५२५ दिया गया है, पर यह भी प्रामाणिक नहीं माना जाता। श्री किशोर दास ने 'निजमत सिद्धांत' में इनका जन्म, भाद्र शुक्ल ८ सं० १५३७ माना है और इन्हीं के अनुकरण पर बाद के 'मिश्रबंधु विनोद' में वियोगी हरि 'ब्रज माधुरी सार' में तथा बिहारी शरण के '[illegible]' में माना है। कुछ अन्य लेखकों ने सं० १५३७ में ही इनके उत्पन्न होने का उल्लेख किया है, परंतु स्वामी जी के जीवन की अन्य घटनाओं को सामने रखने पर इस संवत की संगति नहीं बैठती। 'मिराते सिकंदर' और 'मिराते अकबरी' एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ है जो अकबर के समय में पूरा हुआ था। इसकी छठी जिल्द में स्वामी

हरिदास के संबंध में काफी बातें दी गयी हैं जो विद्वानों की राय में सभी दृष्टियों से ठीक हैं। इसके अनुसार स्वामी जी का जन्म पौष शुक्ल १३ भृगुवार सं० १५६६ में हुआ था। इसके पिता का नाम आशुधीर तथा माता का नाम गंगा देवी था। यों कुछ लोगों ने इनके पिता का नाम गंगाधर तथा माता का नाम चित्रा देवी लिखा है पर यह अप्रामाणिक है। स्वामी जी सारस्वत ब्राह्मण थे।

स्वामी जी के रक्त में ही भक्ति के संस्कार थे। २५ वर्ष की वयस में ही ये विरक्त हो गए और वृंदावन आकर निधुवन में अपनी कुटी बनायी और रहने लगे। भक्तों में स्वामी जी राधा की सखी ललिता के अवतार माने जाते हैं।

स्वामी जी के संप्रदाय के विषय में भी लोगों में बहुत मतभेद है। राधावल्लभीय संप्रदाय के लोगों ने इन्हें अपने संप्रदाय का घोषित किया है तो निंबार्कियों ने अपने संप्रदाय का। इसी प्रकार टट्टी तथा विष्णुस्वामी संप्रदाय का भी इनको बतलाया गया है। पर यथार्थ यह है कि ये सच्चे भक्त थे। इनकी भक्ति माधुर्य भाव की थी जैसा कि इनके छंदों से स्पष्ट है।

स्वामी जी एक उच्च कोटि के भक्त कवि थे। इनकी पुस्तक 'केलिमाल' है जो प्रकाशित हो चुकी है। इसके अतिरिक्त कुछ फुटकर छंद भी इनके मिलते हैं।

स्वामी जी के संबंध में भक्तों तथा संगीतज्ञों में अनेकानेक अंध-विश्वास पूर्ण जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं। इनमें से कुछ का उल्लेख इनके प्रसिद्ध शिष्यों तानसेन तथा बैजू बावरा के परिचयों में अन्यत्र किया जा चुका है।

प्रवाद है कि अकबर ने एक बार तानसेन की संगीत कला से प्रसन्न होकर उससे पूछा कि संसार में क्या कोई तुमसे अच्छा भी गा सकता है। तानसेन ने उत्तर दिया—जहाँपनाह मेरे गुरु हरिदास की कला के आगे

मेरी कला तो कुछ भी नहीं है । अकबर हरिदास का संगीत सुनने के लिए लालायित हो उठा और तानसेन की सलाह से वह वेष बदलकर संगीत सुनने के लिए चल पड़ा । वहाँ अकबर तो कुटी के बाहर रहा पर तानसेन भीतर गया । कुछ देर बाद स्वामी जी की आज्ञा से तानसेन ने गाना प्रारंभ किया और जान बूझ कर उसने अशुद्धि की । अपने शिष्य की अशुद्धि ठीक करने के लिए स्वामी जी ने स्वयं गाना प्रारंभ किया जिसे सुन कर अकबर दंग रह गया । संगीत के समाप्त होते ही वह स्वामी जी के चरणों पर आ गिरा और अपना परिचय देते हुए कुछ आज्ञा देने का आग्रह करने लगा । स्वामी जी उसके भाव को समझ गये और उन्होंने कहा कि मैं जिस घाट पर नहाने जाता हूँ उसका एक कोना टूट गया है, उसे बनवा दो । अकबर को इस बात से अपना कुछ अपमान होना, लगा । इतने बड़े सम्राट से इतनी छोटी बात माँगना ! कोई ऐसी चीज़ कहनी थी जिसमें दो-चार लाख का खर्च हो । स्वामी जी के आग्रह पर अकबर वह घाट देखने गया पर घाट देखते ही उसके होश उड़ गये । उसे ऐसा दिखायी पड़ा कि घाट में बहुत ही मूल्यवान पत्थर लगे हैं और उसका एक कोना बनवाना उसके लिए तो क्या उस जैसे दस बीस राजाओं के लिए मिल कर भी संभव नहीं है । अकबर ने लौट कर स्वामी जी से क्षमा माँगी । अंत में स्वामी जी वृंदावन के मोरों और बंदरों के पोषण करने का आदेश दिया जिसे सम्राट ने सहर्ष स्वीकार किया ।

कहा जाता है कि स्वामी के किसी शिष्य ने उन्हें एक बार पारस पत्थर दिया जिसे उन्होंने यमुना में फेंक दिया । इस पर वह व्यक्ति कुछ दुखी दीख पड़ा । स्वामी जी यमुना से उसे जैसे अनेकानेक के पत्थर निकाल कर बाहर रख दिये तब कहीं उसे ज्ञान हुआ और उसने क्षमा माँगी । इस प्रकार की और भी बहुत सी चमत्कारपूर्ण कथाएँ कही जाती हैं जिनसे स्वामी हरिदास की महत्ता प्रकट होती है । इन सब किंवदन्तियों का केवल इतना ही अर्थ है कि स्वामी जी बड़े ही निर्लेप और विरक्त व्यक्ति थे ।

९५ वर्ष की आयु में सं० १६६४ में स्वामी हरिदास का देहांत हुआ ।

बैजू बावरा

गोपाल नायक की भाँति ही बैजू बावरा के विषय में भी अनेक जनश्रुतियाँ हैं। पर जन्म एवं मृत्यु के सन्-संवत् जाँति-पाँति जन्म-स्थान शिक्षा दीक्षा आदि के विषय में प्रामाणिक सूत्रों का अत्यंत अभाव है।

बैजू बावरा का यथार्थ नाम बृजलाल था। ये एक साधु थे और वृंदावन में यमुना के किनारे रह कर भक्ति में तल्लीन रहते थे। इनकी तल्लीनता के कारण ही लोग इन्हें बावरा कहा करते थे।

जनश्रुतियों के आधार पर बैजू बावरा के समय के संबंध में कई प्रकार की बातें कही जा सकती हैं। एक यह कि अमीर ख़ुसरो से होड़ लेने वाले गोपाल नायक को यदि बैजू बावरा का शिष्य होने की बात स्वीकार की जाय तो इनका समय १३वीं-१४वीं सदी ठहरता है। पर एक जनश्रुति यह भी है कि ये तानसेन के गुरु हरिदास के शिष्य थे और तानसेन से इनसे प्रतिद्वंदिता थी। इसे ठीक मानने पर ये अकबर के समय के सिद्ध होते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार ये तानसेन के कुछ पहले हुए थे। यह एक तीसरा मत है और इसके अनुसार उनका समय उपर्युक्त दोनों के बीच में है।

तानसेन और बैजू बावरा के संबंध में जो जनश्रुति है, उसमें सच्चाई तो शायद कुछ भी नहीं है, पर मनोरंजक होने के कारण उसे यहाँ दिया जा रहा है।

कहा जाता है कि तानसेन के संगीत को सुनकर अकबर बहुत ही प्रसन्न हुआ था और उसके प्रति आदर प्रदर्शित करने के लिए यह आज्ञा दे रखी कि नगर में कोई न गावे। यदि कोई गाता मिलेगा और वह तानसेन से अच्छा न गायेगा तो उसे फाँसी की सजा दी जायेगी। एक बार कुछ साधु गाते हुए नगर में पहुँचे और वे इसी अपराध में गिरफ्तार कर लिये गये। उनमें सबको तो फाँसी दे दी गयी पर एक आठ वर्ष के लड़के को

अबोध जान कर छोड़ दिया गया। उस बालक (जो बैजू था) को यह बात लग गयी और [illegible] तानसेन के गुरु हरिदास के पास पहुँचा और उनसे पूरी घटना बतला कर अपने को [illegible] की प्रार्थना की। हरिदास स्वामी ने उसे शिष्य तो बनाया पर तानसेन के विरुद्ध बदले की भावना को दिल से निकाल देने की शर्त पर। बैजू ने इसे स्वीकार कर लिया। कई वर्षों के अभ्यास के उपरांत बैजू तानसेन के नगर में पहुँचा और गाने लगा जिसके फलस्वरूप पकड़ कर दर्बार में ले जाया गया। बादशाह के पूछने पर उसने गाने की इच्छा प्रकट की; तानसेन भी बुलाये गये। बादशाह ने पहले तानसेन को गाने को कहा। तानसेन ने आरंभ किया और कुछ देर बीतने पर वहाँ झुंड के झुंड हरिन आ गये। तानसेन ने अपनी माला उनमें से एक के गले में डाल दी और चुप हो गए। मंत्र मुग्ध हरिन संगीत समाप्त होते ही भाग गए। अकबर ने बैजू से तानसेन की माला लौटाने को कहा। बैजू ने गाना शुरू किया और थोड़ी ही देर में हरिन फिर आ गए। बैजू ने उसके गले से माला निकाल कर तानसेन को दे दी। अब बैजू की बारी थी। उसने गाना प्रारंभ किया और ऐसा गाया कि सामने रखा हुआ पत्थर पिघल गया। बैजू ने अपनी वंशी (किसी किसी मत से अपना मजीरा) उस पिघले पत्थर में डाल कर गाना बंद कर दिया और फलस्वरूप पत्थर पुनः पूर्ववत् हो गया। अब तानसेन से वंशी लौटाने को कहा गया। तानसेन ने लाख प्रयास किया पर ऐसा न हो सका। अकबर बैजू से बहुत प्रसन्न हुआ और उसका परिचय पूछा। बैजू ने साधुओं की हत्या की पूरी कहानी उसे सुना दी। अंत में अकबर ने कहा कि इसका आशय यह है कि तानसेन तुम्हारा शत्रु है। तुम उसे फांसी दिलवा सकते हो। बैजू ने तुरंत उत्तर दिया, जहाँपनाह कला जीवन के लिए है, जीवन हरण के लिए नहीं! मैं केवल यही चाहता हूँ कि आप नगर के भीतर किसी को गाने न देने का प्रतिबंध हटा लें। अकबर इस महान् आत्मा के अप्रतिम व्यक्तित्व पर आश्चर्य चकित रह गया और बैजू गाता हुआ वहाँ से चल पड़ा।

तानसेन

प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन का जन्म शिवसिंह सेंगर के अनुसार सं० १५८८ में हुआ था।[१] इसके विरुद्ध डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने इनका जन्म सन् १५२० ई० माना है।[२] डॉ० सरयू प्रसाद अग्रवाल ने[३] अकबरनामा में दी गयी एक तिथि, उस युग के प्राप्त तानसेन के दो चित्रों के आधार पर इन दोनों तिथियों की प्रामाणिकता और अप्रामाणिकता पर विचार किया है और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि सेंगर जी की तिथि ही अधिक समीचीन है। ऐसी स्थिति में सं० १५८८ ही तानसेन का जन्म-काल ठहरता है।

तानसेन का जन्म बेहट गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम मकरंद पांडे था। इनके अपने मूल नाम के विषय में निश्चय के साथ कुछ कहना संभव नहीं। कुछ लोगों के अनुसार इनका आरंभ का नाम त्रिलोचन मिश्र था। यह बात विचारणीय है कि जब पिता पांडे थे तो इनके नाम के साथ मिश्र क्यों जोड़ा गया। त्रिलोचन से बिगाड़ कर लोग इन्हें 'तन्ना' कहते थे और आगे मुसलमान होने पर इसी 'तन्ना' के आधार पर इन्हें तानसेन कहा गया। एक किंवदंती के अनुसार इनका बचपन का नाम तन्नू था। पर इनमें किसी का भी कोई प्रामाणिक आधार नहीं है। प्रामाणिक ग्रंथों में इनका तानसेन ही मिलता है, जो निश्चय ही मूल नाम नहीं है।

तानसेन ब्राह्मण से मुसलमान कैसे हो गये इसका भी कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता। इस संबंध चार-पाँच संभावनाएँ हो सकती हैं।

(क) किसी ने उन्हें बलपूर्वक मुसलमान बना लिया हो जैसा कि डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने लिखा भी है।[४]

[१] शिवसिंह सरोज, पृ० ४२१ [२] ऋतम्भरा, पृ० ११० [३] अकबरी दरबार के हिंदी कवि, पृ० १००-१ [४] ऋतम्भरा, पृ० ११२

(ख) किसी मुसलमान कुमारी के प्रेम में उन्होंने [illegible] कर लिया हो।

(ग) धन के लोभ में मुसलमान हो गये हों।

(घ) इस्लाम धर्म को श्रेष्ठ समझकर उसे स्वीकार कर लिया हो।

(ङ) किसी प्रभावशाली मुसलमान के संपर्क में मुसलमान हो गये हों।

अब इन पाँचों पर [illegible] विचार किया जाना चाहिए। बलपूर्वक मुसलमान बनाए जाने की बात डॉ० चातुर्व्यां ने लिखी है पर अकबर के समय में इस प्रकार की [illegible] मिलता। अतएव यह [illegible] नहीं लगती। प्रेम के संबंध में दो [illegible] मिलती है। एक के अनुसार तो तानसेन का प्रेम अकबर की पुत्री मेहरुन्निसा से हो गया था और दूसरी के अनुसार [illegible] मुसलमान कुमारी से। इन दोनों में अकबर की पुत्री से संबद्ध घटना तो संभव नहीं ज्ञात होती। यदि ऐसा हुआ होता तो इसका कहीं न कहीं उल्लेख अवश्य ही मिलता। दूसरी किसी अन्य मुसलमान कुमारी से प्रेम की घटना की संभावना हो सकती है। धन के लोभ से तानसेन का धर्म परिवर्तन भी असंभव सा है। एक तो इतने बड़े कलाकार के लिए धन का कोई विशेष आकर्षण नहीं हो सकता था, दूसरे रीवाँ नरेश रामचंद्र के दरबार में वे पहले थे और बाद में अकबर के यहाँ स्वभावतया दोनों ही स्थानों पर उन्हें धन की कमी न रही होगी। इस्लाम धर्म को श्रेष्ठ समझकर उसे स्वीकार करने की बात भी तानसेन के लिए संभव नहीं लगती। उनकी कविताओं से यह स्पष्ट है वे मुसलमान होने के बाद भी हिंदू धर्म के प्रति श्रद्धा रखते थे। किसी प्रभावशाली व्यक्ति के संपर्क में आने के कारण मुसलमान होने की बात भी कुछ संभव है। कहा जाता है कि बचपन से ही ये ग़ौस मुहम्मद के साथ रहते थे। एक किंवदंती के अनुसार इन्होंने अपने गुरु ग़ौस मुहम्मद का जूठा पान भी खा लिया था। संभव है इस कारण से ही हिंदू धर्म छोड़ मुसलमान बनना पड़ा हो।

इस प्रकार किसी मुसलमान कुमारी के प्रेम, या गुलाम ग़ौस के संपर्क के कारण ही तानसेन के मुसलमान बनने की अधिक संभावना है।

तानसेन की शिक्षा ग़ौस मुहम्मद और स्वामी हरिदास इन दोनों व्यक्तियों के यहाँ हुई थी। बालकाल में ये ग़ौस मुहम्मद के साथ रहे। ग़ौस मुहम्मद जब अपना सारा ज्ञान इन्हें दे चुके तो उच्चतर संगीत की प्राप्ति के लिए स्वामी हरिदास के पास भेजा।[१] हरिदास स्वामी उस युग के सर्व श्रेष्ठ संगीतज्ञ थे। कहा जाता है कि एक बार अकबर ने तानसेन से पूछा कि क्या कोई तुमसे भी अच्छा संगीतज्ञ है। इस पर तानसेन ने स्वामी हरिदास का नाम लिया। पहले तो अकबर ने हरिदास को दरबार में बुलाने का प्रयास किया पर इसमें जब वह सफल न हो सका तो तानसेन के साथ हरिदास की कुटिया में गया। उनका अप्रतिम संगीत सुनने के उपरांत अकबर ने तानसेन से स्वामी हरिदास के गायन के श्रेष्ठ होने का कारण पूछा तानसेन ने कहा था "श्रीमान् मैं शाहंशाह को खुश करने के लिए गाता हूँ पर वे शाहंशाहों के शाहंशाह के लिए गाते हैं।"

इतिहासकार स्मिथ के अनुसार तानसेन की शिक्षा राजा मानसिंह द्वारा स्थापित संगीत विद्यालय ग्वालियर में हुई थी।[२] शिक्षा समाप्त करने के बाद सबसे पहले तानसेन शेरशाह सूरी के पुत्र दौलत खां के दरबार में आए। उनकी मृत्यु के बाद ये रीवां के राजा रामचंद्र के यहाँ गये। वहीं से इनकी ख्याति चारों ओर फैली और तब अकबर ने इन्हें अपने यहाँ बुलवाया। राजा रामचंद्र इन्हें वहाँ जाने देना तो नहीं चाहते थे पर विवश होकर उन्हें भेजना पड़ा और अकबरनामा के अनुसार ये सं० १६१६ में अकबर के दरबार में आये। उस समय इनकी वयस २७ वर्ष की थी।[३]

स्मिथ के अनुसार तानसेन प्रसिद्ध भक्त कवि सूरदास का मित्र था। उस युग के अन्य भी बहुत से प्रसिद्ध व्यक्ति इनके घनिष्ठ मित्र थे।

[१] अमर कलाकार तानसेन, बिलावल अंक, संगीत कला, पृ० ९९

[२] अकबर द ग्रेट मुग़ल, पृ० ४२२ [३] अकबरनामा, भाग १, पृ० २७९-८०

तानसेन के विषय में अनेकानेक जनश्रुतियाँ तथा किंवदंतियाँ प्रचलित हैं बैजू बावरा से संबंधित जनश्रुति का उल्लेख 'बैजू बावरा' के परिचय के साथ दिया गया है। अन्य जनश्रुतियों में 'दीपक राग' संबंधी जनश्रुति अधिक प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि अकबर को किसी से पता चल गया कि तानसेन दीपक राग गाता है जिससे [illegible] है। एकमत से तानसेन के एक विरोधी ने अकबर को यह बात बतलायी जो तानसेन के पूर्व अकबर के दरबार का सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ था। यह सुनकर अकबर ने तानसेन को दीपक राग गाने की आज्ञा दी। तानसेन ने उसे समझाया कि मैं गा तो सकता हूँ पर गाने के बाद मेरा फेफड़ा जल जायगा और फिर मेरा जीना असंभव हो जायेगा अकबर ने एक न सुनी और तानसेन को दीपक राग गाकर बुझे दीपक जलाना पड़ा। पर उसके बाद वही हुआ जो तानसेन ने कहा था। अकबर इससे बहुत दुःखी हुआ। बड़े-बड़े वैद्य और हकीम बुलाये गये पर कुछ न हुआ। अंत में तानसेन दक्षिण गया और वहाँ किन्हीं दो स्त्रियों ने बादल राग या मेघ राग गाया और तब तानसेन स्वस्थ हो सका।

तानसेन एक उच्च कोटि के संगीतज्ञ होने के साथ-साथ कवि भी थे। संगीत के क्षेत्र में कई दृष्टियों से इनकी देन अविस्मरणीय है। कुछ लोगों के अनुसार तानसेन ने भारतीय संगीत का बड़ा अपकार किया और उनके बाद से ही उत्तरी भारत की परंपरा के पतन का प्रारंभ हुआ। पर, यथार्थतः यह बात नहीं है। तानसेन के कारण संगीत की उन्नति हुई न कि अवनति। इन्होंने कई नवीन रागों या राग के नवीन प्रकारों को जन्म दिया। राग मल्लार में इन्होंने ही कोमल गांधार और दोनों निषाद को स्थान दिया। मल्लार के इस रूप को तानसेन के ही नाम पर 'मियाँ की मल्लार' कहते हैं इसी प्रकार 'मियाँ की तोड़ी' तथा 'दरबारी कानड़ा' भी इन्हीं की देन है।

तानसेन की मृत्यु सं० १६४६ में ६८ वर्ष की अवस्था में हुई।[1]

आधार ग्रंथ-परिचय

'संगीतज्ञ कविदों की हिंदी रचनाएँ' में संगृहीत कविताएँ श्री कृष्णानंद व्यास देव द्वारा संकलित 'संगीत राग कल्पद्रुम' के आधार पर हैं। प्रस्तुत संग्रह में 'राग कल्पद्रुम' के दोनों संस्करणों में प्रथम संस्करण को मूल आधार बना कर उपयोग किया गया है और दूसरे संस्करण से भी सहायता ली गयी है।

श्री कृष्णानंद व्यास देव प्रथम संस्करण के अनुसार 'गौड़ ब्राह्मण मेवाड़ देश उदैपुर देवगढ़ कोट के रहने वारे' थे। परंतु दूसरे संस्करण के सपादकीय परिचय के अनुसार वे राजस्थान के उदयपुर के औहैनी नामक स्थान में रहते थे। वे गोकुल-वृंदावन में संगीत-शास्त्र की शिक्षा दिया करते थे। उनकी संगीत विद्या से मुग्ध एवं प्रभावित श्री गोकुल के सुप्रसिद्ध संगीताचार्यों सर्वश्री दामोदर गोस्वामी, गिरिधर गोस्वामी एवं कल्याण राय आदि ने उन्हें 'राग सागर' की उपधि दी थी।

श्री व्यास देव ने ३२ वर्षों तक लगातार पूरे भारत में पर्यटन कर "द्वादस लक्ष पचीस हजार राग रागणिन के ध्रुवपद, विष्णुपद, ख्याल, टप्पा गीत छंद प्रबंधादि, व्याकरणादि लेकर सर्व शास्त्र संग्रह किया। संस्कृत और सर्वदेश भाषा गान तथा ग्रंथ सज्जन विद्वजनन के आनंदार्थ जानबे के लिए प्रकाश किये हैं।" उन्होंने 'कल्पद्रुम' राग के विभिन्न खंडों के प्रकाशन का विवरण इस प्रकार दिया है—

१. सन् १८४२ ई० में राग कल्पद्रुम की सूचना और प्रथमांश 'रंगीन गान मजमूवा' प्रकाशित हुआ।
२. 'सूचनिका के शेष' १६ मार्च सन् १८४२ ई० में प्रकाशित हुआ।
३. 'रंगीन गान मजमूवा' के शेष संवत् १८६६ चैत्र बदि रवि को प्रकाशित हुआ।
४. 'शास्त्रनाम सूचनिका के शेष' २० अप्रैल सन् १८४२ को प्रकाशित हुआ।
५. 'रागरागिणी विवेकाध्याय के शेष' २४ अप्रैल, सन् १८४३ ई० को प्रकाशित

६. 'बंगला भाषा रंगीन गान' २३६ पृ० के शेष २६ मार्च, सन् १८४४ ई० में प्रकाशित हुआ।

७. 'ध्रुपद, विष्णुपद, ख्याल आदि गान का शेष' सन् १८४५ में प्रकाशित हुआ।

८. कबीर बीजक के शेष सन् १८४६ ई० में प्रकाशित हुआ।

श्री कृष्णानंद व्यासदेव के अनुसार इसमें ४५ विभिन्न भाषाओं के गीत संगृहीत है। परंतु उन्हें इतनी भाषाओं की जानकारी रही होगी, इसमें संदेह है।

सर जार्ज ग्रियर्सन ने हिन्दुस्तानी भाषा का इतिहास लिखते समय 'राग कल्पद्रुम' का उपयोग किया था। प्रकाशित राग कल्पद्रुम अधूरा ही है। ग्रियर्सन ने मेटकाफ हॉल से उसकी संपूर्ण प्रति प्राप्त की थी।

'राग कल्पद्रुम' को संगृहीत करने की प्रेरणा राजा राधाकांत देव कृत शब्द कल्पद्रुम से उन्हें मिली थी।

श्री नागेन्द्र नाथ वसु के शब्दों में 'रागकल्पद्रुम' कोई "प्रकृत इतिहास या साहित्य ग्रंथ नहीं है, तौभी इस विराट संग्रह ग्रंथ में इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों, धर्माचार्यों और समाज पतियों के नाम मिलने से इसकी आलोंचना द्वारा मुसलमान और हिन्दू समाज के विभिन्न समय का अनेक अज्ञात पूर्ण ऐतिहासिक तत्वों की उद्धार हो सकता है।"

परिशिष्ट

अमीर ख़ुसरो

आधो नाम बाप का खुसरो कौन देस की बोली ।
वाका नाम जो पूछा मैंने अपने नाम न बोली ॥१॥
एक नार तरुवर से उतरी मां सों जनम न पाय ।
बाप का नाम जो उससे पूछो आधो नाम बताय ॥२॥
खालिक बारी सरन पनाह ।
गदा भिखारी ख़ुसरो शाह ॥३॥
ख़ुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग ।
तन मेरो मन पीव को दोउ भये एक रंग ॥४॥
गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस ।
चल ख़ुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस ॥५॥
फ़ारसी बोली आईना, तुर्की बोली पाईना ।
हिंदी बोलूं आरसी आये, ख़ुसरो कहे न कोई बताये ॥६॥

तानसेन

अहो टेढ़ी पागरी नागरी नारि सीस धरे जैसे टेढ़ी पाग कूं राखे रहतु किचिकनिया।
ढुरि ढुरि मुरि मुरि बतियां अगिली पछलिन सों ।
दोउ कर तारी मारति एकनि सों नैनन सों नव बनिया ।
लाही की लहंगा पचरंग चूनरी कंठा छुरा और ताबीज मनिया ।
तानसेन प्रभु रीझि चकित भए तूंही सबनि में धनि धनिया ॥१॥

तुम्र मुख ओर चंद्रमा बिरंचि तुलाकारी तोल्यो
ओछो अकास गयो धुकि धरनी रही निकाई को भारो भरो री पला ।
याहीतें ससि घटत बढ़त है देखि देखि तेरी बदन निर्मला ॥
तो सम नाहिंन पूजिए सब मिलि कलंको नाम धर्यो
निसि भ्रमत फिरत न रहे अचला ।
तानसेन प्रभु रस बस कर लायो रूप आगरी रूपकला ॥२॥

संक्षिप्त सहायक ग्रंथ-सूची

[हिंदी]

अकबरी दरबार के हिंदी कवि : सरयू प्रसाद अग्रवाल

ऋतम्भरा : सुनीति कुमार चाटुर्ज्या

कालीदास का भारत, भाग २ : भगवत शरण उपाध्याय

केलिमाल : सुदर्शन सिंह

खलजी कालीन भारत : रिज़वी

मारिफ़ुन्नग़मात : नवाब अली

रागकल्पद्रुम (प्रथम और द्वितीय संस्करण) कृष्णानंद व्यास देव

संगीत मकरन्द : नारद

संगीत शास्त्र, भाग २ : महेश नारायण सक्सेना

हिंदू सभ्यता : रा० कु० मुकर्जी

[संस्कृत]

महाभारत

लघु कौमुदी

[अंग्रेजी]

A Short Historical Survey of the Music of Upper India: V. N. Bhatkhande.

A Treatise on the Music of Hindustan: Capt. Willard.

Folk element in Hindu Culture: B. K. Sarkar.

Hindu Civilization: R. K. Mukarjee.

Indian Concept of the Beautiful: K. S. Ramaswamy Sastri.

Life and work of Amir Khusro: M. V. Mirza.

Music of Southern India: Capt. Day.

Prehistoric Civilization of Indus Valley: K. N. Dikshit.

Ragas and Raginis: O. C. Gangoly.

The Music of India: A. Begum Fyzee Rahmain.

The Pre-Mughal Persian in Hindustan: M. A. Ghani.

Universal History of Music: Surendramohan Tagore.

पाठ संबंधी भूल-सुधार

शुद्ध	अशुद्ध	पृष्ठ	पद
अटल्ल	अल्लट	४६	७
जानत	जनत	४७	८
डागुर	डागर	५१-५६	१-२४
जिन	जिव	५२	८
कूं	कों	५४	१६
तेरा	नेरा	५६	२३
तिरसूल	तरसुल	५६	२४
त्रिपुरारी	त्रपुरारी	५६	२४
रहे	हैं	८६	७
घन	धन	६२	३४
ढीठ	ढीट	६३	३६
जब	जन	१२८	१६७
चोंप तुम	चोंपमतू	१३४	२२७
दिल	दिन	१३४	२२७
ना तरसो रहसेगी	नातर सोरह सेगी	१३४	२२७

इनके अतिरिक्त ह्रस्व-दीर्घ जैसी अनेक भूलें हैं जिन्हें सुधी पाठक कृपया सुधार लें। इसी प्रकार तानसेन के पदों में दो स्थलों पर ४५ वें और १२७ वें पद के बाद क्रम संख्या संबंधी भद्दी भूल हुई है जिसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।